शुभचिन्तक

शुभचिन्तक

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

SHUBHCHINTAK
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-936422-6-9
दाम: 251/- (भा.रु.)

चारिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2016)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा-सत्तैर

शुभचिन्तक/07

करिछौन लाली/25

मोहरा/38

अपन पुरखाक डीह/44

जेना हाथी रही/50

कठफल/56

गामे उपैट गेल/62

झूठे/70

लाही/79

परतीहा खढ़/90

उजगी/98

'पंगु' उपन्यासक पछातिक रचना-क्रम:104

शुभचिन्तक

खुशीलाल भाइक मुँहक रूप ओहन बुझि पड़ल जेना अस्सी मनसँ ऊपरे अछियाक मुरदा जकाँ लदाएल होइन। ओसारक ओरिआनीक चौकीपर चद्दैर ओढ़ि पड़ल रहैथ, आधा मुँह उघारने रहैथ आ आधासँ कनी बेसी झँपने छला, मुदा आँखि आ चाइन सोलहन्नी उघारे रहैन।

ओना एके-गामक एक समाजक बीच सेहो छीहे, मुदा जेहेन सम्बन्ध मनुक्ख-मनुक्खक बीच हेबा चाही से नइ रहने भीतरिया सम्बन्ध खुशीलाल भाइसँ नहियेँ अछि, मुदा एकठाम रहने सदिकाल झगड़ो करब सेहो तँ नीक नहियेँ हएत। जिनगीमे काज करैले समय चाही से जँ गप-सप्प आकि झगड़ा-झाँटीमे चैल जाएत, तखन तँ जिनगी आरो ओझरा जाइए। जहिना डोराक पुलियामे डोरा ओझराइए तहिना ने विचारमे बुधियो ओझरा जाइए, तहिना हुअ लगल, मुदा हाँइ-हाँइ–के मनकेँ धोपलौं। माने असथिर करैत ऐ सीमापर अनलौं जेतए लोक अपन जिनगीक दैनंदिनक क्रिया अपन परिस्थितिये करैत नियम बनौने रहैए, जइ बीच समैयक विशेष भाग कटि जाइए, तइसँ आगू बढ़ैत समाजमे ने काजक दिशामे कनी-मनी तोड़-जोड़ होइए तइले सदिकाल मुहोँ फुला-फुली नीक नहियेँ। मुदा एहनो तँ होइते अछि जे खास-खास विचारक खास-खास सम्बन्धो तँ होइते अछि। ओना आइक जुगमे केकरा एते फुरसत छै जे मामा-नाना आकि दादा-परदादाक समय-सालक चाल-चूल बुझत। बुझले बात छै जे मुइलापर भोजो करैले तँ पाइये चाही तही पाछू ने बेहाल अछि, यएह तँ भेल अखुनका लोक, मुदा अही लोकक बीचमे ने

‘सतलोको’ अछि, ‘मनलोको’ अछि, ‘परलोको’ अछि आ तैसंग ‘भुतलोको’ तँ अछिए। एतबे किए, आरो केतेको लोक अछि जेना– ‘मृत्युलोक’, ‘जीवितलोक’ आदि-आदि...।

जिनगी अही सीमापर ने बेकतीगत आचार-विचार समाजक आचार-विचारमे बदलैए। अही बदलैक मोड़पर जिनगी जिनगीक बीच कट-कूट सेहो होइए आ यएह कूट करवनो पहाड़ बनि जाइए तँ करवनो कूटम बनि जाइए...।

भिनसुरके समय रहै, भोरका चाह पीबैत रही कि पत्नी छमकैत लगमे आबि बजली–

“खुशीलाल भैया ने मरै छैथ आ ने जीबै छैथ, हुकुर-हुकुर करै छैथ।”

भिनसुरका समय, शान्त वातावरणमे चिन्तो शान्त रहबे करए, पत्नीक शब्दवाण सोझे कानक कनगोजकेँ छेदैत बेध देलक। मन हलचला गेल। हाइ रे बा! कौआ जकाँ पत्नी की बीचमे आबि कड़कड़ा गेली? मुदा लगले मन पत्नीक बातक बिसवासपर पहुँचल। ओना केते झूठ आकि केते सत् बजै छैथ से तँ ओ जानैथ, मुदा हम चारियोअनासँ कम बिसवास करै छिऐन, एकर माने ई नै बुझब जे ओ बड़ झूठी छैथ। छैथ ई जे कोनो बातोकेँ आ कोनो काजोकेँ तेना ने मुँह-कान गढ़े छैथ जे गोटेकेँ मुँह नमहर बना नाङेर कपैच लइ छथिन तँ कोनोकेँ नाङेर मोट बना मुँह कपैच लइ छथिन। तेकरे कपचैत बनबैत सुढ़ियबैत-सुढ़ियबैत गोटे चौअनियोँसँ कम भऽ जाइए तँ गोटे अठन्नी भरि रहैए, तँए बीचक सीमा चौअन्नी रखने छी।

मने-मन पत्नीक बातकेँ औंटए-पौड़ए लगलौं। औंटै-पौड़ैमे कनी समय लगबे करै छै किने, से लगैत रहए। मनमे ईहो हुअए जे कहुना छैथ तँ शिक्षकक बेटी छैथ, अलंकार सुनने-पढ़ने हेबे करती तँए बजैमे कनी कम-बेसी हएब सोभाविके छइ। मन मानि गेल जे अलंकार शास्त्र

पढ़निहार ओकील थोड़े हएत, ओ तँ करामाती कलाकारे ने भऽ सकैए...।

सोच-विचार कैरते रही कि बिच्चेमे पत्नी फेर टभकए चाहली। दस मिनट पहिलुका सुनल समाचार रहैन तँए मनमे घुरघुराइत रहैन। दोहरा कऽ बजली– "भैयाक टीक उखैड़ गेलैन!"

पत्नीक बात मारूख जकाँ बुझि पड़ए। मुदा डर ईहो हुअए जे अखन पत्नीक मन उड़ियाएल-पुड़ियाएल छैन, ऐ बीचमे जँ किछु बाजब आ ओ चिल्होरि आकि बाझ जकाँ लपैक लेती, तखन तँ अनेरे बाता-बाती बढ़त। तइसँ नीक जे चुपे-चाप सुनैत रही। मनमे ई हुअए जे कोनो एकेटा समाचारक ने उमकी हेतैन, बड़ बेसी तँ जेठ मासक पोखरिक उमक जकाँ दस मिनट रहत। चाहे पीबैकेँ कनी नमरा लेब। जखन मुँहमे चाह रहत तखन मुँह बजबे की करत, तँए एते तँ गर अछिए। तँए कान पत्नी दिस पाथि निच्चाँ मुहेँ चाहो पीबए लगलौं आ पत्नीक बातकेँ औंटौ-पौड़ौ लगलौं। आ गोटे-गोटे बेर आँखि उठा पत्नियोंपर दिऐन तँ बुझि पड़ए जे बजैक सनमनी अखनो ओहिना जगजगार छैन्हे। तँए आरो मुँह दाबि-दाबि चाह पीबैत रही।

तेहरा कऽ पत्नी बजली– "सभ छिनरपना घोंसैर गेलैन।"

मने-मन जखन पत्नीक भाषाकेँ अँकलौं तँ बुझि पड़ल जे अखनो चढ़ंत मन छैन्हे। बीचमे बाजब कौआसँ खैर लुटाएब हएत। अनेरे अनकर घेघ, आभूषण बुझि, अपना गरदैनमे लटका लेब..! यएह ने अखन होइए जे पत्नी झझकारि-झझकारि बाजि रहल छैथ आ हमरा सन पुरुखक झड़ गजर-गजर सुनि रहल अछि। मुदा भाय अहीं कहू जे हाल-चालक जड़ि बुझबे ने केलौं आ घरेमे झगड़ा बेसाहि कऽ लऽ आनी तँ वएह ने जलखैयो बेर आ कलौओ बेर खाएब? तइसँ नीक ने चुप रहब हएत! भाय, दुनियाँ जनैए जे महिलाकेँ बराबरीक अधिकार भेटक चाही तैठाम पत्नीक भावनाकेँ सोलहन्नी मेटा देब, सेहो तँ उचित नहियेँ अछि,

बर-बेसी हएत तँ एतबे ने हएत जे सोनारक आभूषण कहि करवनो रूपकेँ रूपक अलंकार बना देती तँ करवनो भुजंग कहि भुजंग प्रयात छन्द कहि देती...।

अग-दिगमे भोरे-भोर तेना मन ओझरा गेल जे किछु फुरबे ने करए। घरक बेसाहल झगड़ा भरि दिन लधाइते रहैए, तँए झग्गरमुँह घरसँ निकलब दिगशूल भेल, मुदा तइ दिगशूलमे एकटा आरो दिगशूल ठाढ़ भऽ गेल। ठाढ़ ई भेल जे घरसँ निकैल नइ जाएब तँ पत्नीक रूखि गड़बड़ बुझि पड़ैए। हो-न-हो खुशीलाल भाय दिसक हवा अपने दिस ने चैल आबए। घरसँ निकलै दिससँ जखन मन घुरल तँ विचार उठल जे पत्नी जे 'छिनरपन' बजली तेकर माने की भेल? ओना सबदिना जिनगी एकठाम रहने पत्नीक बात बुझि जाइ छी, मुदा जखन पिताक शैलीमे बजै छैथ तखन भुतिया लगै छी। छिनरपन तँ उ ने भेल जे केकरो इज्जत-आवरू छीनए चाहैए। मुदा एतबे तँ नइ भेल, ईहो तँ भेबे कएल जे कियो केकरो धन-सम्पैतक छीनताइ करैए। ओना खुशीलाल भाइक जे करनी-धरनी छैन तइमे दुनू माने बैस जाए।

किछु काल पत्नीक गंजनक पछाइत मनमे भेल जे से नइ तँ खुशीलाले भाय ऐठाम जा नीक जकाँ सभ बात बुझि, पत्नीक विचारक संग मुँह-मिलानी कऽ लेब। भाय परिवार छिऐ किने, विचारक सामंजससँ ने चलत। जाबे विचारक सामंजस नइ हएत ताबे गति-विधिमे थोड़े सामंजस हएत। मुदा घटनाक पछाइत जे जिगेसा होइए ओहो तँ दू रंगिया अछि। कोनो शुभ तँ कोनो अशुभ, माने कोनो नीक तँ कोनो अधला। जइ ढंगे पत्नी बाजि रहल छैथ, तइ हिसाबे जाएब नीक नइ बुझि पड़ैए। तहूमे ओहो बुझै छैथ जे हमहूँ अपन किछु बात पेटमे रखि-जोगा अपनो खुशीलाल भाय लग बजै छी आ खुशीलालो भाय बजै छैथ। गंगा धारक बाढ़ि जकाँ नइ ने नीचाँ-ऊपर सरपट करैत झलकैए। हँ! जैठाम एकबट्ट झलकैए तहूठाम तीत-मीठ फलो आ विचारोक अँटावेश भइये

जाइए। मुदा से तँ खुशीलाल भाइक संग नइए। जखने चेहरापर नजैर पड़तैन कि मन कहि देतैन, कटलपर नोन दइले पहुँच गेल..!

जाइ आकि नइ जाइ, तइ असमनजसमे उठैक मने ने हुअए मुदा तइसँ एकटा भेल जे पत्नीक तामस ऐ दुआरे कमि गेलैन जे मनमे हुअ लगल रहैन जे हमरे बातक चोटसँ बेदम भेल छैथ। फेर जे कोनो घटना भेल जगहपर नइ जाएब कायरता भेल। खुशीलाल भायकेँ जेतए जे भेल होइन, मुदा हमर जे सम्बन्ध अछि तइमे केतौ काट-खोंट कहाँ अछि, तखन जाइसँ किए मुँह मोड़ब..?

फेर हुअए जे जँ ओइठाम जाइ आ ओकर अर्थ जँ दोसरकेँ ई लगै जे दुनू सीखा-बुधी करैए। तखन तँ भेल अधलाक संग देब। ओना नीक-अधला दुनू होइए; जेकर लक्षण हवामे उड़ै छइ। नीकक नीक आ अधलाक अधला। मुदा एकाएक मनमे भेल जे खुशीलाल भाय ऐठाम, टेङारी मंगैक बहन्ने जाइमे कोनो बाधा नइ अछि। सभ दिन सभ देखबो करैए आ काज एलापर हुनके टेङारीसँ काजो करै छी। संजोगो नीक बैसल। जेहने झमारल बोल पत्नी पहिने बाजल छेली तेहने झुमैत फेर बजली–

“घरमे बैसने काज चलत। पुरुख-पातर छी, घरसँ निकैल दुनियाँ देखब आकि घरेमे घोंसियाएल रहब..?”

कहि अपन अँगनाक काजमे लगि गेली। अपनो नमहर साँस छुटल। मन हल्लुक भेल।

ओना ओ अँगनाक काजक बहन्ने काज करए लगली, मुदा मन रहैन हमरेपर। किए तँ देखिऐन जे पाछू उनैट-उनैट हमरा दिस तकै छैथ। मुदा की कैरतौं, हारल-मारल बटोही जकाँ उठि कऽ ठाढ़ भेलौं। जखन ठाढ़ होइत रही कि तही काल पत्नी उनैट कऽ फेर तकली। जोग कहियौ कि संजोग, हमरो आँखि ओम्हरे घुमल रहए, दुनू गोरेक नजैर-मिलान भऽ

गेल। भाइ! किछु छी तँ पुरुख छी किने, नजैर मिलान होइते जेना खुशी आबि खुशिया देलकैन तहिना खुशियाइते बजली–

"पुरुख छी ते पुरुखारथ जगाउ। गाम-समाजक जे कोनो तीत-मीठ घटना होइए ओकरा बुझब अहूँक दायित्व होइए। अपन दायित्व निमाहबे पुरुखपनाक पुरुखारथ भेल।"

एक तँ ओहिना पत्नीक झमार सुनि मन पानि-पानि भेले रहए तैपर तेहेन रंग घोरि देलैन जे मने रंगा गेल। उत्साह जगल। आँगनसँ निकैल दरबज्जापर एलौं आ हिया कऽ तकलौं तँ बुझि पड़ल जे कियो केतौ ने अछि। मुदा 'असगर तँ वरस्पैतो फूइस।' जखन कि 'जमात करए करामात...।'

फेर भेल जे घरसँ असगरे ने निकलै छी, मुदा रस्ता-बाटमे केतेको भेटत, नइ तँ अपन पड़ोसियाकेँ डेढ़ियापर सँ शोर पाड़ि पुछबैन जे भाय, पत्नी अन्ट-सन्ट किदैन-कहाँ बाजि-बाजि उपराग दइ छेली, से गाममे किछ भेल अछि की। अनेरे तँ ओ किछु बजबे करता, जँ किछु कहता तँ बुझि लेब, नइ किछु कहता तँ कहबैन टेङारी-ले खुशीलाल भाय ओतए जाइ छी, जँ किछु भनक लागत तँ अहूँकेँ कहने जाएब...।

मन मानि गेल जे रस्ता चिक्कन बुझि पड़ैए। मुदा लगले ईहो हुअ लगल जे तीर्थस्थानक पोखरिक घाट बड़ चिक्कन होइ छइ, मुदा नहेलहा देहक पानिसँ ओहो भीज कऽ पीछराह भइये जाइए...।

फेर भेल जे अपनाकेँ एते बड़का कलामी किए बुझै छी जे जाएब तँ अपन इज्जत बेरवाद भऽ जाएत! जँ सोझा-सोझी बात बुझैक अछि तँ सुहरदे-मुहेँ कहबैन, "भाय, किछ बात सुनलौं हेन?"

..बात कि कोनो काज छी जे काजक चोट लगतैन। बड़ बेसी हेतैन तँ एतबे ने हेतैन जे अनकर दोख देखबैत अपन निरकटुआ कहता, सुनि लेब। जइ काजक बहन्ने जा रहल छी, सएह बहन्ना बनबैत कहबैन–

“भाय साहैब, अखन काजक औगताइ अछि, तेहेन ने डेढ़िया परहक बगुरक गाछ चतैड़ गेल अछि जे रस्ता चलैबला सभ गरियबैत रहै छैथ, तेकरे पाँगब जरूरी भऽ गेल अछि...।”

मनमे हूबा जगल। विदा भेलौं। रस्तापर पएर दइते घोड़थानक घोड़ा जकाँ मन आगू-पाछू करए लगल। करए ई लगल जे जँ कोनो बाते खुशीलाल भाय कहि दैथ जे ‘तों की करबह?’

‘तों की करबह’क एक माने भेल जे ‘तूँ कोन भार उठेबह’ आ दोसर भेल ‘बलउमकी’ जे तोरा बुते की कएल हेतह...।

किछु फुरबे ने करए जे की करी। फेर भेल जे जखन घरसँ निकैल गेलौं, तखन बिनु काज केने घुमबो तँ नीक नहियेँ हएत। की कैरतौं, आगू बढ़लौं।

आगू बैढ़ते खुशीलाल भाय मनमे नाचि उठला। नाच देखि बाहबाही करैक बात सोचिते रही कि बिच्चेमे तुलसी बाबा आबि बजला–

“सबै नचावे राम गोसाई...।”

मुदा तुलसी बाबा लग मन अँटकल नइ, आगू बढ़ि खुशीलाल भाइक खुशीपर पहुँच गेल। ओना ईहो मनमे हुअए जे रामे-धाम ने खुशीक जगह छी, मुदा से नइ, पहुँच ई गेल जे अनका देखि हम जनिते छिऐन, काल्हि धरि वएह खुशीलाल भाय गाममे शुभचिन्तक रूपमे पूज छला मुदा एकाएक आइ

अपूज भऽ गेला, से ओहिना थोड़े भेल हेता आकि तइ पाछू कोनो रहस्यमय काजक विचारो छीपल अछि। वएह रहस्य ने रहस्यमयी बनैत रसमय बनि गेल अछि।

बहुरंगी लोक जहिना सभ समाजमे अछि तहिना हमरो गाम-समाजमे खुशीलाल भाय सन नइ छैथ से बात नहियेँ अछि, छैथे। मन आगू बढ़ि खुशीलाल भायपर पहुँचल। भरि दिन खुशिये-खुशीक बीच

दिवस गुदस होइ छैन, जेहेन अरामदेह जिनगीक जरूरत अछि से तँ बनौनहि छैथ। अरामो तँ अरामे छी। कियो देहक अरामकेँ अराम बुझै छैथ, कियो मनक अरामकेँ आत्माराम बुझै छैथ...।

मन आगू घुसैक खुशीलाल भाइक जिनगीपर गेल, रजिष्ट्री ऑफिसमे मुंशीगीरी पचीस बर्ख पहिने शुरू केलैन। क्षेत्रक हिसाबसँ रजिष्ट्री ऑफिस बनले अछि। पढ़ै-लिखैमे किछु जातीय समाज अगुआएलो अछि आ पछुआएलो अछि। जइ समाजक खुशीलाल भाय छैथ ओ पछुआएल अछि। खेत-पथारक लिखा-पढ़ी रजिष्ट्रीए ऑफिसमे होइए तँए लिखा-पढ़ीक जगहो छीहे, जेतए क्षेत्रक सभ गामक लोकक बैसारो होइते अछि, तेजगर खुशीलाल भाय बच्चेसँ। ओना मैट्रिकसँ आगू नइ बढ़ि सकला, मुदा बजैमे फड़कोर छैथे। जेतबे दिन खुशीलाल भायकेँ कागज आ ऑफिस चिन्हैमे देरी लगलैन, तेतबे दिन अपनाकेँ बेरोजगार बुझलैन। मुदा से समय कम्मे दिनक रहल। रंग-रंगक कारोबारक अड्डा मुंशी सबहक ऑफिस छीहे। जहिना आन-आन मुंशीक ऑफिस तहिना खुशीलाल भाइक सेहो छैन्हे। बच्चाकेँ जहिना देहमे गुदगुदी लगौने हँसी, तहिना हाथमे भोज्य पदार्थ एने खुशी सेहो होइत तहिना ने कोनो मधुर बोल कानमे एने मधुरो लगैत, तँए मन खुशी हेबे करैत, तहिना खुशीलाल भाइक खुशीक कारण सेहो अनेको रहैन। मोटा-मोटी कहब जे जहिना ऑफिसमे हाकिमसँ लऽ कऽ चपरासी तकक लेन-देनक हिस्सामे कमसँ कम चौथाइ नइ तँ ऊपर जेते सुतैर जाइ, तहिना अपन लिखाइक रूपमे जँ दुइयोटा दस्तावेज लिखा गेल तँ दू हजार तँ ओकर फीस ओहिना भेल, आ स्टाम्प जे ब्लैकसँ भेटै छइ, ओ ब्लैकमे अपन ब्लैक केते भेल से तँ ब्लैकक बात भेल, ओ ब्लैक-कर्ता जानैथ। ई तँ भेल एक पक्ष। दोसर पक्ष छैन जे गाम-गामक जमीनक खरीद-बिकरीक आमदनी सेहो छैन। ने पाइबला केकरो कहि सकैए जे तूँ खेत बेचह हम कीनब, आ ने बेचिहार सभ लग मुँह खोलि कऽ कहि सकैए जे हम खेत बेचब...। से कहियो

केना सकैए। जँ बजबे करत तँ पहिने अपना दियाद-वाद लग ने अपन दुखनामा कहि खेत बेचैक चर्च करत। जइसँ अपना घरक; माने दियाद-वादक, कोठीक चाउर अपने घरक कोठीमे ने जाएत। ई अधले की भेल। मुदा एना हुअए तब ने, होइ तँ अछि खेत कीननिहारक बीच मोछक भीरानी। तखन डाक-डकौबैल किए ने हएत। आ जखने डाक-डकौबैल शुरू भेल आकि बीचमे मदारी करामात कैरते अछि, तेहने मदारी खुशीलाल भाय सेहो छैथे...।

मनमे भेल जे अनेरे पाइ-कौड़ीक जड़िकेँ जड़िया कऽ पकड़ने छी। सभ राम-राम कहि, ऐ छिआ, ऐ छिआ कैरते छैथ आ हम ओहीमे मुड़ी गोंतने छी। मन घुमल।

घुमिते मन खुशीलाल भाइक मान-प्रतिष्ठापर पड़ल। रबि दिन हौउ आकि छुट्टी दिन, गामक दरबज्जा हुनकर मंचक चौखरी छिऐन। ऑफिसक चर्च शुरू करैत बेटा-बेटीक बिआह-दानक गप-सप्प पसारैत, चाह-जलखै होइत विरामक सीमा; माने उपसंहार, लग पहुँच मुहसँ निकलै छैन–

"जिनगीमे किछु धाएल अछि, जँ पाँचोटा कन्यादान नइ करेलौं आकि कोनो काजक उपकार केकरो नइ केलिऐ तँ ओ जिनगी वेकार अछि।"

दरबज्जापर बाहरी लोकक आगमनसँ परिवारक संग पड़ोसियो परिवारक लोक आबि आगत-भागत कैरते छैथ। खुशीलाल भाइकेँ घरक चारू-कातक दू-चारि गोरे आबि बैसबे करै छैन। ओहीमे ने टोक्करो देनिहार रहिते अछि जे टोकारा दैते छैन–

"हँ, से तँ अछिए।"

टोकारा सुनि जेकरा जे हौउ, मुदा खुशीलाल भाइक मन तिलकोरक फड़ जकाँ लाल तँ भइये जाइ छैन। केकरो पातक पूछ फलक

नहि, केकरो फलक पूछ, पातक नहि। मुदा तँए कि फूल फड़ो आ पातो नइ बनैए, बनिते अछि। मन फुलाइक कारण छेलैन, कन्यादानक नाओं बेचि, की सभ रोग समाजमे पसारलैन से सबहक सोझहेमे अछि। मुदा जे अछि, खुशीलाल भाइक भाषणक उसार तँ अही शब्दसँ ने होइ छैन जे समाजक कियो शुभचिन्तक अछि तँ ओ छैथ खुशीलाल।

डेग आगू बढ़ल। खुशीलाल भाय ऐठाम पहुँचलौं। दरबज्जाक ओसारक उत्तर भागक चौकीपर मुँह झाँपि खुशीलाल भाय निसवद भेल पड़ल रहैथ। चद्दैरसँ मुँह झाँपि सुतब तँ ओ अवस्था छी, जैठाम माछी-मच्छर तकक रोक रहैए। तैठाम केना कऽ उठेबैन। तहूमे जँ काँच नीन हेतैन आ भकुआएलमे जँ किछु कहिये दैथ, सेहो केहेन हएत। मन छह-पाँच कैरते रहए कि रभसलाल खेत दिससँ आएल। रभसलाल खुशीलालक छोट भाए। हमर एक उमेरिया सेहो अछि रभसलाल आ हम दुनू गोरे स्कूलोमे संगे पढ़ने छी। अबिते पुछलक–

“भाय, केम्हर-केम्हर सवारी चललैए?”

दुनू गोरे दछिनबरिया चौकीपर बैसलौं। बैसते फेर रभसलाल बाजल- “भाय, चाह पीब किने?”

मनमे ठहैक गेल, एक चुटकी सतनारायण भगवानक परसाद बाँटि कऽ तँ लोक समाजमे अपन पानि चला लइए, तैठाम जँ हम चाह पीब आ जँ पानोक आग्रह भेल तखन तँ सोलहन्नी फूल-पान उठा लेब...।

कहलिऐ–

“भाय, भिनसुरका चाहमे पत्नी पंजाबी जकाँ अफीमक रस मिला दइ छैथ, तेहीपर ने दुपहर तक बमकी धेने रहैए, अखन चाह पीबैक मन नइ अछि आ पान मुहँमे अछि, से सभ परहेज करह।”

फेर दोहरबैत रभसलाल बाजल– “केम्हर-केम्हर?”

कहलिऐ–

“खुशीलाल भायसँ बहुत दिन भेँट भेना भेल अछि, सेहो भेँट कऽ लेबैन आ कनी टेङारियो लेब। मुदा से तँ भायकेँ देखै छिऐन जे मुँह-तुँह झाँपि कऽ सुतल छैथ।”

‘मुँह-तुँह झाँपि’ सुनि रभसलालक मन जेना विकृत भऽ गेल। बाजल–

“की मुँह झाँपि सुतता, नाक-कान कटौलैन!”

ओना रभसलालकेँ ने कहियो खाइ-पीबैक दिक्कत भेल अछि आ ने कोनो आने खाँहीस खगलै। भाइक अम्बोही आमदनीसँ परिवारक खर्चसँ उठले अछि। ओना खर्च-बर्चक अभाव नइ भेने आ पाइ-कौड़ीक आकर्षण नइ भेने रभसलालकेँ अर्थक अपराध वृत्ति नइ पनपल, मुदा परिवारक जे ढाँचा बनि गेल अछि तइमे आन-आन अपराध वृत्ति नइ पनपत सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा जे हौउ, धनक उमकी तँ रभसलालमे छैन्हे...। ‘नाक-कान कटौलैन’ सुनि मनमे आरो उत्सुकता जगल। मुदा परिवारक भीतुरका बात छी; माने भाइक मुँहक बात छी, तैबीच अनका घर पैसब कनी गड़बड़ अछिए। मुदा पैसबो तँ जरूरी ऐछे, गाम-समाजक बात छी,

जँ नै पैसब तखन घटनाक कारणो तँ नहियेँ बुझि सकै छी। किछु फुरबे ने करए जे की केने की नीक हएत आ की नइ केने की अधला हएत...।

ओना रभसलाल बजैमे फड़कोर अछिए। फड़कोरक मुँह सदिकाल पकले रहै छै तँए फुइट कऽ निकलैक डरो तँ रहिते छइ। खएर जे छइ, मुदा रभसलाल मुस्की देलक...।

रभसलालक मुस्की देखि मनमे कनी हरियरी जगल। हरियरी ई जगल जे एक्के हँसी केतौ खुशी उपकबैत आनन्द दइए तँ केतौ मजाक बनि मजाकक पात्र सेहो तँ बनैबते अछि। मुदा से नइ, रभसलालक मन

ओहन चौमास-खेत जकाँ बुझि पड़ल जे तेरवार जोत कएल आ तेरवार चौकीसँ मिलौल बीआ पबैले तैयार रहैए...।

कहलिऐ–

“रभस, सदिकाल तोहर रभसलेहे गप रहै छह, एना कियो जेठ भाइक विषयमे बाजए!”

अपना जनैत असथिरसँ ऐ दुआरे बजलौं जे चारिये हाथक दूरीपर खुशीलाल भाय छैथ, ओना मुँह झाँपने सुतल छैथ कि पड़ल छैथ से नै कहि मुदा शब्दकेँ कनी लसलसा बना ऐ दुआरे बजलौं जइसँ दुनू दिस सटल रहइ। मुदा से भेल नइ, रभसलालकेँ जेना परिवारक इज्जतपर नजैर अँटैक गेलइ। समाजमे नाक-कान कटल बेकती हुअए आकि परिवारक प्रतिष्ठाक हनन भेल हुअए दुनू गरतेमे गिरबैए किने...।

रभसलाल बाजल–

“भाय, तूँ तँ लंगोटिया संगी छिअ, तोरा लग कोन लाथ।”

बिच्चेमे टोकारा देलिऐ–

“से की कोनो छीपल अछि।”

मौध जकाँ रभसलालक मन पैघलल नहि, मोम जकाँ सक्कतक सीमापर अँटकल रहल। बाजल-

“भाय, काल्हिखन समाजक बीच एकटा बुझारत भैयाकेँ कनकलालसँ रहैन। पाइ-कौड़ीक बात रहइ। समाजमे अहिना केकरो माल-जालक बुझारत, तँ केकरो लेन-देनक बुझारत, तँ केकरो गप-सप्पक बुझारत सदिकाल होइते रहैए आ आगूओ होइते रहत। तँए विषयक गम्भीरताकेँ नइ बुझि पेलिऐ। ओहुना पाइ-कौड़ीसँ परिवारोमे हटले रहै छी, बुझारत लग नइ गेलौं।”

कहि रभसलालक मुँह बन्न भऽ गेल। खेतमे जहिना नव सिरौर कटै

काल बीचमे ठाढ़ हएब, तखन तँ बरद सिरौरेकँ टेँढ करैत आगू बढ़ि जाएत..! तँए मुँह बन्न होइते रभसलालकेँ टोकलयै–

"चुप किए भेलह, कियो आन थोड़े अछि, जँ अपन बात कोनो तेहल्ला मुहेँ सुनबह तखन ने शंका करबह, आ जखन दुइये गोरेक बीचक बात छिऐ तखन बजैमे किए हिचके छह।"

ओना घटनाक धार रभसलालक मनमे बहिते रहइ, मुदा ले-ऊँचक बीच अँटैक गेल रहए। बाजल–

"भाय, सौंसे समाजक लोक एकठाम बैसल। तैबीच भैयाक बुझारत कनकलालसँ रहैन...।"

बिच्चेमे बजलौं–

"हमरा नइ बुझल अछि। तोरे मुहेँ अखने सुनै छी।"

जहिना कोनो नव समाचार से चाहे खुश-खबरी हौउ आकि दुख-खबरी, दोसरकेँ कहैले मनमे उड़ी-बीड़ी लगा दइ छै तहिना रभसलालक मनमे लगले रहइ। बाजल–

"एते दिन नइ बुझै छेलौं जे भैयाक कृत्ति की सभ छैन। जँ पहिने ऐपर धियान देने रहितिऐ तँ एना नइ होइत। भाय, परिवारो तँ परिवार छी। अनेको सदस्यक वंशगत संगठन छी। अनेको तन अनेको मनक तँ अछिए। मुदा समूह रूपमे परिवारमे बेकतीगत रूपमे जँ कियो परिवार विरोधी होइ, जे परिवारक प्रतिष्ठापर चोट करए, एहनो छूट तँ केकरो नहियेँ देल जा सकै छइ।"

चद्दैर तरसँ खुशीलाल भाय उकासी केलैन। ओना उकासियो उकासीए छी। नीनोमे होइए, अधनीनोमे होइए आ जगलोमे होइते अछि। मुदा से नइ, आगमसँ बुझि पड़ल जे रभसलाल निर्भिक जकाँ अपन मुँह खोलि कऽ राखए चाहि रहल अछि...।

कहलिऐ–

“एना गजपटमे नइ बुझब कनी सोझरा कऽ बाजह।”

‘सोझरा कऽ’ सुनिते रभसलालकेँ बुकौर लगि गेल, बकार जेना बिला गेलइ। आँखि उठा खुशीलालपर देलक। देखिते दुनू आँखि कड़ुआ गेलइ, नोर ढबढबाए लगलै। ढबढबाइते नजैर निच्चाँ धरती दिस देलक, धरती ससरल बुझि पड़लै। लगले आँखि उठा हमरापर देलक। मुदा आँखि अँटकलै नइ, अपने निच्चाँ ससरए लगलै...।

रभसलालक दशा देखि मन राँग जकाँ गलए लगल। कहलिऐ–

“रभस, समाज समुद्र छी। समुद्रेमे रंग-रंगक पानियोँ अछि आ आनो-आनो जीव-जन्तु सेहो अछि। तूँ किए अपनाकेँ कसूरदार बुझै छह।”

हमर बात सुनिते रभसलालक हूबा जगल। हूबा जैगते हुअ लगलै जे पेटक जेते विकार अछि, वमन कऽ दिऐ। नीक रहौ कि अधला, जिनगीक बीच-बीचमे मोड़ अबैए जे जिनगीक सीमांकन करैए। अही सीमांकनक पछाइत नव जिनगीक सूत्रपात सेहो होइए...।

रभसलाल बाजल–

“भाय, मनक बेथा-कथा तँ लोक हँसिये-कानि ने मनसँ निकालत, जइसँ मन हल्लुक हेतइ।”

रभसलालक बात नीक लागल। कहलिऐ–

“एकरा के काटत।”

‘एकरा के काटत’ सुनि रभसलालक मन आरो पनपल। पनैपते बाजल–

“भाय, जड़ियेसँ कहि दइ छिअ। रजिष्ट्री ऑफिसमे भैया काज करै छैथ, से ते बुझले छह।”

कहलिऐ–

"हँ।"

"हमहूँ अखन तक सएह बुझै छेलिऐन। मुदा कल्हुका बुझारतमे जे गामक लोक अपन-अपन बेथा निकाललैन, से सुनि मने टुटि गेल।"

कहलिऐ–

"से की?"

बाजल–

"चाहे केकरो बेटा-बेटीक बिआह हौउ, तइमे हिनका अगो चाही, अपन लिखाइ फीसक अतिरिक्त, ऑफिसक कमीशन चाही, ब्लैकक नाओंपर टिकटक कमीशन चाही, तैसंग सभसँ पैघ तँ ई छैन जे खेत केकरो रहै छइ, लेबाल कियो आन रहैए आ बीचमे लेबालो-बेचबालोकेँ गरदैन हलालि दइ छथिन।"

पुछलिऐ–

"की गरदैन हलालि दइ छथिन?"

बाजल–

"कौल्हके बुझारतक बात लैह। कनकलालकेँ बेटीक बिआह सिरचढ़ भेलइ। जमीन-जत्थाक कारोबारी बुझि भैयाकेँ पुछलकैन जे भाय साहैब, बान्हक कातमे जे सबा कट्ठाक कोली अछि ओ बेचा दिअ। गछि लेलखिन। समाजक रूपमे हिनका तँ दुनू गोरे–लेबाल-बेचबाल-क बीच ने बात-चीत करक चाहिऐन?"

रभसलालक बात नीक लागल। कहलिऐ–

"हँ।"

बाजल–

"तेतबे नइ ने, वेचारा सुधंग आदमी कनकलाल हिनकेसँ खेतक दामो करौलकैन। हमहूँ कनकलालकेँ चिन्है छिऐन। वेचारा झूठ-फूसक

भीर करवनो ने रहै छैथ, डेढ़-दू बीघा खेतो छैन आ दूटा मालो खूटापर छैन। तही पाछू लागल रहै छैथ। दुनियाँ-दारीसँ कम मतलब रहै छैन।”

बजलौं–

“हँ से तँ कनक भाय छथिये।”

बाजल–

“साठि हजार दामक चीज कहलखिन। वेचारा मानि गेल। तेकर बाद खुशीलाल भैया दू गोरेकेँ पीठ ठोकि– दुनू पाइबला लोक अछि आ दुनूक बीच पुश्तैनी दुश्मनी छै– ओइ खेतपर कुश्ती करा देलखिन। सभ कियो समाजेक, मुदा कुश्ती भऽ गेल खेत-ले..!”

रभसलालक बात सुनि हँसी लगि गेल। केतबो हँसीकेँ मुँहमे रोकए चाहलौं मुदा नइ रोकाएल। जोरसँ हँसा गेल। हँसी सुनि खुशीलाल मुँह परहक चद्दैर उतारि बजला–

“ऐमे हमर केतौ ने दोख अछि।”

रभसलाल छोट भाए रहितो खुशीलालकेँ दबैत बाजल–

“काल्हि वकार बन्न भऽ गेल आ आइ फुफकार छोड़ै छी।”

खुशीलाल दबि गेला। मुदा रभसलालक मनक उमकी जेना आरो उमकए चाहै। कहलिऐ–

“की कुश्ती भेल?”

बाजल–

“साठि हजार चीजबलाकेँ देलखिन आ दू लाख चालीस हजार अपना जेबीमे रखि लेलखिन! तीन लाख डाकपर दाम भेल।”

रभसलालक बात सुनि आश्चर्यसँ क्षुब्ध भऽ गेलौं। क्षुब्ध ई भेलौं जे जिनकर खेत छेलैन हुनका साठि हजार आ जिनकर किछु ने, तिनका दू लाख चालीस हजार! मनमे बिसवासो भेल आ नहियोँ भेल। नइ ऐ दुआरे

हुअए जे एते नम्हर कारोबार रहितो माछियो-मच्छरक आवाज जकाँ नइ सुनने छेलौं, आ तरे-तर केना भाइयो गेल आ बिसानियोँ भऽ गेल। हुअए ऐ दुआरे जे जखन अपन छोट भाए अपना मुहेँ बजै छैन जे समाजक संग हमर संगियोँ छी, केना कहबै जे ई बिसवास करै-जोकर बात नइ अछि। मुदा अनके-टा बातसँ नइ हुअए अपनो मन मानि लिअए तखन ने...।

गुनधुनमे पड़ि गेलौं। मुदा तैबीच खुशीलाल चद्दैर उतारि ओछानियेँपर पल्था मारि बैसला, बैस तँ गेला मुदा मनमे एकटा भ्रम पैसल रहैन। भ्रम ई जे आइ तक रभसलाल मुँह दबने खुशीलालसँ बजै छल, जे खुशीलालक मनमे समाएल छेलैन्हे। मुदा प्रकृतोक तँ अद्भुत खेल अछि, अनकर बहिन-बेटीक इज्जत मुँह चुकरियबैत बिलाइ जकाँ लइए मुदा ओकरो जखन अपन बहिन-बेटीक इज्जतक प्रश्न उठै छै तँ बाघ जकाँ झपैट पड़ैए...।

अपन विचारपर जोर दैत खुशीलाल बजला–

“सौंसे गामक लोक एकमुहरी भऽ गेल, तँए कौल्हुका बुझारतक बैसारमे चुप भऽ गेलौं, नइ तँ...।”

रभसलालक मनमे जेना आगि पजरले रहै तहिना उत्तर देलकैन–

“नइ ते की! की कैरतिऐ?”

छोट भाइक मुँहक बात ‘की कैरतिऐ’ सुनि खुशीलाल भाइकेँ एहेन धक्का लगलैन जे धकधका कऽ धड़धड़ा गेलैन। धड़धड़ा ई गेलैन जे केकरा पोसि-पालि कऽ जवान बनेलौं। पाँचे बर्खक रहए तखने बाप-माए मरि गेल रहइ...।

मुदा पेटक घुरियाइत बात पेटेमे घुरिया लगलैन। वकार फुटबे ने करैन जे मुहसँ निकैलतैन। ओना अपनो मन करखनो धड़धड़ा जाए तँ करखनो धकधका जाए जे आन परिवारक आन्तरिक काजमे हाथ देब नीक नहि। मुदा समाजमे जे गन्दगी पसारैए ओ नीक समाज बनए केना

दऽ सकैए। इतिहासक घटना इतिहासक भेल मुदा वर्तमानक तँ सबहक वीर्तमान अछि, एकरो तँ आँखिक कात नहियेँ कएल जा सकैए। ओना अखनो ई बात नइ बुझि पेलौं जे समाजेक बीचक चीज, समाजेक बीचक लेन-देन समाजेक हाथे भेल, तइमे एहेन गोल-माल भऽ गेल आ लोक अपना ताले वेहाल केना..! ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना मत्थापर ने हाथ लइए, मुदा ईहो तँ बुझए पड़तै जे जे ठनका कपार फोड़ि सकैए ओ हाथक रोकने रोकाएत... ।

समय बेसी खटिआइत देखि रभसलालकेँ कहलिऐ–

"संगी, तूँ सभ दिन संगी रहलह तँए तोरा हम संगियेँ बुझबो करै छिअ आ बुझबो करबह, मुदा तोहूँ एते अपन नामक साकार करह जे रभैस-रभैस नीकक अनुकरण करैत चलैक कोशिश करह। जखने जागी तखने परात। टेङारी दएह, आगूक गप आगू दिन करब।"



शब्द संख्या : 3947, तिथि : 08 फरवरी 2016

करिछौन लाली

सालसँ किछु दिन ऊपरेपर राम रतन दास भेँट भेला। चेहराक रंग देखिते मन झुझुआ कऽ झनैक गेल। ललियाएल लाल टप-टप चेहरा करिछौन लाल बुझि पड़ल। अभयन्तरमे भेल जे पुछिऐन, कोनो रोग-वियाधिक आक्रमण तँ ने भेल अछि, चेहराक सुरखी उतरल बुझि पड़ैए...। मुदा फेर भेल एते दिनपर भेँट भेला, तैठाम बज्जर सन कथा नीक नहि। तइ बिच्चेमे मनक दोसर उमकी उठल आ मने-मन बाजल–

“कियो अपन मुँह-कान, नाक-आँखि अपने चिक्कन बना राखत आकि आनेकेँ केनेसँ हेतइ। हँ, आनोकेँ चिक्कन बनैक बात कहब नीके नइ दायित्व सेहो छी, मुदा जे अपने दोसरकेँ भरि दिन बुझबैत बजैत रहै छैथ, तिनका लग तँ किछु विचारए पड़ै छइ।”

मुदा फेर लगले मनमे उठल, एक तँ उमेरोक हिसाबे आ दोसर समाजोक हिसाबे, माने समाजमे एते तँ सामाजिकताक अधिकार ऐछे किने जे नीक-अधलाक विचार कहलो जा सकैए, पुछलो जा सकैए आ सुनलो जा सकैए। तैठाम जे लोक गुमकी लाधि खाली गुम्हरए, तखन वैचारिक सम्बन्ध केना बनत? आ जखन वैचारिक सम्बन्ध बनबे ने करत, तखन सोझे माटि-पानिक सीमाबद्ध रेखाक बीच रहबे समाज भेल?

मन गुन-धुनमे पड़ि गेल। किछु करितो किछु ने बनैत रहए। मुदा रच्छ रहल जे राम रतने दास बजला–

“भाय, नीके छी किने?”

ओना राम रतन दासक बात कनी कठाइन लागल, मुदा कनी कठाइनो अतिखाइनो विन्यासक भक्ष तँ लोक कैरते अछि, तँए मनकेँ दबैत रहलौं। मुदा तैयो भीतरे-भीतर उमकी उमकबे करए–

“नीक नइ छी, तँ अधला केना भेलौं, जे एकटा महंथक मुहसँ एहेन बात निकलल!”

मुदा लगले फेर मनक दोसर विचार ओकरा धोपलक। धोपलक ई कहि जे केकरो कहलासँ किछु होइ छइ, विचारक गवाही विचार दइ छइ, काजक गवाही काज दइ छइ, तैठाम जँ कियो नीक काजकेँ अकाज बुझि जिनगीएसँ उड़ा देत, तखन ओ रहत केतए?

मुदा फेर लगले मन बदैल गेल। बदैलते उठल जे अहिना सभ गाम आ सभ समाजमे एक-रंगा सभ भरि दिन उपदेश बँटैए। जे भरि दिन उपदेशे बाँटत ओकर भावो तँ ओहने ने बनि जेतै, तँए अनेरे मनकेँ घोड़ै छी...।

मन असथिर भेल। ओना औगताइ दुनू गोरेकेँ छल, किएक तँ काजेक दौरमे भेँट-घाँट भेल। ओना अपना ओते धड़फड़ी नइ बुझि पड़ए, तेकर कारण छल जे मन तँ कहिते रहए जे अपन बेकतीगत काजसँ ऊपर समाजक काज अछि। मुदा राम रतन दासकेँ बेसी औगताइ बुझि पड़ैन। तेकर आन जे कोनो कारण होइन मुदा दूटा तँ सोझहेमे अछि। एक तँ पंथक महंथ छैथ दोसर परिवारो छैन। तँए सालमे घुमैत-फिड़ैत सेवकानसँ गुरुधामक सफर करए पड़ै छैन। मुदा परिवारो तँ परिवार छी। तहूमे वेचारेकेँ समदाही घरवाली छिऐन, एक तँ ओहिना कड़कड़ाएल जुआनी तैपर भनडाराक दही-चीनीक भोजन। मुदा से नइ पूबसँ पच्छिम-मुहेँ आ पच्छिमसँ पूब मुहेँक आवाजाही बेसी रहै छैन। राति-बीच परिवारमे कटैत उगै-डुमैमे चैल जाइ छैन, मुदा सालमे सरकारी छुट्टी जकाँ बीस दिन निचेनसँ गाममे रहि अपन परिवारक नून-तेलसँ लऽ कऽ

सेवकानक भनडारा करैत पराते भने गामक डेरा तोड़ि लइ छैथ। तँए ओ जरनाक भाँजमे ठेला तकैत रहैथ आ हम दोकानक काजे जाइत रही, बिच्चेमे भेँट भेला...।

कहलयैन–

"हँ, बड़बढ़ियाँ छी, अपना दिसक कहू।"

तकले बहन्ना राम रतन दासकेँ भेटलैन, बजला–

"भाय साहैब, अपन की कहब। सबै नचाबे राम गोसाई। तीन दिनसँ गाममे छी, एको क्षण चैनसँ नइ बैसलौं हेन। अखनो ठेला तकै छी, जारैन लऽ जाएब।"

राम रतन दासक जवाब पेब मन घुरिया गेल। जइसँ आगू बढ़ब रूकि, जहिना लत्तीक बीच लत्तीक मुँह घुरिया जाइए तहिना मन घुरिया गेल। एक दिस देखी जे राम रतन दासक दाढ़ी-केशसँ सुगन्धित तेलक गंध निकैल रहल छैन, पैरमे जूता, कटोरिया धोधि, देहपर उज्जर धप-धप वस्त्रो छैन्हे। दोसर दिस महंथाइक वाणी एहेन बुझि पड़ए जेना गाम-समाजक बीचक बशिन्दा होथि। मुदा जे जिनगी छैन आ जे बात बाजि रहल छैथ ओ सरासर विपरीत भेल। जे विषम परिस्थिति सोझहामे रखि बजला ओ समाजक पसेना चुबौनिहारक परिस्थिति छी जे अपना संग परिवारक पाछू चाइन परहक पसेना तरबा देने निकालै छैथ। मुदा राम रतन दास तँ अनके सिरे अपनो आ परिवारोक जिनगी ठाठ-बाठसँ चलबै छैथ! अशोभनीय लागल।

राम रतन दास रमरतना नामसँ गाममे छल। जखन बारह बर्खक भेल तखन एक दिन फकीर दासक अखड़ाहापर पहुँचल। जहिना तीर्थ स्थानक धर्मशाला होइए तहिना अक्खड़ फकीर सबहक अखड़ाहा छी। ओना अक्खरक अर्थ 'जिद्दी' सेहो अछि मुदा से नहि, अक्खरक माने अखड़ा अर्थात शुद्धसँ अछि। बाल विवाहक पद्धतिक हिसाबसँ

रमरतनाक बिआह साते बर्खमे खड़हीसँ नापि कऽ भेल रहइ। तहिया अनटुटु बच्चाक जहिना देह-दशा होइ छइ, तहिना सिराएल-मराएल रहइ। केते गेरे कौआ-टाँट सेहो कहइ। ओना फकीर दासक अखड़ाहाकेँ केते गोरे भोला बाबाक दरबार सेहो कहैए। तेकर कारण जे अखड़ाहाक जे दुनू कट्ठा पैछला चौमास अछि ओइमे भाँगे-धथुर उपजैए।

भोला बाबाक परसाद बुझि रमरतनो एक दम चीलममे लगा लेलक। मनो मानि कऽ गवाही देलकै जे सभ स्थानक अपन-अपन चढ़ौओ होइए आ परसादो तँ होइते अछि, तहिना ने अहू अखड़ाहाक परसाद भेल–भाँग-गाँजा।

एक तँ पहिल दिनक परसाद रमरतनाक, तैपर अनभुआर ड्राइवर जकाँ तेना दमसा कऽ चीलममे दम मारलक जे सातो दुनियाँ देखए लगल। आन-आनकेँ बजैत देखि रमरतनोक मन लुसफुसाइ जे हमहूँ किछ बाजी। मुदा अपने मन कहलकै–जेना लोक सभ बजैए तेना बजैक लूरि कहाँ अछि। फेर लगले भेलै जे आइ पहिल दिन छी, आइ नइ किछ बाजब। फेर भेलै जे कोनो कि आइये एलौं आ आबि कऽ छोड़ि देबै, आकि सभ दिन आएब। चीलमक सुआद मधुआइते रहइ।

अखड़ाहापर आएब-जाएब रमरतना शुरू केलक। स्थानेक महंथकेँ गुरु मानि अखड़ाहाक आदमी रमरतनो भऽ गेल। दरबज्जाकेँ दुनू साँझ झाड़-बहार करैक भार रमरतना अपना विचारे स्थानक उठा लेलक। समैपर आबि दुनू साँझ अपन ड्यूटी करए लगल। आब रमरतना गामक भनडारासँ आनो-आनो गामक भनडारामे महंथक (महंथ माने फकीर दासक) संग जाए-अबए लगल। साधु सबहक संगतमे पड़ि भजनो-कीर्तन गौनाइ आ कनी-मनी ढोलको-झालि बजौनाइ सीखलक। आब रमरतना रमरतना नइ रहल आब ओ भऽ गेल राम रतन दास। मुदा अखन ओ 'रामरतन दासे' अछि, 'महंथ राम रतन दास' नै बनि पेने छल। मुदा गबै-बजै-बजबैक लूरि तँ थोड़-थाड़ भइये गेल छेलइ। तैबीच एकटा

घटना सेहो घटलै। घटलै ई जे राम रतन दासक दुरागमन सेहो भऽ गेल। आब राम रतन दास भजन-कीर्तनसँ लऽ कऽ अखड़ाहासँ भनडारा तक पुरैमे नाको-दम रहए लगल। कोढ़ि पति मानि पत्नी पड़ा कऽ नैहर चल गेली जे आब ने ऐ घर आएब आ ने ऐ गामक मुँह देखब। ऐ गामक लोक दुनियाँक हवाकेँ नइ चिन्है छइ, जे कोठाबला घर आ हिप्पीबला बर सभकेँ चाही...।

मुदा राम रतनो दास अड़ि गेल जे जइ मनुक्खकेँ अपनो पेट भरैक लूरि नइ छै ओ पति-धर्म की बुझत। दुनियाँमे मौगीक कमी छइ, जखैन मन हएत बिआह कऽ लेब। तइले खुसामद करए जाएब, किन्नौ ने जाएब।

जहिना कियो पढ़ैक संकल्प लइए तँ कियो नीक सवारी गाड़ीक, कियो नीक कोठा बनबैक संकल्प लइए तँ कियो कोनो खास लड़की संग बिआह करैक...। केकर के मालिक छी जे कियो केकरो बात सुनत, तहिना राम रतन दास सेहो मनमे ठानि लेलक जे दोहरा कऽ ओइ महिलाकेँ खुसामद करए किन्नौ नइ जाएब।

संकल्पक फल जे हौउ, जेना हौउ, मुदा तत्काल राम रतन दासकेँ मनमे आफियत बुझि पड़लै। मन जेना दुनियासँ हटि अपनामे निहित भेने मनो हल्लुक भेलइ। हल्लुक होइते मन विचड़लै। विचैड़ते देखलक जे जखन दुनियाँमे असगरे एलौं, केकरोसँ कियो पुछि कऽ अबैए, तहिना असगरे रहब। केकरो भारो तँ सिरचढ़ नहियेँ रहत। मन ठमकलै। असगरे जीब केना? जीबे-जीबैयेक वोन तँ दुनियाँ छी, तखन असगरे केना भेलौं। हँ, केकरो-बीच केकरो जे सम्बन्ध बनै छइ, जइसँ एक-दोसराक भार सिरचढ़ होइए ओ लेन-देन छी। जहिना माइक सेवाक बदला मातृसेवा बेटाक धर्म बनैए तहिना आन-आन सम्बन्ध सेहो अछि।

पत्नीक विछोहक पछाइत राम रतन दासमे बदलाव आएल।

स्थानक बिसवास पात्र बनने स्थानक सेवैत राम रतन दास भऽ गेल। सेवकसँ सेवैत बनिते राम रतन दासकेँ सेवकान दिस बढ़ैक बाट खुजल। जे राम रतन दास सेवैतक जिनगीकेँ बुझि गेल। जइसँ अपन बेकतीगत जिनगीकेँ सुधारैक खगतो बुझि पड़लै। खाली खगते नइ भेलै बढ़तियो तँ एबे केलइ। बढ़त ई एलै जे हरिमुनिया बाजाक नीक बजन्ती भऽ गेल। ओना ढोलक-झाइलिक बजन्त्री सेहो छी, मुदा दुनूकेँ एकचलिया बुझि मनमे कम रखैए आ हारमोनियमक जतन बेसी रखैए। एकचलिया बाजाक माने ई भेल जे शारीरिक श्रम कनी बेसी भेने मनकेँ दाबि कऽ रखए पड़ैए तँए मुँहकेँ बन्न रखए पड़ै छइ, मुदा हारमोनियममे सौंसे हाथक अंग कटि ओंगरीपर चैल अबैए, तँए वादन संग गायन सम्भव भऽ जाइए।

सेवैतिक अवस्थामे, जहिना मैझला-सैझला जमीन्दार होइए, तहिना राम रतन दास महंथाइक भीतर सेवताइसँ अरजन कऽ लेलक। जइसँ सेवैतिक रूप महंथाइक रूपमे अवतरित हुअ लगलै। पछाइत महंथ भाइयो गेला। अपन संकल्प जे पत्नीक सम्बन्धमे नेने छला ओ विचार पुन: राम रतन दासक मनमे पनैप गेलैन, पनैपते मन रीशियेलैन आ रीशियाइते बुदबुदेलैन–

“जहिना कोढ़िया बुझि पत्नी छोड़ि कऽ चैल गेल तहिना ओकरा देखा देबै जे कोढ़िया कायाक माया केहेन होइ छै से आँखि खोलि देखत दुनियाँमे।”

ढलानपर जहिना गाड़ी ढलकैए तहिना राम रतन दासक मन ढलानपर ढलैक गेलैन। संजोगो नीक बैसलैन, अपने जकाँ एकटा महिला सेवक सेहो भेटलैन–माने कोढ़नी कहि-कहि हुनका पति छोड़ि देने रहैन, असगर पेब ओहो तिलकधारी बबाजी बनि अपन इज्जत-आवरूक रच्छा करए चाहै छेली, साधु-महत्माक विचार-विमर्श दुनूक बीच भेलैन। किए ने दुनू गोरे परिवार बनबैक विचार सोचैत। भाय, मनुक्ख तँ परिवारेमे ने

रहत। कोनो कि कौआ-मेना छी जे एके बाढ़ि आकि एके विहाड़िमे वंशे उपैट जेतइ। गप-सप्पक क्रममे दुनूक गोड़ा बैस गेलैन। जहिना कोनो लत्ती-फत्तीक गोड़ा आकि गाछ-विरीछक गोड़ा-मे-गोड़ा सन्हियेने एक-दोसरक जीवन-मरण बुझि धड़ैए, तहिना दुनूक बीच गोड़ा मनमे तेना सन्हिया गेलैन जे बिआह करैपर राजी भऽ गेला। राजी-खुशीसँ दुनू संयुक्त वियान देलैन–

"निराश्रयकेँ जे बिसवासू आश्रय भेट गेल तँ वएह ने ओकर जीवन-नैया पारो करत। ओना अपन विद्रोही समाज (माने बबाजी समाज, जे विवाहकेँ वन्धन बुझि माया कहै छैथ।) मे बरियाती केतएसँ आनब, तैसंग अपनो दुनू गोरेकेँ यज्ञ-जप करै-जोकर घरो-अँगना तँ तेहेन नहियेँ अछि। जे मण्डपमे बैस सरियात-बरियातक बीच तँ सम्भव नइ अछि, तँए मने-मन दुनू गोरे सम्बन्ध मानि लिअ। लोक बुझला पछाइत ने उकबो उठाएत ताबे तँ जिनगीक धार बहि गेल रहत। दुनू गोरे महंथाइयेक बीच एक संग एक मोटरीमे अपन जिनगी समेट कऽ रहब शुरू करब। बड़ बेसी तँ बबाजी समाज यएह ने कहता जे दुनू प्रेमक बीच लोभा गेल। कहता तँ कहता। लोकोकेँ कि बजैक ठेकान रहै छइ, जेकरा जे मन फुड़ै छै से बजैए। जँ हुनका सबहक बोल औत तँ अपनो सभ ने कहबैन जे तइले अहाँक छाती किए फटैए, दुनियाँ तँ प्रेमेक छी किने, अहूँकेँ ने तँ कियो रोकैए।"

महंथ राम रतन दासकेँ समय अनुकूल भेटलैन। तीनटा संतानो आ पत्नियोँ साक्षात् सेविका छैन्हे। ओना मंच परहक महंथाइक विचारमे किछु अन्तर आबिये गेलैन अछि, मुदा केतबो कम छी तँ एक महंथक विचार तँ छीहे। माने ई जे जाबे तक राम रतन दास देखौआ बिआह नइ केने छला ताबे तक परिवारकेँ माया कहि मुक्तिक बाधक कहै छेलखिन, से आब पारिवारिक महंथक श्रेणीमे आबि गेला, तँए आब परिवार बना जीब मनुक्खक पहिल दायित्व बुझि घर बैस सन्यास करैक बात कहए

लगलखिन।

ओना जहियेसँ राम रतन दासक प्रेमक बात फकीर दास सुनलखिन तहियेसँ अनठिया चिड़ै जकाँ लोलमारी करब शुरू केलैन, जेकर देखा-देखी अखड़ाहाक आनो-आन करए लगलैन। मुदा राम रतनो दास कि कोनो अदना लोक छैथ, आइनपर लोककेँ माए-बाप नइ भेटै छइ, घरवालीक कोन कमी छइ, जे संकल्प पूर भइये गेल छेलैन। जइसँ अपन अखड़ाहा फुटा कऽ बना नेने छला। ओहीमे धियो-पुतो-स्त्रियो आ दसनमा दरबज्जो बनाइये नेने छला।

ओना कहैले राम रतनो दासक अखड़हे छिऐन, माने ई जे जही पंथक फकीर दास तही पंथक राम रतनो दास छैथ, मुदा पंथो तँ पंथ छी, पंथ कि कोनो फुटा कऽ केकरो-ले बनल अछि आकि ओ एकटा पंथ भेल, जैपर जे चलनिहार अछि ओ चलबे करत। मुदा से नइ, फकीर दास अपना अखड़ाहापर सभ दिन बैसै छैथ, जँ कहियो केतौ बाहर भेला तँ अनको जना दइ छेलखिन जे एते दिन नइ रहब तँए अहाँ सबहक अखड़ाहा छी, अपन देखभाल करैत रहब।

राम रतन दासक अखड़ाहा से नइ छैन, सालमे ओ दस-बीस दिन गाममे रहला तेतबे काल अखड़ाहाक चुहचुही रहल, बाँकी दिन भको-भन बनल रहैए। कहैले बालो-बच्चा आ पत्नियोँ स्थाइ रूपेँ रहै छैन, मुदा पत्नी अपने सेवा माने परिवारे धरिक छथिन, सेवैत नइ भेलखिन। ओना पत्नियोँ दोसर बिआहसँ पहिने आ पहिल बिआहक पछाइत कण्ठी पहीर वैष्णव भऽ गेल छेली, मुदा धोखासँ वैष्णव भेल छेली आकि धोखेमे अखनो धरि छैथ, से तँ ओ जानैथ मुदा अपन तीनू बच्चा आ पति–राम रतन दास–केँ छोड़ि केकरो ने चिन्है छथिन आ ने चिन्हारए दइ छथिन।

महंथ राम रतन दासक चास-बास फकीर दासक चास-बाससँ नमहर भऽ गेल छैन। फकीर दासकेँ किछु रखै-जोगबैक लूरि नइ छैन,

जखन कि राम रतन दासमे से बेसी छैन। दुनूमे दोसर अन्तर ईहो भऽ गेल छैन जे फकीर दास खौजरीकेँ सजबैत चाटियो चलबै छैथ, जखन कि राम रतन दास हारमोनियमपर राग-अलापि मोहैन चलबै छैथ, जइसँ चास-बासमे बढ़ोत्तरी होइते छैन। अखड़ाहाक चारूकातक दस कोशीमे राम रतन दासक सेवकान पसरल छैन, मुदा किछु छैन आ कि केतबो छैन, पारखी नजैर रहने सभकेँ सम्हारि चलबै छैथ। भाँजपर चढ़ले छैन जे कुरथी-तेबखा मासमे उत्तर मुहेँक टहलान शुभ अछि, आ जेठुआ-अखढ़ुआ आमक मासमे उपराड़िक इलाका–पच्छिम-मुहेँक यात्रा शुभ अछि। जखने शुभ मुहूर्तमे काज हएत तखने ने सभ किछु शुभे-शुभ हएत।

राम रतन दासक सेवकान सेवकान थोड़े छी, ढेनुआर गाए छी, साक्षात् लक्ष्मी। जैठाम लछमीक बास रहत तैठाम धनक दसो दुआरि खुजिये जाइए। से राम रतन दासकेँ छैन्हे। भोज-भनडाराक संग विदाइक रूपमे दान-दैछना आ अगो सेहो सेवकानमे भेटते छैन। दसक लाठी एक बोझ। अगो रूपमे लत्ती-फत्तीक पहिल फलक संग धानक दौनीक सिल्लीक अगो तकक बन्हले आमदनी छैन, तैसंग भनडाराक नाओंपर चन्दा सेहो होइते छैन। खएर जे छैन ओ अपन सेवकान छैन, जानए जअ जानए जत्ता। हमरा कोन मतलब अछि। तीन मास पहिने एक गोरे–जेकर नाओं लखन लाल छी–घरो बनबै आ बेटाक नाओं इंजीनियरिंगमे लिखबैले दस लाखक पैतृक सम्पैत बेचए चाहलक। बिना बेचने काजो नहियेँ चैलतै। गाम-घरमे किसान परिवारक स्थिति जत्ता तरक चक्की जकाँ किलेमे ठोकल अखनो ऐछे, तँए कियो ओ खेत कीनैले तैयारे ने भेल। एके मास बच्चाकेँ नाओं लिखबैले लखन लालकेँ शेष रहि गेल रहइ, तँए पाइक बनोबसमे फिफियाएल घुमए। सोना-चानी आकि अन्न-पानि तँ खेत छी नै जे गाड़ी-सवारीपर उठा केतौ बाहरो जा बेच लेब। खेत छी, जेतए अछि तेतइ सभ दिन रहबो कएल आ आगूओ रहत।

लखन लालक खेतक बिकरीक समाचार, गाममे पसैर गेल। आन गामबला सुनियेँ-बुझि कऽ की करत। आन गाम जा कऽ खेती करब असान थोड़े अछि। राम रतन दासकेँ सेहो भनक लगलैन। जे खेतक बिकरी अछि। ओना ओ गाममे नइ छला मुदा भनक तँ लगिये गेल छेलैन।

समयानुकूल कोनो बेवसायकेँ उठाइन होइ छै तँ कोनो बेवसायकेँ बैसाइनो होइते छइ। उठाइन-बैसाइन सभ किछुमे होइ छइ। कहियो खढ़-खपड़ा घरक उठाइन छल आब बैसाइन भऽ गेल अछि। अखन उठाइन भऽ गेल अछि, चदरा-पक्काक। तहिना पढ़ैयो-लिखैमे भऽ गेल अछि। कारोबारमे सेहो तहिना अछि। कहियो खेतीक महत् रहने खेतक उठाइन छल आ अखन ओकर बैसाइन आ बेवसायक उठाइन भऽ गेल अछि। तेहने वेपार राम रतन दासकेँ सेहो छैन्हे। एते दिन सालमे एकबेर भनडरो करै छला आ प्रवचनो करै छला आ तीन सालसँ साले-साल नइ मौसमे-मौसम तीन-दिना प्रवचनो करबै छैथ आ भनडरो करबए लगला अछि। जइसँ आमदनीमे केतेको गुणाक बढ़ोत्तरी भऽ गेल छैन। लखन लालक खेत बेचैक समाचार सुनिते तेसरे दिन राम रतन दास हहाएल-फुहाएल गाम पहुँचला। मनमे होइन जे कियो आन ने कीन लिअए।

ओना, गामक लोक राम रतन दासक आमदनी तँ देखैन, मुदा कोनो कारोबार नहि देखि यएह बुझैथ जे भुतही बाढ़ि जकाँ जहिना अबैए तहिना जाइए। तँए आन धार जकाँ जमौठ पानि थोड़े हएत। मुदा से बुझब सबहक भ्रम छेलैन। अछैते पाइये राम रतन दास दू कारणे कोनो कारोबार नइ करै छला। पहिल कारण जे करताइत नइ रहने आ दोसर बिनु पसेनाक कमाएल पाइ तँए दाबि कऽ राखब नीक बुझैथ। जेते झाँपल रहत तेते सुरक्षित रहत। सुरक्षित दू मानेमे–पहिल, आमदनीमे केतौ रूकाबट नइ आ दोसर छीनो-झपटी नहि। छीनो-झपटी कि बिना बुझने-सुझने होइए।

गाम अबिते राम रतन दास हिया कऽ गाम दिस तकलैन तँ एकोटा एहेन लोक नजैरपर नइ पड़लैन–जेकरापर पाइ-कौड़ीक लेन-देनक बेवहार सोझहामे कएल जाए।

मुदा बिनु तेहल्लो तँ काज चलब उकड़ू अछिए। कोनो रस्ता भाँजेपर ने राम रतन दासकेँ चढ़ैन जे आगू केना करब। अग-दिगक पछाइत फुरलैन–सोझे जा कऽ जँ लखन लालकेँ कहबै जे दुइये गोरेक बीचक कारोबार छी तइले तेसरक कोन जरूरी अछि, मुदा फेर होइन जे ई तँ अपन विचार ने भेल, मुदा जहिना एक पक्ष लेबाल हम भेलौं तहिना बेचबाल तँ दोसर पक्ष भेबे कएल। आ जखने दोसर पक्ष ओ भेल तखने तँ ओकरो एते अधिकार भइये जाइ छै जे ओहो अपन विचार रखए। आ जँ कहीं ओ तेहल्लाक बीच विचार करब कहत तँ ओकरा नइ मानबै सेहो ने हएत। आ जखने तेहल्लो ओकरे रहतै तखन तँ अपने असगरे पड़ि जाएब। तखन तँ आरो बेसी गड़बड़ाइक सम्भावना बढ़ि जाएत। पाइ-कौड़ीक बात छी, सभ दिन चोरा-छिप्पी होइत आबि रहल अछि आ आब तँ दिनो-दहार होइए...। मुदा लगले राम रतन दासक मनमे एकटा जुकती फुरलैन। फुरलैन ई जे आइ साँझू पहर असगरेमे लखन लालसँ भेँट कऽ पुछबै। जँ सूहकार पएब तँ आगूक जुकती विचारि लेब। मन चैन भेलैन।

पँचकोशीक एकोटा एहेन बैंक नइ जइमे राम रतन दासक पाइ जमा नइ, बेहिसाब पाइ, बेहिसाब ऐ मानेमे जे सबदिना आमदनी, एहेन आमदनी जे पाइक हिसाब जोड़ैक समैये ने पबैत।

दोसैर साँझ होइते राम रतन दास लखन लाल ऐठाम पहुँचला।

एक तँ ओहुना राम रतन दासक आदर गाममे होइते छैन तैपर महंथक आगमन। लखन लाल दुनू परानी नीक जकाँ सुआगत-बात केलकैन। चाह पीला पछाइत लखन लाल पुछलखिन–

“सरकारक, केम्हर-केम्हर आगमन भेलैन?”

'सरकार' सुनि राम रतन दासक मन गवाही देलकैन जे काज नीक जकाँ सुढ़ियाएत। जइसँ मन मधुआ गेलैन। मधुआएल मने बजला–

"सुनैमे आएल अछि जे बेटाकेँ इन्जिनियरिंगमे नाओं लिखबैक विचार छह।"

लखन लाल–

"हँ, सरकार। ओना अपन विचार अछि जे किसान परिवार अछि तँए बेटा एग्रीकल्चरमे चाहे डॉक्टरीमे नाओं लिखबए, किए ते दुनूमे अपन हित निहित अछि, मुदा छौड़ा कहैए जे इन्जिनियरिये पढ़ब।"

अपन गोटी बैसबैले कि की से तँ राम रतन दास जानैथ मुदा बजला–

"तोरा विचारकेँ तँ हमहूँ मानै छी। मानै छी ऐ दुआरे जे जखने बेटा इन्जिनियरिंग पढ़तह तखने इन्जीनबलाक हाथे ने पोसन हेतइ। जेकरा हाथे पोसन हुअए सएह ने पिता भेल। मुदा अखन ई गप-सरक्का छोड़ह।"

नमहर साँस छोड़ैत लखन लाल बाजल–

"से तँ बेस कहलिऐ महनजी।"

महंथसँ महन रूपमे अपनाकेँ देखैत राम रतन दास बजला–

"तूँ खेत बेचए चाहै छह?"

लखन लाल–

"बेटा चन्सगर अछि। ओकर चान्सकेँ केना तोड़बै। पाँचे-सात लाखक तँ खेल छी, तही दुआरे खेत बेचब।"

राम रतन दास–

"केकरो दोसरसँ गप नइ करिहह। हम लेब।"

दस लाख रुपैआमे राम रतन दास पाँच कट्ठा खेत लखन लालसँ लिखा लेलैन। लिखा तँ लेलैन मुदा गाम-समाजमे जेना आगिक लुत्ती लगि

गेल तहिना एक संग अनेको प्रश्न उठल।

मुदा सभ प्रश्नक जड़ि एकेठाम अछि–ओ एते रुपैआ केतएसँ आनलैन?

राम रतन दासक सुर्खीक संग सेखियो समाजमे दिनानुदिन धुमीले हुअ लगलैन।

ठेलाबला महंथ बुझि, अपन ठेलाक भाड़ा सेहो छोड़ि, सेना रूपमे अछि, जारन लादि राम रतन दास ऐठाम विदा भेल। राम रतन दासक लाल टूह-टूह चेहरा केना करिछौन भऽ गेलैन, से बेर-बेर मनमे उठ-बैस करए लगल।



शब्द संख्या : 3000, तिथि : 13 फरवरी 2016

मोहरा

मास दिनक पछाइत पता लगल जे कुरसोंवालीक सराधो भऽ गेल। गामक ओहन काज जे एक-दिना आकि एक-क्षणा नइ छी, जे चुपचाप भऽ जाएत। सराधक पाछू क्रिया-कर्म आ भोज-भातक संग नह-केश अछि तइसँ पहिने तेराइतिक भोजो आ छौरझँपी होइए, तहूसँ पहिने लहाश जरौल जाइए। एते नमगर-चौड़गर काज आ बुझबो ने केलौं..!

फेर अपनेपर नजैर पड़ल, नजैर पड़िते जखन मास दिनकेँ गुनलौं तँ केतौ खोंच-खरोंच नइ बुझि पड़ल। माने जहिना सभ-दिना जिनगी अछि तहिना ऐछे, तखन किए ने बुझलौं। आइ जँ केतौ मास-दिनक तीर्थ-वर्तमे गेल रहितौं आकि कोनो महानगरे घुमैले गेल रहितौं, सेहो तँ नहियेँ केतौ गेलौं हेन। मुदा मनमे ईहो जिज्ञासा तँ जगले रहए जे जे कुरसोंवाली एक समय गामक रंगमंचपर मुख्य नचनिहारि छलि, तेकर सराध केहेन भेल?

फेर भेल जे मास दिनक पुरान गप छी तखन जँ केकरोसँ पुछबे करबैन जे कुरसोंवालीक सराध भऽ गेलैन तँ ओ मुँह दुसि कहबे करता किने जे तूँ गाममे नइ छेलह जे देखतहक आकि सुनितहक जे पहिने सराध भेल आकि मुइल, एतबो ने बुझल छह।

कोनो गरे ने देखिऐ जे की करब। मुदा मनमे बुझैक जिज्ञासा तँ रहबे करए।

विचारलौं जे रस्ते-रस्ते दछिनबरिया बाधक खेत देखैक बहन्ने जाएब, ओही बीचमे कुरसोंवालीक घर पड़ै छइ, जँ कोनो सुराग बुझि

पड़त तँ गप खोड़ि देबै, माने चर्चा चालि देबइ। जखने चर्चा उठत कि जहिना धिया-पुता चौमास खेतक अल्लू उखड़लाहा बाड़ीकेँ कियो खुरपीसँ तँ कियो ठेंठिया कोदारिसँ चलिया-चलिया नमहर अल्लूसँ किर्ड़ी तक बीछ लइए तहिना सभ बीछा जाएत...।

यएह सोचि दच्छिन-मुहेँ विदा भेलौं।

संजोगो नीक बैसल। कुरसोंवालीक बेटा–सिंहेसरा उत्तरे-मुहेँ अबैत रहए। खुटियाएल केशो देखलिऐ आ रंग झड़ल धोतियो बुझि पड़ल। बुझि एना पड़ल जे नवका धोतीक पाइढ़ ओहिना चक-चक करैत जेहेन नव रंगलमे चक-चकाइत रहैए। लगमे अबिते मनमे भेल माइयक सराधक विषयमे सिंहेसरासँ पुछिऐ। मुदा फेर भेल जे जँ नइ मरल होइ तखन तँ अनेरे ई कहि गरियौत जे हमरा माएकेँ जीवितेमे सराधक बात पुछैए। भाय! सरधा ने जीवितमे होइ छै मुदा सराध तँ मुइला पछाइते होइ छइ। अन्तर एतबे ने अछि जे घरक अधिकार धऽ घर चैल जाइए। आगूमे देखिते सिंहेसरे बाजल–

“काका, गोड़ लगै छी, माए-बापक करजासँ फारकती भेल।”

‘माए-बापक करजा’ सुनि मनमे ठहकल जे निसचित माइक सराध कऽ निचेन भेल अछि। गपक पन्ना भेटल। पन्ना पकैड़ पुछलिऐ–

“नीक जकाँ कर्जासँ फारकती पौलह किने?”

‘नीक जकाँ फारकती’ सुनि सिंहेसराक जेना छाती दहैल कऽ कुड़बुड़ा उठलै। बाजल–

“कक्का, जिनगी भरि जेकरा सेवलक ओहो देह चोरा लेलक।”

सिंहेसराक बात भाँजेपर ने चढ़ल जे की कहलक। पुछलिऐ–

“से की?”

बाजल– “कक्का, तोरा सभकेँ ते बुझले छह जे माइयो आ बाबूओ

दुनू परानी जिनगी भरि खुशीलाल कक्का ऐठाम खटल, जे कमाएल-खटाएल से खेलक-पीलक, हमरो पोसलक। हमरा बिआहो कऽ देलक। गाममे केते कमाइये होइ छै जे औझुका लोक जकाँ गुजर कैरतौं तँए पंजाब चैल गेलौं। एम्हर बाबूओ मरि गेल। पनरहे दिन गेना भेल रहए, भड़ो-जोकर पाइ नइ कमेने रहौं जे अबितौं, नइ एलौं। माइये आगियो देलकै आ सराधो केलकै।"

सह दैत कहलिऐ–

"जहिना बेटाकेँ अधिकार अछि तहिना ने पत्नियोंकेँ अछि, नीके भेलह।"

बाजल–

"नीके की हएत कक्का, तखन तँ गरीब लोकक माए-बापक सराध भगवाने भरोसे होइए, सएह भेल।"

झमान भऽ सिहरैत सिंहेसराक मन देखि कहलिऐ–

"पार-घाट तँ लगिये गेलह किने?"

झुझुआइत सिंहेसरा बाजल–

"पार की लागत तखन तँ अपन हारल लोक बाजिये कऽ की करत।"

जे बात बुझैक जिज्ञासा छल ओ तर पड़ि गेल। ऊपर चैल आएल पिताक सराध। माइक सराध दिस बातकेँ बढ़बैत पुछलिऐ–

"माइयक कहह?"

'माए' सुनि सिंहेसरा विचलित होइत बाजल–

"कक्का, बाबूकेँ मुइना थोड़बे दिनक पाछू माए दुखित पड़ि गेल। अपने गामोमे ने रही, खुशीलाल कक्का एको दिन खोजो-पुछाइर ने केलखिन आ एक पाइक गोटीकेँ के कहए। भनसिया समाद देलक। जे

पाइ कमेने रही से पठा देलिऐ, अपने जँ चैल ऐबतौं तँ ओहो कमाइ ने होइत।"

बिच्चेमे कहलिऐ–

"से ते नीके केलह।"

'नीक' सुनि सिंहेसराक बोल ने आगू उठै आ ने पाछू होइ। हेबो केना करैत, कोनो कि समाजमे छपित बात अछि जे लोकक किरदानी भेड़िया-धसान जकाँ छइ। अधलोकेँ तेते नीक कहत जे राड़ीक फूल जकाँ अपने हवामे उड़ैत अकास चढ़ि जाइए, आ अकास चढ़ल काजकेँ धकियबैत-धकियबैत खेत-कातक रस्ता जकाँ बहुपेड़ियाकेँ एकपेड़िया बनबैत नाओं मेटा खेते बना लइए आ जखन खोज-खबैर होइ छै ते कहैए जे सर्वेक खतियानमे ने खत्ते-खेसरा चढ़ल अछि आ ने नक्शामे नक्शो बनल अछि। मुदा सिंहेसरा से नइ केलक, अपन इमानकेँ इमनदारीसँ अङैजैत बाजल–

"कक्का, तोरा लग मुँह उठबैत लाज होइए, मुदा बाप-पित्ती तँ तोहीं सभ ने भेलह, बेटा-भातीज जँ गलतियो करत तँ तोहीं सभ ने तेकर निमरजना करबहक।"

सिंहेसराक बात सुनि जेना हृदयमे धक्का लगल। धक्को केना ने लगैत, एकटा बाल-बोध ऐसँ बेसी कहिये की सकैए। पीठ उघारि आगूमे देत जे कक्का लिअ गलती केलौं एक साए जूता मारू। मनुक्ख विवेकी छी, लाज ओकर आभूषण छिऐ, जे अंगीकार केलाक पछाइत लोककेँ रहिये की जाइ छै...।

मनमे जेना उड़ी-बीड़ी जकाँ लगल। मुदा गुण भेल जे सिंहेसरे बाजल– "कक्का, जे बुढ़ियाक धारलिऐ से ते करबे केलिऐ।"

मुदा की धारलिऐ, की केलिऐ की नइ केलिऐ, की करक चाही, की नइ करक चाही..?

एक संग अनेको प्रश्न मनमे नाचि उठल। नचैत मन सिंहेसराक पिता–ढोरबापर पड़ल। सुधंग लोक, खुशीलालक एकटा महींसक सेवाक सोल्होअना भार ढोरबापर, यएह जिनगी यएह दुनियाँ रहैन। कुरसों बिआह भेल रहैन। कुरसोंक जइ टोलमे बिआह भेल, ओ अगुआएल लोकक टोल, ओइमे एकघरा। माने सिंहेसराक माइयक चिष्टो-चार आ बजै-भुकैक ढंग सेहो अगुआएल। सुधंग पति पेब कुरसोंवाली एक-छत्र परिवारक गारजन बनि गेलि।

सत्तैर-अस्सीक दशकमे मिथिलांचलमे भूमि आन्दोलन जोरपर छल। आने गाम जकाँ हमरो गाममे पाहीपट्टीबलाक आधासँ बेसी जमीन। बटेदार जगि कऽ बटायदारी आन्दोलन केलक। ओना गामबलाक खेत नहि मुदा बहरबैयाक प्रलोभन जे अहीं सभकेँ सभटा खेत सुमझा देलौं। लोभमे गामक लोक संग भऽ गेल। जमीनेक लोभ कुरसोंवालीकेँ सोझहामे रखि, नेता बना टोलमे ठाढ़ कऽ देलक। बुझलो बातमे कुरसोंवाली लोभा गेली। बुझल बात ई जे जे खेत बटाइ करैए ओकर तँ हक बनिते छइ। मुदा मुफ्तक माल केकरा गाड़ा लगै छै जे कुरसोंवालीकेँ लगितै, ओ ओइ आन्दोलनमे चारित्रिक गुण बिसैर ओइ बटाइ जमीनपर अपन हक बनबैले छोट-छोट खोपड़ीनुमा घर बनबा, ओइमे आगि लगबा, गामक तीस-पैंतीस गोरेक बीच ओइ अगिलग्गी केसमे हमरो नाओं घोंसिया देलक। वएह कुरसोंवाली जे मोहरा बनि गाममे एते भारी फसाद केलक। तेकरे सराधक चर्च छी। निरीह, निरदोस सिंहेसराकेँ पुछलिऐ–

“बुढ़ियाक मृत्यु नीक जकाँ भेल किने?”

हमर बात जेना सिंहेसराक मनकेँ बेध देलकै। ओकरो अपन माइयक किरदानी मनमे ठहकैत रहइ। जहिना विश्व मोहिनी लग नारद बाबा बगलेमे शिवजीक दूत देखि बानरक मुँह बनौने, तहिना बुझि पड़ल। मुदा आब उपाइये की अछि। यएह ने जे ओ गामक इतिहासक एक अंश

भेल।

'मृत्यु' सुनि सिंहेसरा बाजल– "कक्का, हम जे दू सालसँ पंजाब जाए लगलौं हेन, तेकर माख खुशीलाल काकाकेँ भऽ गेलैन। ई बिसैर गेलखिन जे सरकारो नोकरीबलाकेँ जनम भरि पार लगबै छइ।"

सिंहेसराक बात सुनि बुझि पड़ल जे माइक पीड़ा ओकरा सता रहल छइ। कहलिऐ– "से की?"

सिंहेसरा बाजल– "कक्का, जखन माए दुखित पड़ल, अपने गाममे नइ रही, घरवालीक समाद गेल, जे रुपैआ रहए से पठा देलिऐ। जँ अपने गाम चैल ऐबतौं ते ओहो आमदनी केतएसँ आनितौं।"

बजलौं किछु ने मुदा मुड़ी तँ डोलाइये देलिऐ। डोलैत मुड़ी देखि जेना सिंहेसराकेँ सह भेटलै। बाजल– "कक्का, बेमारी आगू हम सभ सकबै, केते कमाइये अछि। बुढ़ियाक दवाइ छुटि गेलइ। पछाइत बहीन आबि अपना ऐठाम लऽ गेलै। ओहो ते हमरे जकाँ अछि। ओहो नइ सकलै। बेमारी बैढ़ते गेलइ। ओत्तै मरि गेल। ओत्तै जराओलो गेल।"

जेना साँस छुटल, बजलौं– "तँए ने बुझने छेलौं। भोज-भात नीक जकाँ केलहक किने?"

सिंहेसराक आँखि ढबढबाएल। बाजल– "केकरा नइ माए-बापक सेवाक लिलसा रहै छइ, मुदा ओते वैभवो रहत तखन ने पार लागत।"

कहलिऐ– "अखन काजक बेर अछि, तोहूँ जाह अपन काज देखहक आ हमहूँ खेत देखैले जाइ छी।"

❑

शब्द संख्या : 1223, तिथि : 15 फरवरी 2016

अपन पुरखाक डीह

गरमी मास तँए बजारक काज भिनसुरके उखड़ाहामे करब नीक बुझि–माने परिवारक काज छी, कोनो कि एकेटा दोकानक काज रहैए, रंग-बिरंगक काज, रंग-बिरंगक दोकान गेले पछाइत ने हएत। तँए बेसी समय लगिये जाइए। भिनसुरका उखड़ाहामे जँ कनी-मनी अबेरो भेल तँ नहाएब पछुआएल रहैए। जिनगीक गति-विधिमे नहेबो सृजन संस्कार छीहे। मुदा बेरुका उखड़ाहामे जखन घरसँ निकलैक समय होइए तखन जँ निकलब तँ घुमती बेर अन्हारमे पड़िये जाएब, यएह सोचि जलखै कऽ साइकिल पकैड़ झंझारपुर बजार विदा भेलौं।

गामक आखिरी टोल टपि जगरनाथपुर वाली रमकल, पच्छिम-मुहेँ माने झंझारपुरे दिस बढ़ल जाइ छेली। नवके सेनरेले साइकिल, हल्लुक चाइल, ई सोचि रेसमे जाइत रही जे कोनो काज करैमे शुरूसँ तेजी नइ राखब तँ पछाइत काजक मुहेँ टेँढ़ भऽ जाएत नइ तँ नाङैरे छपटा जाएत, तँए रेस रही। एक लग्गा आगू जखन जगरनाथपुर वाली आएल तखन चाकर-चौड़गर, देह आ दुलकी चाइल देखि मन सिहैर गेल।

तीन साल पहिने जगरनाथपुर वाली पुतोहुक रूपमे लालपुर एली। जेहेन चाकर-चौरगर, हड़गर-कटगर देह जगरनाथपुर वालीक तइसँ बीसे छीतन भाइक सेहो रहैन। ओना चाकर-चौड़गर भुटाँरि सेहो होइए मुदा से नइ, छीतन भाय जेहने चाकर-चौरस तेहने नमगर-छीपगर सेहो रहैथ तँए भीहगर पुरुख जकाँ रहैथ। मुदा तइ आगू तँ जगरनाथपुर वाली भौजी

छोट-खुट्टीक बुझिये पड़ै छेली मुदा तइसँ की हुअए, पुरुखक नाप पुरुखक जड़ी-कड़ीसँ होइए, महिलाक नाप महिलाक जड़ी-कड़ीसँ होइए, तइ मानेमे जेहने भीहगर पुरुख छीतन भाय तेहने भीहगैर महिला जगरनाथपुर वाली। मोटा-मोटी यएह बुझू जे दुनूक जोड़ी अधो-छिधो भुटाँरिक श्रेणीमे नइ अछि।

खएर जे छेलैन, सुखल डेढ़ कट्ठा आ सहगर दू कट्ठा आ मटि-पनियाँ तीन कट्ठा खेत एक दिनमे छीतन भाय कोदारिसँ उनटा दइ छेलखिन। जे गामक सभ जनैए, कमासुत देखि छीतन भायकेँ अनका जकाँ बिआहमे दलालकेँ नै भीड़बए पड़लैन, कन्यागते अपन बेटीक चेहरा-मोहरा भजारि पसिन कऽ लेलकैन। सोझ-मतिया छीतन भाय, माए-बाप मरि गेल रहैन, दान-दहेजकेँ हाथक मैल बुझि फेक देने रहथिन।

तीन साल तीन मास छीतन भाइक बिआहक भेल छेलैन, जइमे तीन मास मुइनो भऽ गेलैन। मृत्युओ कि कोनो कि ओछाइनपर पड़ल-पड़ल भेलैन। से नइ, पुरखाह मृत्यु भेल छेलैन। दुपहरका समय रहै, नहाइ बेर रहै, पोखरिक घाटक बगलेमे एकटा ढेंग रहै, ओकरे उठा पोखरिक किनछेरमे घाट बनबै काल छातीक हड्डीए सरैक गेलैन। हड्डी सरैकते ढेंग नेनहि खसि पड़ला, खसबक संग ऊपरसँ ढेंगक चोट सेहो नीक जकाँ लगलैन। ओत्तै घाटेपर छीतन भाइक प्राण निकैल गेलैन।

समैयक संजोग कहियो आकि दुनूक संजोग सवा दू बर्खक एकटा बेटा छैन। समैयक संजोग ई भेल जे तीस बर्खक बरकेँ बारह-बर्खक कन्याक संग बिआह भेने, चाहे सन्ताने बिलमसँ होइ आकि जनमैसँ पहिनहि कोंकिरिया जाइ। साल भरिक पछाइत छीतन भायकेँ बेटा भेलैन। जाबे छीतन भाय जीबैत रहला ताबे जगरनाथपुर वाली अँगना-घरक काज सम्हारैत बेटाक सेवा करै दुआरे घरसँ बाहर कमाइले नइ गेली। ओना शुरूक साल नवकनियेँमे गेलैन, पछाइत बच्चाक बोझ पड़ि

गेलैन। ओना जगरनाथपुर वाली ऊहिगर जनाना छैथे। घर-अँगनासँ लऽ कऽ खेत-पथार धरि काजक बेसी लूरि। सभ लूरि ऐ दुआरे नइ जे असंख्यो लूरिमे किछुए लूरिक खगता लोककेँ जिनगीमे होइ छइ।

जगरनाथपुर वालीक दुलकी डेग देखि मनमे भेल जे पुछिऐन जे "केतए जाइ छी।"

ओना अखन साइकिल सवारी पुरुख-औरत सभ मिलियो कऽ करै छैथ आ फुटो-फुट। मुदा से नइ ओइ जगहक बात छी जैठाम पुरुख-औरतक बीच संग मिलि साइकिल सवारी बरजित अछि। तँए संगे चलैक कोनो गर ने बुझि पड़ल। फेर भेल जे जँ साइकिलसँ उतैर दुनू गोरे गप-सप्प करैत रस्ता काटब ओ बेसी नीक हएत। फेर शंको हुअए जे आगू नमहर पाँतर अछि, रस्ते-रस्ते केते लोक चलत, सभकेँ अपन-अपन मन छै जँ कियो किछु उट-पटाँग बात बाजि दिअए, तखन तँ लेनी-देनी भऽ जाएत।

फेर भेल जे जहिना ओ उट-पटाँग बाजत तहिना हमहूँ उट-पटाँगे सुनि कऽ बुझि लेब। तँए लोक केकरोसँ गप-सप्प नइ करए, रस्ते-रस्ते चलए नइ, सेहो केहेन हएत। मने-मन गुनधुन करिते रही कि साइकिलक पैडिल ढील भऽ गेल, गति टुटए लगल। मुदा ताबे जगरनाथपुर वालीक बगलमे पहुँच गेल रही।

ओना, साइकिल चलिते रहए, मुदा ब्रेक दाबि ठाढ़ केलौं। बगलमे साइकिल रोकैत बजलौं–

"केतए जाइ छिऐ?"

एक तँ ओहुना दिअरक सामाजिक सम्बन्ध, तैपर पति जीवित रहने महिलाकेँ अधिकारो क्षेत्र घटैए, जे पुरुखक सीमामे आबि जाइए, मुदा पति-विहीन भेला पछाइत परिवारक जवाबदेहीक भार पड़ने सामाजिक बन्धनक बढ़ोत्तरी सृजित भइये जाइए। जे जगरनाथपुर वाली भौजीकेँ

सेहो भेटिये गेल छैन। ठाढ़ भेल साइकिलपर अपने ठाढ़ से उतरैक विचार करैत रही कि जगरनाथपुर वाली सोझा-सोझी लग भेली। चाइनपर छोट-छोट पसेनाक बुन टपकैत रहैन।

ओना मनमे प्रश्न घुरियाइते रहैन जे जखन पुछलैन, तखन उत्तर नइ देबैन सेहो केहेन हएत। एक तँ दीअर दोसर समाजक भाए-बोन, जँ कहीं कोनो जीवैक दोसर उपाइ करैथ वा कहैथ तँ आन गामक खटनीकेँ अपना गाम समेट आनब। जाबे गामक लोक अपन खटनीकेँ अपन गाममे पलित नइ करत ताबे कोनो गामक फलित बनब भारी तँ अछिए...।

भौजाइक रूप बनबैत जगरनाथपुर वाली बजली–

"बौआ, की कहब! सबा-दू बर्खक बेटा अछि जे ने अखैन देह छोड़ि खेलाइबला अछि, आ जँ धिया-पुता संग खेलबो करत, सेहो बिना सोझमे रहने केना हएत।"

कहिते जेना जगरनाथपुर वालीकेँ अपने मन अपनाकेँ तौहीन कहए लगलैन तहिना चुप भऽ विचारए लगली। मुदा हमहूँ तँ ई बुझिये गेलौं जे जखन मनमे आगि पजैर जाइ छै तखन निच्चाँक मुहसँ खाली खोंरनीए चलबैक जरूरत होइ छइ। सएह करैत बजलौं–

"एना किए, की-कहाँ कहि देलौं। नइ बुझलौं अहाँक बात।"

हमर बात जगरनाथपुर वाली भौजीकेँ नीक लगलैन। अपन मनक धैल-घड़हरक जेते घराउ विचार रहैन से एकेबेर उझलए चाहैथ, मुदा सातटा अन्न जे एके खेतमे उपजत तखन ओकरा बेराएबो कठिन अछिए। मुदा पहिलुका बातक नाङैरकेँ नेङरबैत मुँह पकैड़ बजली–

"बौआ, दू सालक बच्चाकेँ जेहन रक्षक माइक जरूरत होइ छै से..?"

पुछलिऐ–

"की रक्छक?"

‘की रक्छक’ सुनि जगरनाथपुर वाली आँखि उनटबैत बजली–

“बौआ, ओहन जिनगीक फाँसमे फँसि गेल छी जे किछ करैत किछ ने बनैए।”

भौजीक बातक कोनो भाँजे ने लगल। की बाजि रहली अछि...।

ताबे बलियारिक पाँतरक एकगच्छा लग पहुँच गेल रही। पएरे-पएरे दुनू गोरे गप-सप्प करैत जिनगीक पारिवारिक रस्ता कटैत रही...।

कहलयैन–

“देखू, आब रस्ता लगिचा गेल। तँए कनी-कनी सभ गप कऽ लिअ। केतए जाइ छिऐ?”

बेवसीक स्वरमे जगरनाथपुर वाली बजली–

“बौआ, जहिया अहाँक भाय साहैब संग छोड़लैन तहियासँ ते अपने ऊपर ने अपन परिवारक भार पड़ि गेल।”

हूँहकारी भरैत कहलयैन–

“एकरा के काटत?”

सह पेब जगरनाथपुर वाली बजली–

“चिमनी भट्ठामे दुनू उखड़ाहा ईटा उघै छी।”

दू कोस पएरे चलि, आठ बजेसँ साढ़े दस बजे तक काज करैत जगरनाथपुर वाली डेढ़ घण्टा रस्ता प्रति खेप सेहो गमबै छैथ, जे चारि खेप भेल। सदिकाल मन बेटापर गड़ले रहै छैन जे देह छोड़ि एक उखड़ाहा छोड़ैबला बच्चा कहाँ अछि, खाइले बाटीमे दऽ आएल, गिलासमे पानि रखि देलक मुदा बच्चा-बच्चेक बीच ने रहत। जँ कोनो बच्चा मारबे करै आकि ठेलिये कऽ खसा दइ तँ ओइ बच्चाक कानबकेँ चुप केनिहार के हएत?

रामपुर चौकपर पहुँच गेलौं। आब दुनू गोरे दुनू दिस हएब,

कहलयैन–

“भौजी, एकटा बात तँ छुटिये गेल।”

पाशा बदैल गेल, एते काल हम सुननिहार छेलौं, आब ओ भेली। बजली–

“की ई.. ई.?”

कहलयैन–

“जखन अपना सभमे दोसर-तेसर बिआह करै-के चलैन अछि, तखन एतेटा जिनगी असगरे काटब से नीक हएत?”

हमर बात भौजीकेँ नीक नइ लगलैन। मन बिदैक गेलैन, मुँह बिहैक गेलैन आ बोली चिहैक गेलैन–

“अपन पुरुखाक डीह केना उसरन कऽ देब। जाबे अपन सख-मनोरथ-तियागब नहि, ताबे बाप-पुरखाक पगड़ी केना बँचत।”

भौजीक बात सुनि अनेको जिज्ञासा मनमे जगल मुदा ओहू वेचारीकेँ अबेर होइतै आ अपनो होइत, तँए संग छोड़ैत कहलयैन–

“जखन एते दूर काज करए अबै छी आ सरकार साइकिल बाँटिते अछि, अहूँ एकटा मांगि लिअ।”

हँसैत भौजी बजली–

“अपन चरणबाबूक टैक्सी सदिकाल रिजरबे रहैए।”



शब्द संख्या : 1187, तिथि : 17 फरवरी 2016

जेना हाथी रही

भोरे ओछाइनपर पड़ले रही कि लाल बाबाक अँगनामे तूर-फेन मचऽ लगलैन। करवनो-करवनो बाबा तेते जोरसँ बाजैथ जे बुझि पड़ै मारि हएत। बाबाक बात अझक्के सुनलौं–

"जेना हाथी रही..!"

सिरमापर मुड़ी उनटबैत देहो उनटेलौं। ओना बीचमे एकटा बात कहि दइ छी। हमर भोरक माने लाल बाबाक भोर नइ छिऐन। तेकर कारण अछि, हम अठबजिया ओछाइन छोड़निहार छी। बाबा जखनेसँ दिनक पहर शुरू होइ छै तखने जगि कऽ अपन पहरा करए लगै छैथ। तँए आठ बजे भिनसर हमर पहिल पहर भेल आ बाबाक तेसर पहर, जे भरल जुआनीक घड़ी छी। मुदा सभ ने अपने हाथक घड़ी देखि अपन समय निर्धारित करैए, चाहे कियो सूर्यक हिसाब जोड़ए लगैए जे ओइठाँ केते समय होइ छइ। तहिना अपनो ने अपने घड़ी देखि रूटिंग बनौने छी। भोरका मुहूर्त, अखन तँ शुभ-शुभ कऽ उठैक अछि।

अपन सटले घरक बगलमे लाल बाबाक अँगना छैन। सिरमापर मुड़ी ओंगठौने विचारए लगलौं जे बाबेक बात छी जँ सोझ पड़बैन आ कहीं मारि छानि लैथ तखन तँ अनेरे बिनु बुझने मारिमे फँसि जाएब। एक तँ भोरका जागरणक बेर, तैपर मारिये-मरौबैलसँ दिन शुरू करब तखन तँ तेहेन जतरा बनि गेल रहत जे भरि दिन मारिये-मरौबैलमे चलि जाएत, तइसँ नीक जे अनठा कऽ किए ने पड़ले रही जे कियो देखबो करत तँ

बुझत जे सुतले अछि। मुदा फेर लगले हुअए जे लाल बाबा तेहेन फटाह छैथ जे अपन अँगनाक झगड़ा नेने आबि मत्थेपर ने पटैक दैथ जे तोरा सन-सन पड़ोसिया रहने की आ नइ रहने की हएत। हम जे मरियो जाएब, तैयो तोहर भरोस नइ करब...।

फेर मनमे भेल, कनी बिलमैक तँ बाट-घाट अछिए। देहपर वस्त्र नेने बिना केना अँगनासँ बहराएब, जखन अँगनासँ बहराएब आ हल्ले-हुल्लक बात छी, अपन टोलक के कहए जे आनो टोलक धिया-पुता आबिये गेल हएत, किए ने बीचमे ओही धिया-पुतामे ओझराइत, जखन देखब जे बाबाक बोल नरमेलैन तखन पछुआरेसँ कहबैन–

"बाबा, हमहूँ छी तँए बेसी औगताउ नहि। परिवारेक बात छी, दस बरतन एकठाम रहैए, कनी-मनी ढाही-ढूही लगबे करतै।"

ओछाइनपर पड़ले-पड़ल विचारैत रही कि बिच्चेमे एकटा दोसर विचार मनमे मुँह उठौलक। मुँह ई उठौलक जे अखन बाबाक समय-काज केहेन छैन, माने हुनकर भरि दिनक क्रिया-कलाप सभकेँ बुझल छैन, हमरो बुझल अछि। हुनकर तँ तेसर पहर छिऐन, परिवारेक बीचक काजक मुहूर्त छिऐन। काजक दौड़मे–चाहे बेकतीगत हुअए कि पारिवारिक आकि सामाजिक–कनी-मनी घीच-तीर होइते अछि। आन परिवारक काजक योजनामे जाएब नीक हएत की नहि? फेर भेल जे एहेन जे पड़ोसिया हुअए जे काज-काजमे छिन्ना ताकत तखन तँ भऽ गेल सामाजिकता। केकरो घरमे आगि लगतै आ अहाँ कहबै हमर पानियेँ छुबाइए तखन तँ निचेनसँ घरमे आगि लगल रहए दियौ। हाँइ-हाँइ कऽ गंजी पहीर देहपर गमछा नेने लाल बाबा लग पहुँचलौं। हमरा देखिते चारि-चारि हाथ कुदैक फानैत बजला–

"ई सभ बड़-बुधियारि। जेना हाथी रही तहिना हिनका सबहक पाछू जिनगी ढहि कऽ बुढ़ा गेल मुदा हुकुमदारी लधले अछि।"

पाछूक बात तँ कोनो सुनने नइ रहिऐन, मुदा विचार तँ निर्णायक मोड़पर आबिये गेल अछि। निर्णायक मोड़ ई भेल जे बड़-बुधियार कि कम बुधियार से तँ नापीसँ हएत। तइले अमीन रखए पड़त, समय तँ ठहरावक अछिए...।

लफैर कऽ गेलौं आ बाँहि पकैड़ बाबाकेँ कहलयैन– "बाबा, परिवारेक बात छी, असथिरोसँ भऽ सकैए।"

मुदा से बाबा मानि गेला। बैसते जेना बुझि पड़ल जे आब दोसरोक बात सुनैले कान ठाढ़ केलैन।

कान तँ ठाढ़ केलैन मुदा पुतोहु सभ हमरा दुआरे आकि की से तँ ओ सभ जानैथ मुदा देखलौं जे एक दियादनी चाह बनबए लगली, दोसर जलखैक ओरियानमे लगि गेली, तेसर बच्चाकेँ घरसँ निकलैले अंगा-पेंट पहीराबए लगली आ चारिम बाल्टीन नेने कल दिस विदा भेली। ओना मोटा-मोटी फील्ड छोड़ि कियो ने निकलली, सभ बाबेक बात सुनैले अपन-अपन कान ठाढ़ केने कनसोह लगौने रहैथ जे बुड़हा की सभ गप-सप्प करै छैथ। ओना बजैले लाल बाबाक मुँह लुसफुसाइन मुदा जेना कियो मनमे मनाही कऽ दैन तहिना ठोर समेट लैथ। ठोर समेटैक कारण बाबाक अपन जे रहल हौन से तँ ओ अपने जनता मुदा बुझि पड़ल जे बाबाक मनमे जेना कोनो नीके कि अधले बात बजैले छैन्हे नहि। एकर माने ई नइ जे हुनकर बोले हेरा गेलैन कि हारि गेलैन, कि हरण भऽ गेलैन, कि मरण भऽ गेलैन आ कि उसरन भऽ गेलैन। बाबाक मन ओइ सीमापर अँटैक गेलैन जेतए कियो अपन लाजक संग शस्त्र सज्जाकेँ सेहो, मुसहैन घरक बिल जकाँ भूर-भारकेँ बन्न केने रहैए वा बसैए। लोक लाज तँ ओत्तै ने अबैए जेतए लोकक अहित काज होइए, तहिना शस्त्र सज्जा सेहो ओतए ने सजैए जैठाम ओकर मनन हनन दिस बढ़ए लगैए। ओना हनन दिस बढ़ैक अनेको कारण अछि, मुदा से अखन नइ, अखन एतबे जे किछ लोहो दोख किछ लोहारो दोख। ओना बाबाक मुँहक रूखिसँ बुझि

पड़ल जे किछु बजैले सनमनाइ छैन... ।

पुछलयैन–

“बाबा, परिवारेक आ कि समाजेक छोट-बात पैघ केना भऽ कऽ बेसी नोकसान कऽ दइए?”

हमर बात सुनि बाबाक मुँहमे मुस्की एलैन। जहिना छोट बच्चा एक मुहेँ कनैए आ दोसर मुहेँ हँसैए तहिना बुझि पड़ल। जेना पहिनेसँ हमरे सबालक जवाब दइले मन बनल होइन तहिना बजला–

“बौआ महेश, आब ते अपने अन्तिम घड़ीमे पहुँच गेल छी, मुदा जाबे जीवै छी ताबे आँखियो केना मूनि कऽ पथरा लेब।”

बाबाक बात सुनि बुझि पड़ल जे टटका धाहक बोखार नइ लागल छैन बसिया बोखारक लछन छिऐन। ओना परसुए भनक लागल रहए जे बाबाक मनो आ देहो गम-गमा गेल छैन। गमगमियोँ तँ एकटा सीमा छीहे, ऐठामसँ बोखार आगूओ दिस बढ़ि सकैए आ छुटियो सकैए।

तहिना गम-गमी अबैयोक कारण अछि, करवनो शरीरक जलनसँ होइए तँ करवनो रौदमे चालि पड़लासँ होइए। तैबीच पुतोहु चाह नेने आबि हमरा आगूमे चाहक कप रखलैन। हम चाह देरवए लगलौं, बाबाक हाथमे चाह धड़बैत आँखिमे आकि आँखिसँ की कहि देलखिन से तँ ओ जानैथ मुदा बाबाक दाँत खटखटेलैन, से जरूर सुनलौं। ओना बबो दाँत खटखटाइये कऽ रहि गेला, बजला किछु ने। पुतोहुओ ससैर गेलखिन। बीचमे हम पड़ि गेलौं। तँए जहिना सुरूज, चान धरतीक अछि सएह भऽ गेल। चाह पीबैत-पीबैत मन भेल जे अपन सभ किरिया-कर्म पछुआएले अछि, से नइ तँ उठि विदा भऽ जाइ। मुदा लगले भेल जे ई तँ केकर दिनक पइर भऽ जाएत जे केतए एलौं तँ केतौ ने! हल्ला सुनि एलौं आ केलिऐ की? कमसँ कम बाबाक बेथो नै सुनिऐन, सेहो केहेन हएत। ओना बाबाक संग ठाँहि-पठाँहि गप-सप्प होइए, तँए मनमे भेल जे कहि दिऐन–

“बाबा, अपन सभ काज पछुआएल अछि तँए बेसी काल नइ अँटकब।”

जेना बबोकेँ उत्तर मुहेँपर रहैन तहिना बजला–

“तोरा कि कोनो पकड़ने छिअ। सभ आबाद रहअ, सएह ने कहबह।”

ले बड़ौर! ई बुढ़िया फूसि भेल कि बुढ़बा फूसि?

मुदा अपनाकेँ सम्हारैत कहलयैन–

“बाबा, भोरे-भोर किए गरमा गेल छेलिऐ?”

हमर बात बाबाकेँ नीक लगलैन। नीको केना ने लगितैन, केहनो दुखित-पीड़ित किए ने हुअए, ओ अपन दुख-पीड़ा तँ कानियेँ-खीझ आकि कहिये-सुनि ने मेटबैए...।

बाबा बजला–

“बौआ, बाध-बोन दिससँ टहैल कऽ अँगनामे पएर देनहि रही कि पुतोहु उपराग दैत कहली, अपना जीवैत नीक घर बना दउथ। से तोहीं कहह ई उचित भेल? कियो अपन घर अपना लूरिये-बुधिये बनौत आकि बबे भरोसे काज चलतै?”

बाबाक बात सुनि मन घुरिया गेल। की उचित भेल आ की नइ उचित भेल, ओ धाँइ-दे बाजब नीक नइ बुझि कहलयैन–

“एकटा बात आरो बुझब अछि ओ ई जे, छोट-रग्गड़ बड़का झग्गड़ केना परिवारो आ समाजोमे बनि जाइए?”

मने-मन जेना बाबा पहिने गुनिया-परकालसँ नक्शा मिलौलैन। नक्शा मिलिते बजला–

“देखहक बौआ, गाममे केतेको झगड़ा ओहन अछि जे घर बनैत-बनैत मठौत लग पहुँच गेल अछि, मुदा पैछला रग्गड़ घराड़ीक उठि बड़का

झग्गड़ बनि गेल अछि। तेतबे किए, बिऔहती गीत दुरागमनमे आ दुरगमनियाँ गीत बिआहमे गाबि सेहो रग्गड़ ठाढ़ कऽ केतेको बरियाती कपार फोड़बैए।"

कहलयैन–

"बाबा, नीक नहाँति नइ बुझलौं।"

बाबा बजला–

"कोनो घर बनैए जमीनपर। तँए पहिने जमीनकेँ अनुकूल बना ली, जखन जमीन अनुकूल भऽ जाए तेकर पछाइत घर बनाएब शुरू करी, ई भेल प्रक्रिया। मुदा समाजो तँ समाजे छी, करवन केम्हर भऽ जाएत तेकर ठीक थोड़े अछि! तँए एहेन-एहेन सैयो-हजारो रग्गड़ झग्गड़ बनि ठाढ़ अछि।"



शब्द संख्या : 1245, तिथि : 20 फरवरी 2016

कठफल

माघ मास, नरक निवारण चतुरदसी दिनक बेरुका उखराहा, रस्ताकातक परतीपर ठाढ़ भेल बैरक गाछ नमहर साँस छोड़लक। साँस ई छोड़लक जे अखुनका मौसमक फल तँ हमहीं छी किने, हमरे केने बाल-बोधसँ बाल कन्याक संग सियान पुरुखो आ सियान औरतो फलहारो करत आ नरकसँ उद्धारो पौत। मुदा से आनो बुझए तखन ने, केकरा एते फुरसत छइ, जे अपना छोड़ि अनकर कोन बात जे अपनो माए-बापकेँ देखैक फुरसत छै जे बुझत हमहींटा छी आकि आरो अछि। अमृत फल रहितो कियो मोजरे ने दइए, कियो कठफल कहैए तँ कियो कँटहा फल।

..लगले बैरक गाछकेँ अपन आत्माक बोध भेलै। आत्म-बोध होइते मुहसँ निकललै–

“केकरो मोजर देने आकि नइ देने केकरो मोजर हएत। सभकेँ अपन-अपन गुण छइ। जइसँ ओ गुणवान अछि।”

‘गुणवान’ लग अबिते बैरक गाछकेँ अपन बास-भूमि, जनम-धरती पर नजैर पड़लै। केकरो जे कियो नाओं लइए से की ओहिना लइए। कठफल कहैए तँ ऐमे लाज किए हएत। फल की कठफल नइ होइए, काठेक गाछमे ने आमो फड़ैए आ कटहरो। ओना फलो तँ फल छी जे कोनो अकासमे फड़ैए तँ कोनो पतालमे, तँए केकरो फल नइ कहल जाएत? मुदा से नइ ने अछि, जहिना फूलमे कठफूल होइए, जेकरामे सुगंधो छै आ नहियोँ छइ, रंगो-रूप छै आ नहियोँ छइ, तँए ओ फूल नै

भेल सेहो तँ नहियेँ कहल जाएत। ओना कठफूलकेँ लोक ने सुगन्धित मानैए आ ने देवतापर चढ़बैए। जखन कि कठफूलो सुगन्धित होइए, मुदा तैयो ओकर पूछ नइ छइ। तहिना हम कठफल भेलौं। जेकरा-ले ने एकोटा अस्पताल छै आ ने डॉक्टर। अँगूर-सेव इत्यादि फलकेँ साले-साले मेडिकल टेस्टो होइ छै आ शल्य चिकित्सा सेहो होइ छइ। माने ई जे अँगूर-सेवमे गुण पौल जाइए आ हमरामे नइ पौल जाइए। मुदा हमर टेस्ट कियो केनिहारे ने भेल। लगले गाछक मनमे आत्मबलक झोंक उठलै, बाजल–

"नइ कियो टेस्ट केलक तँ नइ केलक, तइसँ की बिगड़ैए गेल।"

झोंकमे तँ गाछक एक मन बाजि गेल मुदा लगले दोसर मन रोकैत कहलकै–

"मेडिकल टेस्ट नइ भेल मुदा नरकक दुआरिक मुँहपर तँ हमहीं ने ठाढ़ छी, ओ कियो झुठला देत।"

लगले मन आगू बढ़ि मनुक्खपर पहुँच गेलै, मनुक्खोमे ने कठमनुक्ख होइए। ओकरा कहाँ हमरा जकाँ आइन-पीड़ा लगै छइ।

मन ठमकलै। ठमैकते पाछू दिस उनैट तकलक तँ बुझि पड़लै जे हमरा लोक कठफलक गहना पहिरा नाओं रखि देलक। माने आभूषित नाओं। भाय आभूषणो तँ आभूषणे छी किने। कियो सोनाक हार गरदैनमे लटकबैए तँ कियो कारी रंगक गोदनासँ छातीमे हार लटकबैए। यएह तँ छी आभूषण बनबैक कारगुजारी।

गाछक मन ठमकलै। ..अखन तक फले-फूलेक बातमे ने मनमे घुरियाइ छल मुदा ई गड़बड़ भेल, माने कम आँट-पेटक बीचक भेल। गड़बड़ ई भेल जे एकटा होइए एकसँ लऽ कऽ साए तक सीखबो आ गनबो, दोसर होइए ओकर उनटा गनब, जेना सैयाँ-निनाबे, मुदा सीखत सुनटे गिनतीसँ ने। माने एक-दूसँ साठि, सत्तैर कहै छिऐ तहिना ने उनटो

गननिहार सत्तैर साठि दू एक कहैए...।

गाछक मन ओझरा गेलइ। ओझराएले विचारमे सोझरी छोड़बैत विचड़लै–

“अनेरे ने हमरा धौजैन होइए, केकरोसँ कि अपना कम चास-बास अछि जे अनेरे अनकर हिसाब जोड़ैमे अपने हिसाब जोड़ैक समय ससैर जाएत। तँए अपना-ले किए ने झखी।”

‘अपना-ले किए ने झखी’ मनमे अबिते बैरक गाछकेँ जेना अपन शक्ति अभड़लै। अभड़लै ई जे लोक की मानए की नइ मानए। सभ अपन-अपन मनक मालिक मुखतियार अछि। राजा छी रानी छी। अखनो फलमे ओहन फल छी जे आम कटहर जकाँ ने ओगरवाहीक हिस्सा गनि कऽ कि तौल कऽ लइ छिऐ, आ ने केकरो दइ छिऐ। भाय, ओकरा सभ जकाँ हमरा ओगरवाहक खगते कोन अछि, अपन ओगरवाही अपना लूरिये-बुधिये, हाथे-पएरे करै छी। ओकरा सभकेँ ने राति-बिराति चोरो तोड़ि कऽ लऽ जाइए, हमरा तेकर खगता अछि। डारि-डारि, पात-पात अपन फलक रक्छा–ले तैयार रहैए...।

गाछकेँ अपन किरदानीपर बिसवास जगलै। जहिना विचारो रंग-रंगक होइए तहिना ने कठविचार सेहो रंग-रंगक अछिए। जहिना कठविचार अछि, तहिना ने कठबुधियो आ कठविवेको अछिए...।

गाछक मन जेना दुनियाँ देखैत-देखैत दुनियेँमे वौआ गेलइ। तहिना वौआइत-वौआइत जखन सुनसान बोनमे पहुँचल तखन देखलक जे इजोतमे ने अपने बुझै छी जे ऐ परतीपर असगरे छी, एकेटा छी, मुदा रातिमे तँ से नइ बुझि पड़ैए। बुझि पड़ैए जे हमहूँ कोनो सघन बोनेमे छी...। ओह! अनेरे मनकेँ वौअबै छी। माटिक तरक केशौर जे लत्तीक जड़िक फल छी आ धात्री अकास फल, मुदा खेनिहार तँ केशौरेकेँ ने मीठ फल कहत। भलेँ खिसिया कऽ धात्री किए ने कहै–जे हमहूँ तोहर कोनो

देवी-देवताक पूजा नइ करब...। अनेरे अनकर तीत-मीठक पाछू बेहाल होइ छी, अपन सुहाल किए ने देखब-बुझब।

अपन जन्म-भूमिपर नजैर घुमिते बैरक गाछकेँ अप्पन बोध भेल। बोध ई भेल जे फलनुमा वृक्षक एकटा फल हमहूँ छी, मौसमक हिसाबसँ तीनू मौसमकेँ, माने–गरमी, बरसा आ जाड़क अपन-अपन गुणानुरूपेँ अपन-अपन फलो-अन्नो, तीमनो-तरकारी आ फूलो तँ अछिए। अही जाड़क मौसमक फल हमहूँ छी, तखन जँ कियो 'कठफल' कहैए तँ जरूर ऐ पाछू किछु रहस्य अछि...।

आँखि उनटा-उनटा बैरक गाछ अपना दिस ताकए लगल। उनटल आँखि जेना अँगूरपर पड़ि गेलइ। पड़िते बुदबुदाएल–

"ऐकरासँ की हम सीख-लीखमे अधला छी। मुदा लोकोकेँ की कहबै। मिथिलांचलक एक मौसमक फल उपैट गेल मुदा हम धरि पौष्टिक अहारक विचार कऽ रहलौं अछि!"

मन खिसिया गेलइ। तही काल गामक बाल-बोधसँ लऽ कऽ सियान-चेतन धरिकेँ फुलडाली नेने महादेव स्थान पूजा करए जाइत देखलक, तँ मोन पड़लै–आइये ने नरक निवारण चतुरदसी सेहो छी। सभ ने अपन-अपन नरक निवारण करता।

पूजा केलाक पछाइत, घुमती बेर एक चेतन वाला दोसरकेँ आँगुरसँ बैरक गाछकेँ रस्तेपर सँ देखबैत बाजल–

"बहीन, अही गाछक बैरसँ फलहार करब। अमैनिया कऽ कऽ सिरा आगूक डालीमे रखने छी।"

रस्ता चलैत देवस्थानसँ घुमती वालाक ओंगरीक इशारा देखि बैरक गाछक मन पसीज गेल। पसीज ई गेल जे देवालय जाइसँ पहिनहि अमैनिया कऽ सिरा आगूमे अही दुआरे रखि आएल अछि, जे नरक निवारणक अन्तिम क्षणक बिसरजन करैत फलहार करत।

जेना बैरक गाछक आत्म–शक्ति आत्मबोधकेँ जगौलक। आत्म बोध जगिते गाछकेँ आत्मबल जगलै। आत्मबल जगिते मनमे भेलै जे केकरोसँ दब केना छी। फलक उपैत माटियोपर होइए आ पानियोँमे होइए, तैबीच तँ अपनो छीहे। माटिक उपज भेल आम, कटहर इत्यादि-इत्यादि। पानिक भेल जामुनक छोट अकारमे जमुनी। मुदा अपने तँ ओकरा सबहक हिसाबे बेसी कठफल तँ छीहे। जहिना मरभूमि क्षेत्रमे, माने–मारल क्षेत्रमे, अकाजक क्षेत्रमे सेहो होइ छी, जेतए आम-कटहरकेँ के कहए जे जामुनो-जमुनी नइ होइए, तहूठाम तँ अपन बासो अछि आ बास-भूमि अछि जेकरा जन्मभूमि चाहे जन्म-स्थान सेहो कहै छिऐ। मुदा पाछूमे तँ एकटा पुछड़ी लटकले अछि किने जे केतए बास हएत? बास तँ ओत्तै ने हएत जेतए बसै-जोकर हेतइ। जँ से नइ हेतै तखन ओकर वंश टिकतै केते दिन?

बैरक गाछक मन दू-दिसिया रस्ताक मोड़पर आबि भोथिया गेल। मुदा भोथियाएल रहल नइ, लगले मनमे उठलै जे कुनौली लग कोसी बान्ह टुटब सुनिते दरभंगा-मधुबनीक कटहरक गाछ सुखि जाइए। आम तँ थोड़े दिन दमो कसैए। लोक हमरा कठफल कहैए! सभकेँ अपना संगमे मुँह छै आ अपना फुरने बजैए।

..लगले बैरक गाछकेँ फेर मनमे खौंझ उठि गेलइ। खौंझ उठिते मन कछमछ करए लगलै। जेना-जेना पोखरिक पानि कहियौ आकि कोनो बरतनक डोलैत-हिलकौरैत पानि, असथिर होइत जाइए तहिना-तहिना ने समाजो आ बेकतियोक मन असथिर होइत जाइ छै आ तहिना-तहिना बुधि-विचारमे नव-नव कोंपर जगि-जगि सघनताक सृजन करिते अछि...।

मनमे सघनता अबिते बैरक गाछकेँ अपन शक्तिक ई आभास भेलै जे रौदियाह जगह–मरूभूमि हौउ आकि पनियाह–गहींरगर खेत, जइमे सालक अधिक समय पानि अँटकैए, दुनूठाम तँ अपने बसिते छी। बसबे-

टा केना करै छी, एते तँ आजादी ऐछे ने जे आम-कटहरक फल जकाँ केकरो भाँजमे नइ छी। जखने अपना मने चलैक विचार कहबै तखने ईहो विचारि लिअ पड़त जे जहिना बैरक गाछ रौदी-बाढ़ि सभ सहैले तैयार रहैए तहिना ने अपनो रहए पड़त। सूर-सूर, मूर-मूर दुनू संगे केना हएत..?

मनमे अबिते गाछकेँ सवुर भेल जे लोकक कहने की हेतइ, जखन फल दैक शक्ति अछि तखन वृक्ष केना ने भेलौं..! वृक्षपर नजैर अबिते मन खुशियेलै। खुशियाइते तुलसी बाबाक रामायण मनमे उपकलै। उपैकते भगवान रामकेँ शवरीक आश्रममे भूखल देखि मन विचलित भऽ गेलइ। विचलित ई भेलै जे– जे राम स्वयं परब्रह्म छैथ हुनका शवरी सन आश्रममे एबाक की प्रयोजन भेलैन? मुदा भूखो तँ भूख छी...। भूखपर नजैर अँटैकते भगवान रामसँ नजैर उतैर जुग-पुरुष राणा प्रतापपर आबि गेलइ। अबिते बुदबुदाएल–

"जे तीन बेर खाइ छला ओ तीन बेर खाइ छैथ..!"

मुहसँ निकैलते कठहँसी लगलै।



शब्द संख्या : 1294, तिथि : 22 फरवरी 2016

गामे उपैट गेल

ओना जहिये हाइ स्कूलमे पढ़ैत रही तहिये मास्टर साहैब सबहक मुहेँ सुनैत रही–जे जीव समय आ परिस्थितिक सामना नइ कऽ सकत, ओकर नाश भऽ जेतइ।

मुदा तइ दिन गुरुवाणी बुझि रइट तँ लेलौं, मुदा अर्थ हाइ स्कूलक के कहए जे कौलेजोसँ निकैल गेलौं, जे आइ बुझै छी, नइ बुझि पेने छेलौं। एकर माने ई नइ भेल जे कोनो अरथे ने लगल आकि ओकर अर्थ नइ बुझैत आबि रहल छेलौं। तखन तँ एते भेबे कएल जे कटैत-खोंटैत पैछला अर्थ–जे बुझैत आबि रहल छेलौं–मनसँ उपैट गेल आ नवका अर्थ चलि आएल। एकर माने ईहो ने भेल जे पुरना अर्थक सभ किछु नष्ट भऽ गेल, बीज रूपमे मनमे तहियो छल आ अखनो अछि। तखन तँ एते दूरी जरूर आबिये गेल अछि जे जेना पहिले बीजपर नजैर ओते नइ छल जेते फल बुझै छेलिऐ, आ आइ उनटैत-पुनटैत ई बुझि रहल छी जे पहिने बीआ हएत तखन ओकर अंकुरसँ गाछ हएत आ गाछमे जखन फुलै-फड़ैक शक्ति औते तखन फड़ि कऽ पुन: बीज रूप धारण करत। ओना आन गाममे जे होइए हौउ, मुदा हमरा गाममे तँ एते रग्गर सदिकाल होइते रहैए जे पहिने मुर्गी भेल आकि अण्डा..?

रजिष्ट्री ऑफिसक सनाकक काज करि कऽ झंझारपुरसँ एलौं। मन उपो-उप होटलक भोजनसँ रहबे करए। ओना एके झोंकमे सभ काज समाप्त करैत झंझारपुरसँ घरपर आबि गेल रही, मुदा भोजनक पछाइत

अराम छुटि गेल रहए, मन अस-बीस करिते रहए। परिवारक कोनो काजपर नजैर किए जाएत, पेटो भरले रहए। एकेटा रस्ता सुझए जे भरि-पोख अराम करब तखने चैन औत। सएह केलौं।

ओछाइनपर ई सोचि पड़लौं जे कमसँ कम दू घण्टा नीनसँ सुतब तखन धारक बाढ़िक पानि जकाँ कोर लेत। भोजन तेते चढ़ा कऽ भेल छल जे घण्टा-डेढ़ घण्टा बितलो पछाइत बुझि पड़ए जे कण्ठ तक भरले अछि। पानियोँने पीने रही, पानि नइ पीबैक कारण भेल रहए जे जेते जगह पेटमे पानिसँ छेकब, तइमे चारिटा रसगुल्लेसँ किए ने भरि देबै जे ओही पानिसँ मनकेँ बुझा लइले पानियोँक पूर्ति तँ भइये गेल अछि।

ओना पानिक तृष्णा सेहो बेसी नइ जगल रहए तेकर कारण भेल जे नोनगर कम आ मीठगर भोजन बेसी भेल रहए।

ओछाइन तँ पकैड़ लेलौं, मुदा जहिना नीन निपत्ता भेल रहए तहिना मनो अस-बीस करिते रहए। मनक बेचैनी देखि ईहो हुअए जे अनेरे एते खेलौं। मरिये जाएब तखन खेलहा थोड़े काज देत। फेर लगले हुअए जे कोनो कि अपना मने एते खेलौं, जहिना बीस बर्ख पुरान मित्र रघूदेवक आग्रह तहिना होटलबलाक रंग-बिरंगक विन्यासक नमूना टेस्ट करैमे खुआ गेल..।

कनी काल पड़ल रहलापर भोजन कर लगल, मनमे कनी आफियत भेल आफियत अबिते रघूदेवपर नजैर उठल।

रघूदेव हाइ स्कूलसँ कौलेज धरिक संगी, मुदा जखन ओ बी.ए. केलाक पछाइत कानूनक पढ़ाइ करए लगल तखन संग छुटि गेल।

ओकालत पढ़ला पछाइत अपन कोट-कचहरी माने झंझारपुर, मधुबनीमे प्रैक्टिस शुरू नइ केलक। विद्यार्थीए जीवनसँ रघूदेव बजैमे फरकोर। जेहने बजैमे फरकोर तेहने कोनो बात बुझैयोमे।

दोसर दिन, प्रात:काल दरबज्जेपर बैसल काजक जुति-भाँति

लगबैत रही कि रघूदेव चमड़ाक बैग हाथमे नेने पहुँचल। दिल्ली विदा भऽ गेल रहए। गामक सभ किछ गमा अन्तिम यात्रापर रहए। ओना रघूदेवकेँ देखि मनमे ईहो भेल जे जखन सभ कुछ गमा गामसँ जाइये रहल अछि तखन अनेरे भेँटे करए किए आएल। ओ भेल दिल्ली-वासी, हम भेलौं गाम-वासी। तैबीच संग मिलि गपे की करब, आकि संग मिलि काजे की करब। सभ कथूमे दूरी तँ बनियेँ गेल अछि।

मुदा फेर भेल एहनो तँ होइते अछि जे एक-विचारक आकि एक काज केनिहारक बीच दूरी रहितो एक-गुण आ एक सूत्रो तँ काज करिते अछि, तहूमे आब तँ सहजे दुनियाँ समटा कऽ तेते छोट भऽ गेल अछि जे दुनियाँक सीमो-सरहद मेटाएल जा रहल अछि।

रघूदेवकेँ कुरसीपर बैसबैत, चाह बनबऽ आँगनमे कहि अपनो बैसलौं। बैसते पुछलिऐ–

"संगी, जखन स्कूल आकि कौलेज आकि आने ठाम संगे जाइ-अबै छेलौं तखन ने संगी छेलौं, मुदा आब तँ गाम छोड़ि जा रहल छह?"

ओना आगूक बात मुहसँ नइ निकलल, मुदा जहिना ऐनापर पानि वा गरदा-धूरा पड़ने देखै-देखाइक शक्ति क्षीण भऽ जाइ छै तहिना रघूदेवोकेँ भेल, मुदा दोसर उपाइये की...।

..ओना रघूदेव मध्यम किसान परिवारक माने दस-बारह बीघा जमीनबला, तैपर भैयारियोमे असगरे। जँ कानून पढ़निहार ग्रेजुएटक जगह कौमर्स आकि एग्रीकल्चर ग्रेजुएट रहैत तँ जरूर गाम छोड़ि नइ जाइत, मुदा पढ़बो-पढ़बमे अन्तर तँ अछिए। ओना पढ़बो-पढ़बमे जे अन्तर अछि ओ बुझबो-बुझबमे सेहो अछिए...।

जहिना हमर मन वौआइत रहए, तहिना रघूदेवोक मन भरिसक वौआए लगलै। तँए गुमा-गुमी भऽ गेल। ने रघूदेव किछु बजैत रहए आ ने अपने किछु बजैक बकार फूटए। तैबीच पत्नी चाह नेने पहुँचली। दुनू

गोरेक हाथमे चाहक कप पकड़ा जखन आँगन दिस विदा भेली कि कहलयैन–

“हम दुनू गोरे बच्चासँ बीस बर्ख उम्र धरि संगी रहलौं, मुदा आब तँ दुनू गोरे ओते दूर भऽ गेल छी, जे जिनगीक सभ किछुमे दूरी बनि गेल अछि।”

कनी काल पत्नी दुनू गोरेकेँ देख, चुपचाप आँगन चल गेली। पाँच साए रुपैआक नोट बढ़बैत रघूदेव बाजल–

“संगी, काल्हि भरि दिनक?”

नोट देखि मन सिहैर गेल। सिहैर ई गेल जे यएह छी बालपनक मित्रता। कहलिऐ–

“संगी, ई सभ किछु बात भेल। रखू अपन पाइ। मुदा एकटा बात कहू जे किए गाम छोड़ि चलि गेलौं।”

रघूदेव बाजल–

“गाम-घरमे हमरा सन पेशेवर-ले समय प्रतिकूल भऽ गेल, मुदा दिल्ली सन शहर अनुकूल अछि, तँए जेतै अनुकूल रहत तेतै ने जिनगी असान हएत।”

कहलिऐ– “से की?”

रघूदेव बाजल–

“बेवसायसँ ओकील भेलौं, जे केस-मोकदमापर ठाढ़ अछि। गाम-घरक केस-मोकदमामे आब कोनो लज्जैत अछि! राँड़ी-बेटखौकीक झागड़ासँ काज चलत..!”

ओना रघूदेवक विचार अनुकूल बुझि पड़ल मुदा कोट-कचहरीमे जे केस लम्बित अछि तेकरा नकारबो तँ नीक नहियेँ हएत। मुदा लगले मन घुमि गेल। घुमि ई गेल जे अनेरे गप-सप्पमे काजक समय चलि जाएत,

जइसँ काजे बिथुत भऽ जाएत। तइसँ नीक जे रघूदेवो अपन काज दिस बढ़ह आ अपनो बढ़ी।..पुछलिऐ–

“गामसँ विदा भऽ गेल छह?”

हमर बात जेना रघूदेवकेँ छातीमे बेध देलकै तहिना तिलमिलाइत बाजल–

“आब गाममे रहिये की गेल। घरो-घराड़ी बेचिये लेलौं।”

हमरो सह भेटल, कहलिऐ–

“तखन अनेरे रस्ता रोकब नीक नइ हएत।”

चाहो सठि गेल। रघूदेवसँ पहिने अपने कुरसीपर सँ उठि गेलौं। हमरा उठिते रघूदेवो उठल। गप-सप्प करैत रघूदेवकेँ थोड़े दूर तक अड़ियाइत घुमि कऽ आबि फेर बैसलौं।

ओना खेतक काजकेँ बेंतने रही मुदा मन केनादन करए लगल, तँए काज दिससँ मन हटैक गेल। रघूदेव चलि गेल, मुदा अपन बोझ जेना ऊपरमे लादि देलक। लादि ई देलक जे जइ परिवारक रघूदेव छी, ओ परिवार आइयेक नइ, सैयो-हजरो बर्खक छी, अखन तक गाममे अँटावेश करैत आएल, मुदा जइ रघूदेवकेँ दस-बारह बीघा जमीन छल–जे करोड़ोक सम्पैत भेल, जेकरा बेच दिल्लीमे रहैक बेवस्था कऽ लेलक! संग-संग अपनो पढ़ल-लिखल अछि, आ तखन कहैए जे गाममे अनुकूल परिस्थितिये नइ अछि..!

किछु फुरबे ने करए। मन घोर-घोर भऽ गेल मुदा बुझि नइ पेलौं। तैबीच पत्नी आबि बजली–

“मन-तन खराप अछि?”

तन ते खराब नइ बुझि पड़ल मुदा मन तँ ओझराएल रहबे करए। अपनाकेँ छिपबैत बजलौं– “नइ, मन खराप कहाँ अछि, एतबे मनमे उठि

गेल जे आब बचपनक संगीक संगपनो छुटि रहल अछि।"

बजैक क्रममे तँ बाजि गेलौं, मुदा बीस बर्खसँ, जहियासँ रघूदेव दिल्ली रहए लगल तहियेसँ संगपना छुटि गेल छल, जे पत्नीक मनमे रहबे करैन। बजली–

"एते दिनसँ जे छुटल छेला से कहियो सुमारके ने भेल आ आइ सुमारक होइए!"

जेना पत्नीक विचार मनकेँ झकझोरि देलक। कहलयैन–

"कनी, एकबेर आरो चाह पीया दिअ, एते कालमे केते काज पछुआ गेल। अनेरे लपौंड़ीमे पड़ि गेल छेलौं।"

चाहक नाओं सुनि पत्नी मुस्कियेली। मुदा बजली किछु ने। पत्नीक मुस्की आ बोलती बन्न देखि अपनामे खौंझ खुरखुराएल। खुरखुराइते कहलयैन–

"मन भारी लगैए, जाबे चाह नै पीब ताबे हल्लुक नै हएत।"

पत्नी बजली– "लगले कनी पहिने चाह पीलौं आ लगले फेर पीब।"

जहिना सिगरेट पीनिहार मनक कोनो ओझरी छोड़बैले कसि-कसि कस खीचि मनक ओझरी छोड़बए चाहै छैथ तहिना अपनो मन कहए। मुदा पत्नीक आना-कानी देखि मने बगैद गेल। बजलौं किछु ने, चुप-चाप खुरपी हसुआ लेलौं आ बाड़ी दिस विदा भेलौं।

बाड़ीक मुहेँपर एकटा लतामक गाछ अछि। गाछ लग जाइते मनमे भेल जे ऐठाम बैस जँ विचारबो करब तँ पत्नी बुझती जे कोनो काजे करै छैथ। तँए किछ बजती तँ नहियेँ। सएह केलौं। विचारए ई लगलौं जे पढ़ल-लिखल ग्रेजुएट जखन अपनो जिनगी जीबैले अनुकूले परिस्थिति तकै छैथ, तखन प्रतिकूल परिस्थितिमे जीब के सकैए? जिनगीमे अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति बनिते छइ, मुदा तइ दुआरे भागि पड़ा जाइ, सेहो केहेन हएत..! मन आगू घुसैक गेल। आगू घुसैकते गामपर पड़ल।

हजार परिवारसँ ऊपरेक गाम अछि। मुदा गामोमे तँ सभ जातिक आ बेकतीक अपन-अपन गाम होइते छइ, तैसंग समाजोमे समाज बनिते रहैए। जेना बिनु पढ़ल-लिखल लोकक समाजमे जखन विद्याक आगमन होइ छै तखन पढ़ल-लिखल समाजक जन्म होइए जे रसे-रसे गुलजार होइए।

मन पाछू दिस उनैट गेल। यएह गाम छी जइ गाममे एकटा अमीन छला आ चारि-पाँच गोरे मिडिल स्कूल तक पढ़ने छला, सेहो गाममे नहि, आनठाम जा-जा पढ़लैन। गाममे स्कूल छेलैहे नहि। पछाइत चारिटा इंजीनियर आ एकटा डॉक्टर भेला।

पाँचो अपन पैत्रिक सम्पैत बेचि-बिकीन बजार पकैड़ लेलैन। एते जरूर भेल जे पाँचोक परिवारमे जहिना विद्याक बढ़ोत्तरी भेलैन तहिना धनोक भेलैन, मुदा ओ गाममे नहि, दरभंगा-राँची आ धनवादमे भेलैन। गामक परिवारो उपैट गेलैन आ सम्पैत सेहो दोसराक हाथमे चलि गेल। पछाइत गाममे मिडिल स्कूल खुजल आ पड़ोसी गाममे हाइ स्कूल आ तीन कोस हटि कौलेज, जइसँ पढ़ाइ-लिखाइमे बढ़ोत्तरी भेल से सभ जातिक बीच एक रंग नइ भेल। कोनोमे शत-प्रतिशत भेल आ कोनोमे दू-चारि प्रतिशत।

पढ़ल-लिखल लोक अपन परिवार लऽ लऽ शहर-बजार दिस भागए लगला। गाम ठामक-ठामे रहि गेल। ओना पढ़ल-लिखल लोकक संख्या जरूर बढ़ल अछि, मुदा जेहेन पढ़ल-लिखल लोकक खगता गाम-समाजकेँ छै तेहेन नहि अछि। जाबे गाममे इंजीनियरक बास नइ हएत ताबे इंजीनक बास गाममे केना हएत। आइक युग जे औद्योगिक युगमे बदैल रहल अछि, माने मशीनीकरण भऽ रहल अछि, तैठाम अखनो बाढ़ि-रौदी–भयंकर नाशक–जीवित अछि! तहिना गाम-गाममे दू-चारि-पाँचटा डॉक्टरो बनि गेला अछि, मुदा की गामक लोककेँ रोग-व्याधि नइ होइ छै जे ओ सभ शहरे-बजार दिस पड़ा रहला अछि..? मन ठमैक

गेल..! की गामे उपैट रहल अछि?

मने-मन केतबो ऐ प्रश्नकेँ पकड़ी मुदा गैंची माछ जकाँ हाथेसँ ससैर जाए। ससरैत-ससरैत बिनु पढ़ल-लिखल–कम पढ़ल-लिखलक संग बिनु पढ़ल-लिखल–लोकपर पहुँच गेल। ओहो सभ तँ एका-एकी भागिये-पड़ा रहल छैथ, तखन गाम? की जाँतक तरका पट्टा जकाँ गाम कीलेमे ठोकाएल रहत, आ जँ गाम कीलेमे ठोकाएल रहत तखन देश केना आगू बढ़ि जाएत। हँ, तखने बढ़ि सकैए जखन गाम छोड़ि देश हुअए।

असगरे लतामक गाछक निच्चाँमे बैसल विचारैत रही, जे पत्नी अँगनेसँ देखि लेलैन। लगमे पहुँच बजली–

“की मनरोग तँ ने भऽ गेल अछि?”

अखन तक गामक पाछू बिरहाएल रही, तँए ने पत्नीक बोल मीठे लागल आ ने तीते लागल आ ने कठाइने लागल। चुप-चाप सुनि लेलौं। मुदा मने-मन, मन बाजल–

“तनरोगे ने मनरोगी बनौने अछि।”



शब्द संख्या : 1680, तिथि : 25 फरवरी 2016

झूठे

सात सालक सुनैना माइक संग ममियौत भाइक मूड़नमे मात्रिक आएल। भरल-पूरल नानाक परिवार सुनैनाक। भरल-पूरल ऐ मानेमे जे नाना-नानी आ मामा-मामीक संग ममियौत भाए-बहिनसँ सम्पन्न परिवार। सभसँ छोट ममियौत भाइक मूड़न काल्हि छिऐ।

एक तँ ओहुना होइते अछि जे गाम-गमेतरीक आबा-जाही कोनो शुभ-अशुभ काजे भेलापर बेसी होइए, मुदा ईहो तँ नहियेँ कहल जाएत जे मात्रिक हौउ कि नैहर ओहुनो आबा-जाही होइते अछि मुदा से नइ, सुनैनाक ममियौत भाइक मूड़न छी तँए शुभे-शुभ सबहक मनोमे छइहे, माने सबहक मन शुभक अछिए।

सुनैनाकेँ अगुऔने सुलक्षणी माएकेँ गोर लागि बाजल–

“माए, यएह छोटकी बेटी–सुनैना छी।”

कहि सुलक्षणी सुनैनाकेँ कहली–

“बुच्ची, नानीकेँ गोड़ लगहुन।”

सात सालक सुनैना चेष्टगर भइये गेल अछि। ओना चेष्टगरो-चेष्टगरमे अन्तर होइए। अन्तर ई होइए जे कन्भेन्टक सात सालक वाला आ सामान्य विद्यायलक वालाक वर्गक श्रेणीमे अन्तर भइये जाइए, मुदा से नइ गामक सामान्य विद्यालयक वाला सुनैना। मुदा एते तँ ऊहि सुनैनाकेँ भइये गेल छै जे नानियोंकेँ चिन्हलक आ माइक बातकेँ सेहो अंगीकार करैत दुनू हाथ जोड़ि गोड़ लगैत बजबो कएल– “नानी, गोड़

लगै छी।”

बिना किछु बजने सुवोधनी नातीनक आँखि-पर-आँखि दइत मुस्किया देली।

काजक दौड़ अछि, काल्हि पोताक मूड़न छिऐन, तँए सुवोधनीक मन कौल्हुका संस्कार-कर्मपर टांगल छैन। टांगलो केना ने रहतैन? परिवारमे सभसँ अनुभवी औरत तँ छेबे करैथ। तहूमे पुतोहु सोल्होअना अपनाकेँ हुकुमदारनियेँ बुझै छैथ, हुकुमदार साउसेकेँ बुझै छथिन। तँए कर्मक सभ भार सुवोधनी अपने ऊपर बुझै छैथ।

दोसर दिन सुनैनाक ममियौत भाइक मूड़न सबेरे सात बजे हएत। ओना औझुका मूड़नक दिन भेने, भरि दिनमे करवनो भऽ सकैए मुदा सात बजे शुभ अछि।

शुभक कारण अछि, समाजक बीच मूड़न सन कर्म छी, जइमे खीर-टिकड़ी समाजक बीच बँटले जाएत, जे वृहत काज भेल। बनाएब-विल्हब सभ अछि। ओना ऐ बातकेँ सुवोधनी नीक जकाँ बुझि रहल छेली जे विचारक दौड़क दुनियाँ आ काजक दौड़क दुनियाँमे केतौ-केतौ तल-विचल भइये जाइ छइ, मुदा तल-विचल नइ हुअए तइले तँ चाँइक राखब जरूरी अछिए। ओ तँ तखने रहत जखन दुनियाँक माने जिनगीक आन काजकेँ सेरिया आगूक काजपर चाँइक राखब। तँए अखन सभ काजो आ विचारोकेँ मनमे तहिया मूड़नक काजमे लगौने छैथ। समयसँ पहिनहि नाई आबि अपन उपस्थिति सुवोधनी लग दर्ज करौलक। नाईक उपस्थिति दर्ज होइते बेटाकेँ पुछैत सुवोधनी बजली–

“बौआ, सात बजेक समय अछि।”

घड़ी देखि सुकान्त जवाब देलकैन–

“पनरह मिनट बाँकी अछि।”

पनरह मिनट सुनि सुवोधनी आजुक अपन काजकेँ हियौलैन तँ

बुझि पड़लैन जे समैयक हिसाबसँ काज समटले अछि। मनमे खुशी भेलैन। पुतोहुकेँ कहलखिन–

“कनियाँ, बच्चा-ले नव वस्त्र सभ तैयार अछि किने?”

पुतोहु जवाब देलकैन–

“हँ।”

पुतोहुक ‘हँ’ सुनिते सुवोधनीक मनमे उठलैन– बच्चाक माथक केश अपने खोंइछ लेब नीक हएत। मुदा लगले मन आगू बढ़ि पुतोहुपर पड़लैन। अधिकार तँ हुनको छैन्हे, तँए एकबेर विचारि लेब जरूरी अछि। पुतोहुकेँ पुछलखिन–

“कनियाँ, बच्चाक माथक केश अहाँ खोंइछ लेब आकि..?”

मुदा जेना पुतोहु पहिनहि निर्णए करि नेने रहैथ कि की; तहिना सासुक मुहसँ खसिते पुतोहु कहलकैन–

“परिवारमे जखन सिरजन छैथे तखन हमरा-ले आगूक नमहर जिनगी ऐछे किने।”

पुतोहुक विचारकेँ बिना किछु काट-कूट केने सुवोधनी बजली–

“समय लगिचा गेल। पहिने नहा लइ छी, ताबे अहाँ डालीक सभ विहीत देखि लियौ जे किछु बाँकी तँ ने रहल।”

कहि सुवोधनी नहाइले चलि गेली।

डालीमे ओरियाएल सभ वस्तु नेने सुलक्षणी नाईकेँ देखबैत बजली–

“हम सभ ते बेसी दिनपर काज भेने बिसैर जाइ छी, मुदा अहाँ ते सालमे केतेको काज करै छी, तँए मिलान करि कऽ देखि लियौ जे किछ छुटल तँ ने।”

सभ वस्तु जोरियाएल देखि नाई मुड़ी डोलबैत सूहकार केलक।

मुदा मनमे एकटा बात उठि गेलइ। उठि ई गेलै जे मूड़नमे माथपर हथियार चलैए, जहिना कोमल केश उतारैक अछि तहिना तँ कोमल माथो छैहे। ओना केश सन वौस आकि कोढ़िला सन तनुक वौस, जेकर सिरमौड़ बनैए, बनबैमे भोथाएल हथियारोसँ तँ नहियेँ बनि सकैए, ओ तँ पानि चढ़ल ओहन लोहक ओजार छी जे अपने पैनी बनल रहैए, तैपर आगिमे तपा पानि सेहो चढ़ाएल रहैए। तँए काजो तँ साधारण नहियेँ अछि, मुदा लगले नाईक मन आगू बढ़ि गेलइ। मूड़नक दोसर-तेसर काज आगूमे आबि आसुतोष देलकै जे कनी-मनी जँ केतौ माथमे लगिये जाएत तँ ओकर दवाइयो तँ हाथेमे ने रहैए। माने ई जे जखने केतौ अस्तुरा घात करत तखने ओही केशसँ ओकरा अड़िया देबै जइसँ खून निकलबे-टा नइ, काटो बन्न भऽ जेतइ। घड़ी-पहरक घाउ हएत, लगले छुटि जाएत...। आगूक काज करैक हौसला बुलन्द भेलै, अपन हथियार नाई हथिया लेलक।

मूड़नक केश कटब शुरू भेल। स्त्रीगण सभ समवेत स्वरमे 'केश उतार गीत' गाबए लगली। गीतिहारिक आगूमे सुनैना मूड़न देखए लागलि। एक दिस नाई एक हाथमे ओजार नेने तैयार, बीचमे बच्चाकेँ बच्चाक माए पकैड़ रखने, दोसर दिस सुवोधनी केश-ले आँचर पसारने...।

अपना जिनगी दिस सुनैना ताकए लगल। हमर माथक केश कहाँ उतरल..?

मुदा छोट जिनगीक छोट बुधि सुनैनाक तँए मनसँ लगले हटए लगलै। मुदा हटैत-हटैत एते तँ भइये गेलै जे गीत गबैत अपन माएकेँ पुछए चाहलक जे हमरा कहाँ मूड़न भेल। ओना, गीत गबैत माए सुनैनाक बातपर धियान नइ बाँटि अपन बच्चाक मूड़नक गीतक संग नाईक ऊपर यत्र-कुत्र बाग-बान जे गीतिहारि सभ छोड़ि रहल छेली, तेम्हर बोहियाएल रहैन...।

मूड़न भेल। सुनैनाक ममियौत भाइक माथक केश उतरल, जे अखन धरि माथमे जनमल छल ओ हेट भेल। मुदा जड़िसँ थोड़े कटल। जड़ि तँ तरमे अछि जे ओहन भूमिक उपज छी जे जिनगीक जीवन्तताक घड़ी छी। माने शरीरक आन कोनो अंग वा वस्तु देखि नहि पड़ैत अछि मुदा नहो आ केशो दुनूकेँ तँ सभ अपना नजरिये देखिते अछि। ओना दुनूमे अन्तर सेहो छइ। अन्तर ई छै जे नह कटै काल जे नहक मृत्यांश काटल जाइए, जइसँ ने खून निकलैए आ ने पीड़ा होइ छइ, मुदा जीवित कटिते खूनो निकलैए आ पीड़ो तँ होइते छइ। भलेँ छोट रहने कम पीड़ा होइ छै मुदा पीड़ा नइ होइ छै से तँ नहियेँ कहल जा सकैए। केशमे से नइ होइए। केश कटै काल केशक पीड़ा, जे जीवित-मृत्यु दुनू अछि, नइ होइ छइ, होइ छै केशक संग माथक अंश कटने।

केश उतरल मुण्ड माथ देखि सुनैना अपन माथक केश दुनू हाथे अजमौलक। माथमे केश रहबे करइ, तहूमे सात बर्खक वालाक बाल आगूमे आँखिपर सेहो झबड़ल रहबे करइ। जइसँ मनमे किए अनबिसवास उठितै जे हमहूँ मुण्ड माथ भऽ गेलौं आकि माथक केशे कटि गेल। ई थोड़े बुझि रहल छलि जे केशक बुट्टी कहियौ कि ओधि, माथक तरमे होइ छइ, ऊपरसँ जँ उतैरे गेल, तँ उतैरते बुट्टीसँ निकैल-निकैल खुटिया लगत आ बढ़ैत-बढ़ैत अपन सघन रूप बनबैत भकरार भऽ मुण्ड-माल बनि जाएत। जे माथक रक्षक हएत। रक्षक ऐ मानेमे जे आगि-पानि, रौद-वसात सभसँ सुरक्षा करैए।

..मुदा अखन तँ मूड़नक आगू-पाछूक काज जुड़ल चलि रहल अछि। जइ बीचमे दोसराक प्रवेश हएबे कठिन अछि। तैबीच सुनैना जँ बुझौ चाहत-माने पुछि कऽ, तँ केकरा एते फुरसत छै जे अपन काज छोड़ि सुनैनाकेँ बुझौत। तहूमे काजक दौड़ छी, जँ बेसी जोड़ करि कऽ माइये आकि मामीए आकि नानीए-सँ पुछौ चाहत तँ जवाबमे मारि छोड़ि किछु भेटियो तँ नहियेँ सकै छइ। भेटबो केना ने करितै, कोनो बात बुझब

आ बातक बेवहारिक काजक दौड़, दुनूमे अन्तर होइ छइ। काजपर काज माने काजक एक अंग दोसर अंग धेने ठाढ़ रहैए, बीचमे बाधा भेने भंग हेबाक सम्भावना बनि जाइ छै जइसँ भंगो भऽ सकैए। मुदा कोनो बात आगूक लेल आकि जिनगीए-ले जँ बुझैक जरूरत अछि तँ पहिनो आकि पछाइतो बुझल जा सकैए। ओना काजक घड़ी जँ काजक प्रक्रियानुसार बुझौल जाए तँ ओ सभसँ बेसी नीक बुझैक होइ छइ।..दूध जकाँ बच्चाक मुण्ड देखि सात बर्खक सुनैना अपने-आपमे विस्मिते होइत गेल।

भोरसँ साँझ धरि सुवोधनी सहित परिवारसँ समाज धरि तेना काजमे ओझराएल रहल जे भोर साँझ दिस केना बढ़ल, से कियो बुझबे ने केलैन। एक तँ बैशाख मासक खढ़चट्टा समैयक मुहूर्त, मूड़नक दिन, तैपर भिनसरसँ पूर्बाक झड़क मनकेँ झड़कबैत रहल, ओना मास-मासक पूर्बा हवाक अलग-अलग रूपो अछि आ चालियो अछि, तहिना पछबाक सेहो छइ। मुदा से नइ अखन बैशाख मासक भिनसुरका उखड़ाहाक उखड़ल पुर्बा–माने पूर्बा हवा जहिना देहक ऊपरी भागकेँ सिरसिरबैए तहिना भीतरी भागकेँ झ़रकेबो करैए। मुदा पछबाक विपरीत गुण छइ। ओ ई छै पछिया देहक ऊपरी भागकेँ झड़कबैए आ भीतरी भागकेँ सिहरबैए। संस्कार काजक दौड़ संस्कारी मन किए पूर्बाक सिहरन आकि झड़कन बुझत। विधिवत काज चलैत रहल, काजक संग कर्ता चलैत रहत, किए दिनक सुर्ज दिस देखैत जे केते बेर भेल।

बारह बजेक बैशाखक बौखलाएल सुर्ज माथपर आबि ठाढ़ भऽ गेला। बच्चाक केश उतारला आ किरिया-कर्म भेला पछाइते ने खीरो-टिकरी बनबो करत आ बिलहलो जाएत। एक दिस बैशाखक कड़क-झड़क रौद तैपर चूल्हिक आगिक झड़क, मुदा तैयो मूड़नक छाँहमे खुशीए-खुशी।

पूर्बा हवा खसैत-खसैत बन्न भेल। माने सोल्हन्नी खसि पड़ल। ने पछबाक आगमन आ ने पूर्बाक सिहकी वा लहकी, माथपर ठाढ़ सुर्ज

अपन सोल्हो–कलासँ तैयार, मुदा काजक विहीत काज, कर्ताकेँ सिरचढ़ काज, तँए समय-कुसमैयक ठेकान किए किनको रहितैन।

पच्छिम-मुहेँ सुर्ज झुकला, पछबाक आगमन सेहो भेल। ओना ओ बेठेकान अछि, आगमन भैयो सकैए, नहियोँ भऽ सकैए आ भिनसुरका उरखड़ाहाक पूर्बो चलैत रहि सकैए। सेहो बेसियाइयो सकैए आ कमियोँ सकैए। तहिना पछबोक अछि। संग-संग ईहो अछि जे भिनसुरको उरखड़ाहामे पछिया चलि सकैए, कमो गतिसँ चलि सकैए, मध्यमो गतिसँ चलि सकैए आ तेजो गतिसँ चलि सकैए। ओना भिनसुरका तेज गतिक पछिया जँ आगू-मुहेँ बढ़ैत गेल माने तेज होइत गेल तँ दुपहर अबैत-अबैत बिकराल रूप पकैड़ लइए आ बिर्डो-विहाड़िक रूप धारण सेहो कऽ लइए। जे पूर्बाक अपेक्षा पछबामे बेसी होइ छइ। जहिना दिन भरिक काज सम्हारि सुर्ज डुमला तहिना सुवोधनी सहित परिवारो काजसँ विश्राम लेलैन। दिनक पाँचम पहरक आधासँ बेसी समय निकैल गेल। रसे-रसे अन्हार पसरए लगल।

बीच आँगनमे बिछान बिछा सुवोधनी अराम करैक विचार केलैन। पोखरिक हिलकोरक पानि जहिना धीरे-धीरे धरियाइत धीर भऽ जाइए, तहिना सुवोधनीक मन सेहो धीरसँ थीर भइये गेल रहैन...।

सुलक्षणीकेँ कहलखिन–

“बुच्ची, बड़का ओछाइन अँगनेमे बिछाबह आ सब-जन दिनक काजक नीक-बेजाइक विचार करह जइसँ ऐगला जे पीढ़ी अछि ओहो, देखबो केलक आ बुझबो करत आ सीखबो करत।”

ओना परिवारक भनसियासँ लऽ कऽ जेहो सभ धी-बेटी परिवारमे आएल छेली- सभ निचेन भऽ गेल छेली। भानसोक जरूरत नहियेँ छेलैन, दिनुके उगड़ल वस्तु छेलैन।

ओछाइन ओछा सुलक्षणी माइक आगूमे सिरमा दैत बाजल–

“माए, तूँ अराम कर, एक हाथ सेवा कऽ दइ छियौ।”

बेटीक बात सुनि सुवोधनी बजली– “दिन भरि खटला पछाइत सभ ने थाकि गेल छी, तैपर जँ तूँ आरो खटबह से नीक हएत?”

माइक विचारकेँ उत्तर नहि दैत सुलक्षणी बाजल– “काल्हि भोरे तँ चलिये जाएब, तैबीच फेर समय भेटत। सुनैनाकेँ परसूसँ परीक्षा छिऐ।”

बेटीपर सँ नजैर हटा सुवोधनी सुनैनाकेँ पुछलखिन– “नातीन, कोन किलाशमे पढ़ै छी?”

सुनैना बाजल– “तीनमे।”

बच्चाकेँ जहिना अपन हँसी देखा सिखौलो जाइए आ हँसौलो, तहिना सुवोधनीक मनमे रहैन। तँए ‘तीन’ सुनि मुस्की दैत बजली–

“तीन-मे कि तेरह-मे।”

नानीक बात सात बर्खक सुनैना किए बुझैत, ओ कि कोनो दस-दुआरि देवी दुर्गाक सप्तमी दिनक डिम्ह देब बुझैत। मुदा नानीक मुस्कीक संग मुस्कियाइत एते तँ बजबे कएल–

“एकहारा जखन दुहारा मे एक संग तीन लगि जाइए तखन तेरह भऽ जाइए।”

सुनैनाक बोल देखि अपन लोल दोसर दिस घुमबैत सुवोधनी बजली– “नातीन, जहिना बेटा तहिना बेटी, तँए बेटी केना बेटा बनि दुनियाँ देखत–यएह भेलौ तोहर जिनगीक परीक्षा।”

नानीक बात सात बर्खक सुनैना धियानसँ सुनलक। मुदा धियानो तँ ज्ञानेक बीच होइए, तँए सुनैनाक मनमे नानीक विचार नहि आबि आँखिक सोझ देखल पुरुखक संग पाछू-पाछू नारी झलकलै।

मुस्की दैत बाजल– “झूठे-झूठे।”

ओना सुलक्षणी सेहो ओत्तै बैसल, तैसंग परिवारक आनो खरहू-

मरहू आ अपनो परिवारक संग चेष्टगर-सियान औरत सभ सेहो बैसल।

सुलक्षणी ऐ ताकमे जे माए अपन बुढ़पनक विचार नेनपन वा बालपन नातीनकेँ केना बुझा पबै छैथ, आ बालपन मन सुनैनाक केना बुझि पबैए, से देखी। तँए चुपचाप नानी-नातीनक बीचक वार्तालापकेँ सुनैत।

आन-आन स्त्रीगण ऐ दुआरे चुप जे जखन सिरजन बजै छैथ, तखन बीचमे बाजब नीक नहि। मुदा सुनैनाक 'झूठे' सुनि सुवोधनीक मनमे उठलैन,

नातीनो कोनो झूठ नइ बाजल जे आँखिसँ देखैए, कानसँ सुनैए, तही हिसाबसँ बाजल। तँए मनमे मिसियो भरि मतहानि नहि जे एना किए बाजल। अपन मन गवाही दैत रहैन जे यएह बच्चा जखन बिआह भेला पछाइत सासुर जाएत, एक परिवारसँ दोसर परिवार देखत, बेटीसँ पुतोहुक रूप बदलतै, जगह-परिवार बदलने जिनगीक बहुत किछु बदलतै। जैठाम वैचारिक संघर्षक संग बेवहारिक रूपमे सेहो टकराउ होइ छइ। माने ई जे एके वस्तुकेँ परिवारक आर्थिक स्थितिनुसार ओकर विन्यास बनै छै से किए अखन सात बर्खक सुनैनाक मनमे औत। ओ किआँने गेल जे वैधव्य जिनगी नारीक केहेन भारी अभिशाप छी..!
एकेबेर जेना दोरस हवा चलल..!

भरि दिनक थाकल-ठेहियाएल सभ, तँए निचेनसँ सुतबेकेँ नीक बुझि उठि गेली। उठैत-उठैत सुवोधनी सुनैनाकेँ कहलखिन–

"नातीन, झूठे सतो होइए आ सतो झूठ भऽ जाइए।"



शब्द संख्या : 1969, तिथि : 29 फरवरी 2016

लाही

जागे भाय जगरनाथसँ एला। सामाजिक भैयारी अछि नइ कि दियाद छिया आकि जाति। मुदा घर सटले कनी हटल अछि। छी एके टोलमे मुदा बीचमे तीन-चारि गोरेक घर छइ।

एक पनरहियासँ जागे भाय बाहर छला तँए गामोक हाल-चाल कहब आ हुनकोसँ यात्राक हाल-चाल बुझि लेब। ओना अपनो बाड़ीक काजक हलतलबी रहए, मुदा किछु छी तैयो समाजेमे बास करै छी किने। जखने समाजक वासी अपनाकेँ बुझब तखने समाजक दायित्व तँ निमाहए पड़त। जखने समाजक दायित्वकेँ बुझब तखने बेकतीगत परिवारसँ ओकरा ऊपर देखए पड़त, जँ से नइ देखब तखन समाज केना बुझब आ समाज केना समाज बुझता। तँए अपन काजकेँ कनी ठेलियबैत माने एक नम्बरमे जागे भायसँ भेँट करब आ दू नम्बरमे अपन काजकेँ करब। मनो मानि गेल। ओना मनमे हुअए जे एक दिनक कोन बात, जे एक क्षणो-पलो हूसने लोक बहुत हूसि जाइए, मुदा ओ तँ जगह-जगहक बात भेल। ऐठाम से नइ अछि, बैशाखा सजमैन-लत्तीक करीब पच्चीसटा जड़ि थरियबैक अछि। चाह पीब जागे भाय ऐठाम विदा भेलौं। टोलेक बात, जहिना गंजी-लूँगी पहिरने रही, देहपर तौनी रहए, तहिना विदा भेलौं। किए पत्नीए-केँ आकि टोले-पड़ोसेक लोककेँ होइतैन- केतौ अनतए जाइ छी, जे टोको-टाक करितैथ।

करीब आठ बजे फागुन मासक भिनसुरका समय। जागे भाय,

घरसँ हटल बीघा पाँचेपर दस धूर धनियाँ-खेती केने छैथ। ओना कनी पचता छैन्हे मुदा धनियाँक मास तँ छीहे। पचताक कारण भेल रहैन जे कैतकी कोबी काटि धनियाँक खेती केने छला। ओना अगता धनियाँ सभ रंगि रहल अछि, केतौ-केतौ कटियो रहल अछि। मुदा से नइ, जागे भाइक धनियाँ अखन अन्तिम फूल पकड़ने छैन। हमरासँ पहिने जागे भाय धनियाँ-खेती देखि आएल छला। जेना मन टँगले रहल होइन, माने धनियाँ खेती देखैले, तहिना भोरे सुति उठि धनियेँ खेत देखैले चलि गेला।

अँगनाक मुँहथैरपर ठाढ़ भेल जागे भाय, पत्नीकेँ कहै छेलखिन–

“धनक छेजानैत भऽ गेल।”

ओना कहै छेलखिन पत्नीए-केँ मुदा फुटा-फुटा जे नइ बजै छला तइसँ पत्नी अवाक भेल आगूमे ठाढ़, मुदा हँ-हूँ किछु ने बजैत। बेर-बेर जागे भाय बजै छला आ पत्नी आँगनमे ठाढ़ बकर-बकर मुँह तकै छेलैन। हम पहुँचलौं मुदा जागे भाय नइ देखलैन। देखबो केना करितैथ। आँगन दिस मुँह घुमौने छला। दरबज्जा दिस मुँह घुमल रहितैन तखन ने जखने हमर नजैर हुनका पकड़लक तहिना हुनको नजैर हमरा पकड़ैत, से तँ भेल नहि। दरबज्जापर ठाढ़ रही मुदा पत्नीकेँ बेर-बेर कहथिन–

“धनक छेजानैत भऽ गेल!”

बोलीक सुआदसँ बुझि पड़ल जे जागे भाइक मन कलहैन्त रहलैन अछि। मुदा फेर हुअए जे भरिसक जगरनाथ पुरीसँ एला अछि, गाड़ी-ताड़ीमे मोटरी ने कियो चोरा लेलकैन। जे बात पत्नीकेँ कहै छथिन। कहबो तँ उचिते ने हएत जे ओहुना समाजमे जगरनथिया परसाद बिलहता, तैसंग समुद्र सेहो देखने हेता, समुद्री सनेस- बड़का-छोटका शंख, माने आवाज करैबलासँ लऽ कऽ डोरामे गाँथल मलो नेने हेता, भरिसक सहए ने गाड़ीमे कियो चोरा लेलकैन। पाछूएसँ कहलयैन–

“भाय साहैब, जगरनाथ गेल छेलौं! समुद्रमे ढूसि लेलौं किने?”

अनचोकमे जहिना विद्यार्थीक इण्टरभ्यूमे पूछल प्रश्नक उत्तर रस्तेमे हेरा जाइ छै तहिना जगरनाथ भायकेँ भेलैन। अँगनाक सभ गप माने जे पत्नीकेँ कहै छेलखिन, हेरा गेलैन। मुदा जवाब देलैन–

“रघू, समुद्रमे ढूसि लेब असान अछि!”

पुछलयैन–

“तखन जे जगरनथिया सभ बजै छैथ ओ झूठे बजै छैथ।”

जगरनाथ भाय बजला–

“झूठ तँ नै बजै छैथ मुदा घुमा कऽ जरूर बजै छैथ।”

अखन तक ई बात नइ बुझै छेलौं, जे झूठ-सत बात-विचारक बीच घुमौनो अछि तँए जिज्ञासा भेल। जिज्ञासा तँ भेल मुदा नवका जिज्ञासा भेने पहिने कुशल-छेमक चर्च करबे ने केलौं आ मुहसँ बजा गेल–

“की घुमौन अछि, भाय?”

ओना कुशल-छेम जिनगीक ओ घड़ी छी जे भेला पछाइत, दू भेँटक बीचक जे खाधि अछि ओ पाटि दइए, मुदा मनमे ई रहबे करए जे जखन जानियेँ कऽ आएल छी कुशले-समाचार बुझह, तखन धड़फड़ीए कोन अछि। मुदा जँ कहीं बीचमे जिज्ञासेक प्रश्न मनसँ ससैर जाएत, तखन तँ टटका नोकसान हएत।

मुस्की दैत जगरनाथ भाय बजला–

“समुद्री जुआरमे ढूसि लइए, ई बात सब सते बजै छैथ मुदा मुँह-गरे नहि पीठ-गरे। ओ ढूसि थोड़े भेल। हँ, एते तँ होइते अछि जुआरक पानि उठौने-उठौने थोड़े दूर धैरपर लऽ गेल आ अपने पाछू उनैट अहाँकेँ धैरपर बैसा पाछू ससैर गेल।”

पुछलयैन–

“की कहलिऐ घुमौन?”

‘घुमौन’ सुनि जागे भाइक मुँहक हँसी फुटि कऽ निकैल गेलैन। हँसैत बजला–

“घुमौन सब कथुमे अछि। काजोमे अछि, चालियोमे अछि आ बातो-विचारमे अछि।”

एक तँ ओहिना बातक घुमौन नइ बुझै छेलौं, तैपर तेते रास विषय जागे भाय रखि देलैन जे मने उग-डूम करए लगल। मुदा गपो करैक तँ क्रम होइए। जे क्रम जेना शुरूसँ सोझराएल रहत ओ क्रम ओते सुहरदे आगूक क्रमकेँ पकड़ैत रहत आ नहि जँ शुरूहेक गपमे कोनो गीरह-गाँठ पड़ि गेल तँ आगूक क्रमो ओहिना गिरहाइत-गँठियाइत चलैए। तँए सोचलौं जे पहिने पुछिऐन जे कखन गाम पएर देलैन? ओहो अखन टटके गाम आएल छैथ तँए कोनो आन काजक धड़फड़ियो नहियेँ हेतैन आ तहिना अपनो तँ जानियेँ कऽ आएले छी कुशले-छेम करए। पछाइत घुमौनक बात पुछबैन। पुछैयोक बुझैयोक तँ अधिकार अछिए। कहुना छैथ तँ पढ़लो-लिखल बेसी छैथ, उमेरो बेसी छैन आ हमरासँ बेसी नमहर परिवारोक गारजनी करिते छैथ। पुछलयैन–

“भाय, गाम कखन पहुँचलौं, जतरा नीक रहल किने?”

ओना मनमे ईहो होइत रहए जे पहिने टटके सुनलाहा गप पुछिऐन जे धनक की छिजानैत भऽ गेल। मुदा ओहो तहिया कऽ मनमे रखि लेलौं जे जँ समय बँचल रहत तँ पछाइत पुछि लेबैन। चाहे बिच्चेमे केम्हरोसँ केम्हरो पुछि लेबैन। मुदा सगुन जेना बनले रहए तहिना भौजी एकटा जगरनथिया बेंत, एकटा शंखक माला आ मकैया लड्डु नेने पहुँच हाथमे धड़ा देलैन।

एकटा मकैया लड्डू मुँहमे देलिऐ, भेटल परसाद जँ सभटा अपने खा लेब तखन परिवारमे बाल-बच्चाकेँ की देब, यएह सोचि एकटा दाना खेलौं आ बाँकी गमछाक खूटमे बन्हए लगलौं कि मालापर नजैर गेल। नजैर

जाइते मनमे उठल- ई तँ छी आवाजे करैबला शंखक बच्चा जे बच्चेमे मरि गेल, सएह माला छी! फेर भेल जे नइ ई बड़का बजैबला शंखक बच्चा नइ छी, भरिसक मले बनबैबला शंख छी।

..फेर भेल जे जखन दुनू दू काजक भेल तखन वंश केना एक हेतै आकि नाऊँए किए एक हेतइ। मुदा जागे भायसँ गप-सप्प करैक रहए तँए अपन मनक बातकेँ दबैत आगूमे ठाढ़ भेल बेंतपर धियान गेल। एकरा सिरा-आगू क चारमे खोंसि देब। बेर-बेगरतामे काज हएत।

जाबे तक अपन सनेस सेरियेलौं ताबे तक जागे भाय सेहो मुँह बन्न केने रहला, कि सोचि केने रहला से तँ ओ जानैथ मुदा अपना बुझि पड़ल जे परसाद सन वौसकेँ उपयोगमे केतौ धोपचटमे गड़बड़ ने भऽ जाइ, तँए। जागे भाय बजला–

"ओना गाड़ी कनी लेट रहै तँए दू घण्टा लेटसँ गाम पहुँचलौं मुदा तैयो बारह बजे रातिसँ पहिनहि पहुँच गेल छेलौं। सकरीए-सँ पत्नीकेँ फोनसँ कहि देने छेलिऐन, ओहो धियो-पुतोकेँ जगौने रहली आ भानसो पछुआ कऽ केली, तँए टटके भोजनो केलौं।"

बारह बजेक करीब पहुँचबे केलाह। हाथ-पएर धोइमे सेहो समय लगले हेतैन। तहूमे पत्नी ओसारपर खाए देने हेतैन कि नहि। जगरनथिया यात्रीकेँ पूजा आ भोज केलाक पछाइत छूत छुटै छइ। जाबे तक भोज नइ केने रहल ताबे तक ओ अछूत समाजेमे नइ अपन परिवारोमे भेल रहैए। तहू बुझारतमे समय लगले हेतैन, कहुना-कहुना तँ रौतुका मसिम रहने केतबो धड़फड़ाएल हेता तैयो डेढ़-दू घण्टा समय तइ सभमे लगिये गेल हेतैन। तहूमे गाड़ी-सवारीक जतरा, परो-पैखानामे बेसी समय लगले हेतैन। तखन केना टटके भोजन केलैन? दिन बदैल गेल, तारीख बदैल गेल मुदा भेटलैन टटके! बर-बेसी तँ गरमा-गरम भऽ सकैए।

फेर मनमे एकाएक भेल जे अनेरे झूठ-फूसक फेरमे समय

नोकसान करै छी। तैबीच भौजी चाह नेने पहुँचली। पानिक खगता रहबे ने करए, किएक तँ ओहो देखि नेने छेली जे परसाद खेलौं नइ मोटरी बान्हि लेलौं। दुनू गोरे-माने हमरो ओ जागेओ भाइक हाथमे चाह पकड़ौलैन। एक चुस्की चाह लप-दे मारि नेने छेलौं मुदा जागे भाय पछुआएले छला। तैबीच मे जेना हुनकर मन पत्नीपर कड़ैक गेलैन। कड़ैक ई गेलैन जे बजै कालमे अपनाकेँ नीक किसानक सिखौल बेटी कहै छैथ मुदा...। नीक किसान ओ भेला जे खेतीमे अधिक-सँ-अधिक रंगक वौस उपजा अपन जिनगीक रंग पकड़ने रहै छैथ। मुदा धनक छिजानैत भऽ गेल आ बुझियो ने पेली..!

ओना जागे भाइक मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे पत्नीपर बेसी मन कड़ुआएल छैन। मुदा हमरा दुआरे बकार बन्न केने छैथ। बीचमे बैसल रही, दुनू बेकता-बेकतीक बीचक बात छी, किछु टोकबो नीक नहि। मुदा लगले मन गबाही देलक–बेकता-बेकतीक माने भेल परिवार। समाजक बीच परिवार अछि, मुदा परिवारोक अपन सीमा छै किने। जेकर अतिक्रमण नइ हेबा चाही। मुदा जहिना परिवारक घरक ओलतीक पानि धरियाइत गामक बहैत धारामे मीलि जाइए तहिना गाममे आएल बाढ़ि वा अधिक बर्खाक पानि सेहो ने उनैट-उनैट परिवारक ओलती लग पहुँच जाइए। मुदा से अछि सूत्रनुमा। माने ई जे समाजक बीच परिवार-परिवारमे जखन बेवहारिक जिनगी समेट चलैए तखन काजक संग-संग विचारो सटैत चलैए। जेतै एक-दोसर परिवारमे विचारक सटाव होइए तेतै एक परिवारक सम्बन्ध दोसरसँ सघन होइत जाइए। ऐ मानेमे जागे भायसँ सम्बन्ध अछिए...।

दोहरबैत पुछलयैन– "भाय, जतरा केहेन रहल?"

जहिना पुछलयैन तहिना ओ तर-दे जवाब देलैन–

"बाहरक जतरा तँ नीके रहल मुदा घरेक जतरा भंगैठ गेल।"

जागे भाइक बात सुनि मन अग-दिगमे पड़ि गेल। अग-दिग ई जे पनरह दिनक जतरा नीक रहलैन आ बारह बजे रातिमे एबे केलाह अछि, एतबे कालमे की भंगैठ गेलैन? नइ रहल गेल, पुछलयैन–

"राइतमे नीन ते कचोटे रहल हएत, भरिसक वएह मन भकुऔने अछि की?"

चेहरासँ बुझि पड़ल जे हमर बात जागे भायकेँ नीक नइ लगलैन। मुदा बजता किछु तखने ने बुझब। जेना मनक आगिक ताउ जागेओ भायकेँ निकलैले तनफन करैत रहैन जे निकैल नइ पाबि रहल छेलैन। ओना मनमे ईहो उठल हेतैन जे अनेरे केकरो लग कानियेँ कऽ की हएत, मुदा बिना कननौं तँ कियो नहियेँ बुझत जे मन पीड़ित किए अछि।

बजला–

"रघू, लछमी-पात्र जहिना मनुक्ख होइए तहिना खेतो-पथार होइए। मालो-जाल तहिना होइए आ गाछो-बिरीछ तहिना। मुदा जँ ओकर पूजा नइ होइए, तँ सएह ने भेल ओकर कुभेला। पूजा भेल कोनो काजक वस्तुक उचित ढंगसँ उचित स्थानपर उपयोग, आ कुभेला भेल एकर विपरीत। जखने लछमी-पातक कुभेला हएत तखने लछमी रूसि रहती, बगैद जेती, घरसँ पड़ा जेती।"

बाजि जागे भाय जेना अपन विचारकेँ बिलमौलैन। जइसँ मुँह बन्न भेलैन। मुदा एके झोंकमे तेते बाजि गेल छला जे सुनबे-टा केलौं, बुझलौं नहि। माने ई जे कोनो बात कियो सुनबे-टा करैए आ कियो जिनगी बुझि जिनगीमे उतारितो अछि। मुदा से नइ, हम ऐ दुआरे सुनबे-टा केलौं जे जागे भाइक विचारक झोंकीसँ बुझि पड़ल जे टटके जगरनाथसँ एला अछि, भरिसक जगरनाथक पण्डा सबहक जे झोंक देखने हेथिन तही झोंकमे बजला अछि। ओना अनसुनियोँ कएल जा सकै छल मुदा छी तँ असगरे आगूमे बैसल। जँ कहीं गोटे-बेर बिच्चेमे पुछि दैथ जे की

बुझलहक, तइले जँ सुनियोँ कऽ नइ राखब तखन मुह उठा जवाब की देबैन। तइले सुनब तँ ऐछे, तँए सुनैत रहलौं।

जागे भाइक जिज्ञासा जेना हमरापर पड़लैन, तहिना बुझि पड़ल। माने ई जे जखन धारमे पानि फुलाइ छै तखन खेतबला सभ अपन-अपन खेत पटबैले नहर चीर-चीर लऽ जाइए तहिना भरिसक जागेओ भायकेँ भेलैन। मनमे भेल जे गपे-सप्प करए ने आएल छी, तहीमे कुशलो-छेम कऽ लेब, जतरोक वृतान्त सुनि लेब आ गाम-घरक कुशलो-छेम कऽ लेब। ई तँ नइ जे ब्रह्मस्थानक भागवत कथा जकाँ सोल्होअना सुनैयेटा-ले आएल छी। गप-सप्प तँ ओ प्रक्रिया छी जइमे कोनो गम्भीर रहस्य हौउ आकि गम्भीर क्रिया, ओकरा वैचारिक रूपमे जानब रहैए। मनमे भेल से नइ तँ पहिने यएह बुझि ली जे की घरक जतरा भङैठ गेलैन। पुछलयैन-

"घरक जतरा की भङैठ गेल?"

हमर बात सुनि जागे भाय मरमान्त भऽ गेला। मनमान्त ई जे जिनगीक एकटा अभावक पूर्ति साल भरिक लेल होइत ओ नष्ट भऽ गेल। बजला–

"रघू, तोरा संगे सब गप परिवारसँ लऽ कऽ दुनियाँ-दारी धरिक होइए तँए बजैमे कोनो संकोच नहियेँ अछि।"

जहिना दुहैसँ पूर्ब गाए चुकैर-चुकैर दुहैले कहैए तहिना जगरनाथ भायकेँ मेघौन आँखिमे बुझि पड़ल। टोकारा भरैत बजलौं–

"भाय साहैब, अपना सबहक परिवार कि कोनो आइये ऐ गाममे बसल अछि। इतिहास बजै आ नै बजै मुदा एकठाम पुस-पुसतानिसँ भाए-भैयारी बनि अबैत रहलौं अछि। सबहक जिनगीक सभ बात किए जे बापो-दादाक केलहा बात सब सबकेँ जनिते छी, तखन धखाइक कोन गप अछि।"

हमर बात जेना जागे भायकेँ पाछूसँ रेड़लकैन तहिना क्रनदन

स्वरमे बजला–

"रघू, जहिना हमर परिवार अछि तहिना तोरो परिवार छह। दैनंदिनक भोजनक जरूरी वौस धनियोँ छी। मसालाक रूपमे सभ जनै छइ, ओ अँचार, चटनी इत्यादि रूपमे भोज्य विन्यास सेहो छी।"

'अँचार-चटनी' सुनि मन चटपटाए लगल, जइसँ बिच्चेमे बजा गेल–

"हँ, से ते छीहे। फड़-फूलक कोन बात जे डाँटो-पातक रस मनकेँ मोहि लइ छइ।"

ओना अपन मन चसगर भऽ गेल रहए मुदा जागे भाय गम्भीर भऽ गेला। गम्भीर होइत बजला–

"रघू, साल भरिमे आठ किलो धनियाँक खगता परिवारमे रहैए। जे दस धूर खेतमे कऽ लइ छी, आठ किलो सबा आठ किलो गोटे-बेर नबो किलो भऽ जाइए।"

बिच्चेमे बजा गेल–

"एकरा के काटत। कोनो चोराएल गप अछि। मासे-मास अधा किलो कीनै छी तैयो मासक उनाड़ीमे दू-चारि दिन हताले रहैए।"

हमर बात जेना जागे भायकेँ नीक लगलैन। बजला–

"रघू, आठ किलो धनियाँक दाम तँ चारिये साए रुपैआ भेल, मुदा से नइ किसानी जिनगीक चूक भेल किने जे लाही खा गेल आ अपने मुँह तकैत रहि गेलौं!"

जागे भाइक विचारसँ बुझि पड़ल जे अपन पनचैती अपने कऽ रहला अछि आ तामस पत्नीपर छैन। मुदा ओहो लगमे नहियेँ छैन तँए सूहकारी दैत कहलयैन–

"जगरनाथ जाइसँ पहिने नीक जकाँ देखि नइ नेने छेलिऐ?"

अपसोच करैत जागे भाय बजला–

“देखि नेने छेलिऐ, धनियाँक फूल कलियाएले छल, गोटे-गोटेक मुँह खुजल छेलइ, मुदा तहिया लाहीक केतौ दरस नहि छेलइ। एक पनरहिया बाहर रहलौं, तही बीच लाहीक प्रकोप भेल आ खेतक फूल चाटि लेलक!”

कहलयैन– “पहिने तँ उपाय कएल जा सकै छल?”

बजला–

“हँ, कएल जा सकै छल, मुदा शुद्ध वस्तुकेँ जानि कऽ दूषित करब नीक नहि बुझि, नइ केलौं।”

ओना गप-सप्पक क्रममे बुझि पड़ए लगल जे पहिलुक जे धधड़ा मनमे छेलैन ओ छाउर जकाँ बनि रहल छैन, तँए किए ने दोसर दिस मन घुमा दिऐन जे जेहो छाउर मनमे छैन ओहो राख बनि उधिया जेतैन। पाशा बदलैत कहलयैन–

“भाय, एकटा बात नइ बुझि पेलौं जे लछमी-पात्र की कहलिऐ?”

मंच परक कलाकार जहिना एक पार्टसँ दोसर पार्ट खेलए लगैए तैबीच मेक-अपमे जेते समय लगै छै तहिना जागे भाय माइंड मेक-अप करैत बजला–

“अखन फागुन मासक मध्य छी, बाधसँ रब्बी-राइ कटि कऽ घर चलि आएल, बाधमे मात्र खेत-टा रहि गेल अछि। तँए अखन ओ मात्र खेत छी। मुदा जखन ओकर गर्भमे फसिलक अंकुरन होइए तहियासँ ओ गर्भ-पात्र बनैत धीरे-धीरे लछमी-पात्र बनि अन्न, फल, फूल, तीमन, तरकारीक बरसा करए लगैए। तहिना मनुक्खो अछि मालो-जाल अछि आ गाछो-बिरीछ।”

ओना सभ बात नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं, तहूमे किछु उदाहरणेटा देलैन, मुदा विचारमे तेना फँसि बोहिया गेलौं जे विचारधारेमे भँसिया

गेलौं... ।

कहलयैन–

“हँ से ते ठीके ।”

जागेओ भाय जेना पाशा बदललैन। तैबीच भौजी आबि बजली–

“जिनका सभ-ले परसाद अनने छी ओ टटके पहुँचा देबैन आकि बाइस-तेबाइस कऽ देबैन। जँ बैजनाथक पेड़ा रहैत तँ किछ दिन बसियो टटके रहैत।”

टोकारा दैत जागे भाय पत्नी दिस इशारा करैत बजला–

“छैथ तँ आँखिमे रखैवाली मुदा रहैक लूरियो रहतैन तखन ने, सेहो पुरुखे देतैन।”



शब्द संख्या : 2335, तिथि : 3 मार्च 2016

परतीहा खढ़

परतीहा खढ़क माने दू ढंगसँ लेल जाइए, एक- जे परतीमे उपजैए आ दोसर- जे परती बनबैए। तैसंग ईहो तँ कहले जाएत जे जे खढ़ परतीमे बास करैए, तँए तीनूकेँ तीन नजरिये देखए पड़ै छइ। पहिल भेल जे खेतमे उपैज कऽ खेतक उपज शक्तिकेँ क्षीण करैत गहींर-बसैत धरतीक ऊपरमे लतरबो-चतरबो करैए आ फुलेबो-फड़बो करैए, जेना राड़ी-डबहारी। मुदा बीज रूपमे फड़ रहितो, आन बीज जकाँ धरतीमे नइ समा अकासमे उड़बो करैए आ दोसर-तेसर जगहो पकैड़ उपजैए। उपजाउ भूमिकेँ परती बनबैक शक्ति ओकरो छइ। ओना गाछी-बिरछीमे सेहो अछि, आमक गाछीमे गाछ रहितो बीच-बीचक जमीनमे शक्ति रहिते छै जे दोसरो-तेसरो गाछ-पातकेँ बसबैए, मुदा बाँसमे से नइ छइ, ओ अपना सीमामे दोसरकेँ बास नहि हुअ दइ छै...।

दोसर होइए जे परतीमे बास करैए। ओना खढ़ आ घास दुनूकेँ एके रूपमे मानल जाइए, मुदा दुनूमे दूरी तँ अछिए। घास भेल पशु आहार मुदा खढ़ से नइ भेल। ओना, घासोकेँ खढ़ बुझल जाइए आ खढ़ोकेँ घास। जेना दुभि, जे भेल तँ घासे मुदा कोनो जजात वा फसिलसँ ओकरा खढ़ बुझि हटा देल जाइए। ओना, जहिना गाछी-बिरछीमे बाँसक चालि छै जे अपन सीमामे दोसराक बास नइ हुअ देब, तहिना खढ़मे राड़ियो-डबहारियोकेँ छइ। ओहो ने दुभिकेँ आकि मोथाकेँ आकि सामीकेँ अपना सीमा-सरहदमे देखए चाहैए आ ने बास हुअ दइ छइ। तँए कि मोथा आकि दुभि बड़ बेसी अपरवैतनी अछि सेहो नहियेँ कहल जाएत। मोथो

मोथे छी...।

एक दिन किसानसँ अराड़ि ठानि मोथा बाजल–

"धरती हमर छी, तोरा बुते हम नइ उपटब।"

ओना किसानकेँ मोथाक बात अनसोहाँत लगलैन, मुदा विवेकी भेने धीरज रखि चाइलेंज स्वीकार केलैन। चौमासे-मे दुनूक भीड़ान भेल। अल्लू खेत, हल्लुक माटि, एक-एकटा मोथाक बीच्ची, माने मोथाक बीआ तँ नहि- किएक तँ मोथामे फुलो-फड़ होइ छइ, मे सत-सतटा गाछ अँकुरि अल्लूक फसिलमे ऊपर आबि खेतकेँ छाड़ि फसिलक बिच्चीक वृद्धि रोकि देलक, माने प्रभावित कऽ देलक।

ओना बुझले-गमले किसानकेँ तँए निराशाक प्रश्ने नहि, किसान किए हारि मानितैथ। जखन राड़ियो-डबहारी अपना चास-बाससँ भगाइये दइ छइ।

माघ मास बीत गेल। फागुनक आवाहन भेल। लाल भाय तेसर तोरक जै-घास काटए खेत पहुँचला। ओना लाल भाय सम्पन्न किसान परिवारक, मवेशी पालक किसान छैथ। पिता छेहा खेतिहर किसान रहथिन।

बीस-पचीस बीघा खेत भैयारी मिला लाल भायकेँ अखनो छैन्हे। मुदा तीन भाँइक भैयारीमे लाल भाय पाँचटा गाइयक मूल्य आ चारा-ले एक बीघा खेत लऽ दुनू भाँइकेँ सभ खेत सुमझा देने छथिन। ओहू दुनू भाँइमे एक भाँइ नोकरिहरे भऽ गेलैन, खाली दोसर भाए खेतीहर किसान छैन।

तेसर तोरक जै-घास देखि लाल भाइक मन हीन-हिना गेलैन। हीन-हिनेलैन ई जे तीन तोर घासक पैदावार अछि। ओना, पहिल तोरक अपेक्षा दोसर तोर सघन होइए आ तेसर तोरमे पुनः कमि पहिल तोरक अनुकूल भऽ जाइए। मुदा तैठाम तँ अधोसँ कम घास बुझि पड़ैए! एना

किए भेल?..खेतक आड़िपर बैस लाल भाय गौर करए लगला जे फसल कमजोर किए अछि..?

अखन तक जेतेक खढ़केँ लाल भाय चिन्है छला, तेकरो अभाव देखलैन। गोटे-गोटे केतौ-केतौ मोथा आ केतौ-केतौ दुभि बुझि पड़ैन। ओना खेत सघन रूपमे खढ़सँ छाड़ल। जइसँ फसिलक बाढ़ियो रूकल आ जेहो फसिल बँचल सेहो खिद-खिद करैत।

ठेकना कऽ लाल भाय खढ़केँ भँजियौलैन। जमैनक गाछ जकाँ देखैमे अछि। मुदा जमैन जकाँ ऊपर नहि उठि माटियेपर चतैर-चतैर भरपूर फड़सँ लदल! जड़ियो कुचियाह छइ, बुट्टीयाह नै! जे बहुत तरो तक नइ गेल अछि, ओना जै-घासोक जड़ि सिराह नहियेँ होइए, ओहो कुचियाहे होइए, माने माटिक ऊपरके परतमे रहैए। सिराह तँ ओ भेल जे सिरनुमा माटिक तर दिस जाइए जे बढ़ैत-बढ़ैत बुट्टियाह बनि जाइए..! नव खढ़ देखि लाल भाय मने-मन ठेकनबए लगला, मुदा भाँजपर ने खढ़क चिन्हे-पहचिन्ह चढ़लैन आ ने नाऊँए बुझल छेलैन। एक-एक गाछ चतैर-चतैर एक-एक फुट जमीन छाड़ि कऽ पकड़ने! मालो-जाल नइ खाइए! नइ खाइक कारण सुआदो हेतै आ गुणो जँ गुणगर रहैत आकि सुअदगर तँ मालो-जाल हलैस कऽ धड़ैत, मुदा सेहो नहियेँ अछि! ओना, दुभि-घास सेहो माटियेपर चतरबो करैए आ ओकर जड़ि सेहो कुचिये जकाँ होइ छइ। मुदा ओकरा माल-जाल हलैस कऽ खाइए।

फागुनक शुरूक समय, रौदमे भिनसुरका वसन्त प्रवेश कऽ चुकल छेलै तँए बेरुका उखड़ाहाक रूपमे वा पैछला मासक रूपमे विपरीतता आबि गेल अछि। माने ई जे भिनसुरका उखड़ाहाक रौदमे तीखपन प्रवेश कऽ चुकल छेलइ, मुदा बेर टगिते शीतलपन सेहो आबए लगै छइ। जहिना रौदक तीखपनसँ देहमे जलन अबैए तहिना टुटैत जिनगीक आशसँ लाल भाइक मनमे जलन आबि रहल छेलैन।

ओना गामक आनसँ भिन्न बेवहार लाल भायकेँ, गामो आ समाजोमे छैन्हे। भिन्न ई छैन जे मनमे सदिकाल रहै छैन जे कोनो घटनाकेँ घटना-स्थल तक जा कऽ देखबो करिऐ आ बुझबो करिऐ। ओना घटना-स्थलक माने सेहो दोहरी अछि। एक अछि भौगोलिक स्थल, माने सड़क, खेत, घर, दुआरमे भेल। आ दोसर भेल समैयक संग चलैत जिनगीक घटना, जे मनक भीतरो होइए आ बाहरो रहैए। भव-लोकसँ भुवन लोक तकक बीच रस्ता...।

तँए घटना बुझि घटना स्थलपर पहुँचब एक भेल आ दोसर भेल जे जँ कोनो वैचारिक समस्या मनमे उपकल आ जँ ओ जिनगीसँ जुड़ल अछि से, जे साधक आ वाधक दुनू होइए, तेकर विचार तँ समाजेमे माने लोकेक बीच हएत, तँए जँ कोनो उलझन लाल भाइक मनमे उपकै छैन आ अपनेसँ जँ सुलझा नइ पबै छैथ तँ दोसर-तेसरक ऐठाम जा कऽ पुछि-विचारि लइ छैथ। तँए समाजक बीच आवाजाही सदिकाल रहिते छैन।

मने-मन लाल भाय विचारलैन जे एकटा गाछकेँ उखाड़ि बड़का बाबाकेँ देखा कऽ पुछबैन। समाजमे सभसँ उमरदारो छैथ आ अनुभवी सेहो, ओहिना नै ने समाजो सभ बड़के बाबा कहै छैन।

..भँजिया कऽ खेतमे जे सभसँ सिरगर गाछ अछि ओकरे किए ने जड़िसँ उखाड़ि नेने जाइ। मन मानि गेलैन, एकटा गाछ उखाड़ि लेलैन।

लत्तीनुमा चतरल गाछ नेने लाल भाय बड़का बाबा लग पहुँच आगूमे रखैत पुछलखिन–

“बाबा, ऐ खढ़केँ कनी देखियौ जे की छी। घासैन छी कि भासैन छी! अखन तक ने एकरासँ भेँट भेल छल आ ने चिन्है छिऐ।”

ओना बड़का बाबाकेँ सात-आठ बर्खसँ ओइ खढ़सँ भेँट छेलैन, जेकरा देखिते मुहसँ गारि खसए लगै छैन मुदा मनमे जे बड़का बाबाक विचार छैन तँए लाजे दोसराइतसँ किछु पुछए-कहए नइ चाहै छैथ, जइसँ

ओ खढ़ अखन तक समाजक चौखरीपर पहुँचबे ने कएल। ओना, लाले भायटा आकि बड़के बाबाक खेतमे ई खढ़ अछि से नइ, सौंसे गामक खेतमे पोखरिक केचली जकाँ पसरल अछि।

बड़का बाबाक अपन मनक सोच-विचार जे छैन तइमे ओ ऐ खढ़केँ सोल्होअना भासैन बुझै छैथ। ओना भासैन रहितो एते होशियारी तँ छैन्हे जे जखनेसँ, माने पूस माससँ, ओ खढ़ जमैनक गाछ जकाँ जनमए लगैए तखनेसँ जे घड़ी-पहर समय भेटै छैन तइमे ओकरा बीछ-बीछ फेकैत रहै छैथ, बाँकी-बँकियौतकेँ खुपरीसँ छील-छील सेहो फेकैत रहै छैथ। मुदा ई बात तँ बड़का बाबा जानिते छैथ जे जाड़ेक मसिममे जमैनोक गाछ जनमैए। मुदा आन-आन फसिलक खेतमे ओइ खढ़केँ पकड़ब असान अछि, किए तँ आनसँ भिन्न रंग-रूप होइ छइ। मुदा जमैनक खेतमे पकड़ब असान नइ अछि। ओना जीवनी-ले असम्भवो नइ अछि मुदा अनाड़ी-ले नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जाएत। जमैनक गाछक आ ओइ खढ़क गाछक शुरूक पातो आ पातक डण्टियो एक रंगाहे होइए मुदा जमैनक डण्टी कनी नमगर-छीपगरक संग लचगर सेहो होइत अछि, मुदा से ओइ खढ़मे नइ अछि।

खढ़केँ उनटा-पुनटा बड़का बाबा देखबो करैथ आ मने-मन बड़बड़ेबो करैथ–

"विदेशी खढ़ छी, अपना ऐठामक नइ छी।"

ओना विदेशी आ बाहरी, माने क्षेत्रसँ बाहर भेल मुदा मौसमक अनुकूल खढ़ सेहो होइए, मुदा तैयो तँ किछु एहनो खढ़ आकि घास तँ ऐछे जे कोनो क्षेत्रमे समटाएल अछि आ कोनो दूर-दूर तक पसरल अछि।

बाबाकेँ लाल भाय पुछलखिन–

"बाबा, विदेशी केना कहलिऐ?"

बाबाक अपन सोच तँए अपन विचार, बजला–

“जहिना मनुक्ख कोनो वस्तुकेँ आँखिसँ देखला पछाइतो ताबे तक ओकर गुण नइ बुझि पबैए जाबे जीहपर ओकर सुआद नइ बुझैए, मुदा पशु तँ ओकरा नाकेसँ सूँघि कऽ बुझि जाइए जे ई अहार-जोकर अछि आकि नइ अछि।”

बाबाक बात कनी-कनी लाल भायक मनमे जँचबो केलैन आ कनी-मनी नहियोँ जँचलैन। सूँघि कऽ खाएब आ नइ खाएब एक भेल आ दोसर तँ ईहो भेबे ने कएल जे सूँघलोसँ गुण-अवगुण बुझा जाइए।

मुदा विचारक बक-झकमे नहि पड़ि लाल भाय अपन आफतक बातपर आबि बजला–

“बाबा, अखन तँ अपना दुइये गोरे ने एकरा फसिलक रोग बुझै छी, तँए गाम-चौगामकेँ छोड़ि अपन विचार ने करब।”

विचार ओना समाजसँ परिवार दिस अबैत बुझि पड़ैए मुदा से नइ विचार जखन काजमे संक्रमण हुअ लगै छै तखन ओकर दौड़ दुनू सिरा होइ छइ। मोटा-मोटी यएह भेल जे जँ रोग असाध्य अछि, रोगी असाध्य अछि, तखन जँ रोगी अपन दुखक संग मिलि निवारण करता तखन तँ ओ महाकाज भेल। माने नमहर क्षेत्रक दुख भगने यएह ने हएत जे ओ दुख निड़कटैल भऽ छुटि जाएत, नइ जँ जीबो करत तँ दुखित जकाँ खिदखिदाइत रहत।

लाले भाइक विचारमे बड़को बाबा जेना भँसि गेला आकि नइ भँसला से तँ ओ जानैथ, मुदा लाल भाइक विचारकेँ चुहैट कऽ पकैड़ खढ़केँ बामा हाथसँ उठबैत लाल भायकेँ देखबैत कहलखिन–

“बौआ, देखै छहक मकड़ा-अण्डा जकाँ मन्हुआएल चपटाएल बुझि पड़ै छह, ऐ सबटाकेँ मकड़ेक अण्डा बुझह।”

बड़का बाबाक बात लाल भाय कनी मनी बुझबो केलैन आ कनी-मनी नहियोँ बुझलैन। मुदा मकड़ाक अण्डाकेँ मनसँ हटा पुछलखिन–

“बाबा, एकर असर की हएत?”

‘असर’ सुनि बाबा नमहर साँस छोड़लैन। पेटक हवा निकैलते बाहरी हवा पानि जकाँ खाली जगहकेँ भरए लगलैन कि भक-दे मोन पड़लैन। मोन पड़लैन नीलहा साहैबक नीलक खेती। अंग्रेजी जमानाक खेती, नीलक कोठी जैठाम छल ओइठाम अगल-बगलक खेत, माने ओते खेत जेकर उपजासँ ओकर कोठी सालो भरि चलइ ओते तेपटा लीजपर किसानक खेत लइ छेलए। माने ई भेल जे जँ अहाँकेँ छह बीघा खेत अछि तँ दू बीघामे एक साल खेती करैत, दोसर बाँकी खेतमे दोसर साल तेसर साल खेती करैत। ओ नीलक उपजा खेतिहर जमीनकेँ एते प्रभावित करैत जे दोसर साल ओ खेती-जोकर नइ रहि जाइ छल। जे समय आजादीक पूर्वक छल, माने देशक स्वतंत्रताक पूर्वक खेती छल। अखनो ओ जमीनमे जइमे नीलहा साहैबक हौद छल, बगल खेतक शक्तिक बराबरी ओ शक्ति नइ भेल अछि, जेकरा कि अस्सी-नब्बे बर्ख भऽ गेल..!

मुदा लगले बाबाक मन जमीनपर खसलैन तहिना बजला–

“बौआ, ऐ खढ़सँ जाड़क खेती मारल जा रहल अछि। जे एक मौसम केँ परती बना देत।”

बजैत-बजैत जेना बड़का बाबाक मन अल्लू-कोबीक खेतीसँ लऽ कऽ जअ-गहुमक खेतक बीच टहलए लगलैन। चौमाससँ धन-खेती तक नाश भऽ जाएत..!

बड़का बाबाकेँ गुम देखि लाल भाय पुछलखिन–

“बाबा, उपाय?”

ओइ खढ़केँ उपटबै पाछू जेना बड़का बाबाक अपन प्रयत्न हारि चुकल होइन तहिना मन खसए लगलैन। बड़का बाबाक खसैत मन देखि लाल भाय टोकलखिन– “बाबा, अखन जाइ छी। ऐ खढ़केँ चाहक दोकानपर लटका देबइ, किए तँ अखन गप-सप्पक अड्डा वएह छी, अनेरे

तँ जखन चाहक चौखरीमे पहुँचत तखने तँ लोक धकिया कऽ कात फेकत।”

लाल भाइक विचार बड़का बाबाकेँ सोहंतगर लगलैन। मुँहक लाली चमकलैन। चमैकते बजला–

“बेस कहलह।”



शब्द संख्या : 1667, तिथि : 6 मार्च 2016

उजगी

हाइ स्कूलसँ कौलेज धरिक संगी रमाकान्त अछि, एकर माने ई नइ बुझब जे मेडिकल कौलेजक प्रोडक्ट- 'डॉक्टर' छी आकि लॉ कौलेजक प्रोडक्ट–'ओकील' आकि एग्रीकल्चर कौलेजक प्रोक्टक–'एग्रीकल्चरियन' छी, हँ! एते छी जे दुनू गोरे संगे सेकेण्ड डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलौं आ कौलेजमे सेहो संगे नाओं लिखा ऐगला पीढ़ी-ले सर्टिफिकेट बना लेलौं जे कौलेज तक पढ़ने छी। लोको किए ने बुझत जे कौलेजक सभ पढ़ुआक सिंग-माँग एके रंग होइए, किए ओ बुझत जे मेडिकलक माने शरीर विज्ञान भेल, आ एग्रीकल्चरक माने खेती विज्ञान भेल आ राज-काजक संग सुचारू जिनगी चलैले निअम-कायदाक विज्ञान लॉ भेल।

ओना तीनू विषयक ई फुटान कियो हड़सट्ठे बुझबो केना करत, जहिना मोटगर-मोटगर किताव मेडिकलक तहिना ने एग्रीकल्चरो आ कानूनोक अछि, तँए किए बुझत जे कियो केकरोसँ कम अछि। जेते पन्ना, पन्नाक माने पेड़-पौधाक नइ, पन्नाक माने कितावक पन्ना, सभ जब एक्के रंग पढ़ने अछि तखन अनेरे केकरो कम-बेसी कहब, केकरो पक्ष लेब भेल, सेहो किए करब। 'गाम महराजकैं आ बाँट करए बखो..?'

ओना दुनू गोरे ऐ लीलसासँ कौलेज नइ छोड़लौं जे विद्वान शिक्षक सभकैं नमस्कार-प्रणाम करैत घुमि जाएब, छोड़ैक कारण भेल जे ने एकोटा शिक्षक कौलेजमे आ ने एको दिन पढ़ाइ। बिनु शिक्षकक शिक्षार्थीक संख्या, मुदा से तँ वएह बुझि सकै छैथ जे माल्थस-थियोरी

बुझने होथि। मुदा से तँ अर्थशास्त्रीए-विचार ओ वएह कहता। प्रोडक्ट केहेन अछि ओ तँ ट्रेड-मार्क देखिते ने कियो बुझि सकैए। घर-घरक संग बेकती-बेकतीक जिनगी बोझिल बनल जा रहल अछि आ सभ ऐ ताकमे छी जे परिवारो आ बेकतियोक द्रुतगामी विकास भऽ रहल अछि।

रमाकान्तक माए जे वैधव्य जिनगीक बीच चलि रहली अछि, वैधव्यक माने ओहन वैधव्य नइ जे संगी बिनु तरसए, ओहन वैधव्य जे चारिमपनमे अपन समृद्धशाली परिवारक जिम्मेदारिनी बुझि अपन जिम्मेदारी निमाहैत होथि, दरबज्जापर एली। अबिते व्यग्र मनसँ बेथित अखड़े चौकीपर ओंघरा रहली।

अपने दरबज्जापर नइ रही बाड़ीमे रही, तँए अबैमे पाँच-सात मिनट समय लगल। तैबीच हुनकर मन सेहो थीर भेलैन।

अबिते देखलौं जे चाची जेना जिनगीसँ हारि चीत होइक सम्भावनासँ ग्रसित भऽ रहल छैथ। आँखि बन्न केने, दुनू बाँहि मोड़ि आँखिपर सिरमा जकाँ नेने...। ओना नीनसँ सुतल आँखि बन्न नइ रहैन मुदा सोचक बोनमे अन्हराएल जरूर रहैथ...।

बजलौं–

“एना धरना देने आन्दोलन किए केने छी?”

हमर बात कानमे पड़िते चाची आँखि खोलैत उठि कऽ बैसली। आँचरसँ आँखि पोछए लगली। आँखिक बदलैत रंग देखि मन कलैप गेल। कलैप ई गेल जे चाचीक आँखिसँ संगीक संग छोड़ब- माने रमाकान्तकेँ छोड़ब- झलैक रहल छैन। बजली–

“बेटा, हमरा-ले जहिना रमाकान्त तहिना तूँ आ जहिना रमाकान्तो-ले छिऐ तहिना तँ तोरो छेबे करियह।”

चाचीक व्यग्र रूप देखि अपनो मन व्यग्र भऽ गेल जइसँ ई नइ बुझि पेब रहल छेलौं जे की केने केहेन हएत।

बजलौं–

“एकरा के काटत!”

जहिना बीस बर्ख पूर्व, जखन रमाकान्त हाइ स्कूलक संगी छल आ संगे-संग चाची दुनू गोरेकेँ जे खुअबै छेली, तेही रूपमे मातृत्व जगि गेल। जइसँ मनमे उमकी उठि बजा गेल–

“माए, अहाँले हम तन-मन-धनसँ तैयार छी, खाली अहाँक आदेशक... ।”

चाची बजली–

“बेटा, रमाकान्त रोगा रहल अछि से कनी डॉक्टर ऐठाम चलह।”

दिन-दिनक धंधा डॉक्टर ऐठाम, ब्लौक ऑफिस आएब-जाएब तँ लगले रहैए, तखन तँ कनी काज बढ़ि गेल सएह ने। तँए भारीए किए लगत जे आना-कानी करैत कान्ह छीपतौं।

कहलयैन–

“चाची, खाइ बेर छइ, जखन डॉक्टरे ऐठामक काज छी तखन केते-काले हएत तेकर ठेकान नइ तँए एक टुकड़ी हमहूँ खा लइ छी आ अहूँक सिरचढ़ काज अछि, अखन चैन छी, एक टुकड़ी अहूँ मुँहमे लऽ लिअ।”

चाचीक मनमे खुशी एलैन। रोग-शोकक परिवारमे पारिवारिक रूप पकैड़ ओहुना भारी भइये जाइए। माने ई जे मानि लिअ जेना- सात गोरेक परिवार अछि, एक गोरे ओहन रोगसँ ग्रसित भऽ गेल छैथ, जिनका उठबै-बैसबैसँ लऽ कऽ अतिरिक्त ऊपरका सभ क्रिया अछि, की सातमे बाँकी छबो जनक व्यग्रता नइ बढ़त, बढ़बे करत। मुदा ईहो तँ देखए पड़त जे पोखैरसँ एक लोटा पानि निकैलते जहिना चारू दिसक पानि आबि समतल बना लइए तहिना ने परिवारोकेँ समतल बनबैमे छबो-जनकेँ लागए पड़त। मुदा दोसर पक्ष अछि ऐसँ क्षति। ओना रमाकान्त

बीस बर्ख पूर्वक संगी छी, माने विद्यार्थी जिनगीक। अखनो विद्यार्थी धरिक जिनगी ओते नइ करिखाएल अछि, मुदा पछाइतक जे पारिवारिक वा सामाजिक जिनगी चलैए, तइमे दुनू गोरेक बीच बहुत दूरी बनि गेल अछि। खएर...।

चाचीकेँ कहलयैन–

“चाची, अहूँ जँ डॉक्टर ऐठाम संगे चलब तँ ओ बेसी नीक हएत।”

हमर बात सुनि चाची सहमली। किए सहमली से तँ ओ जानैथ मुदा अपना बुझि पड़ल- डॉक्टर ऐठाम जाइसँ हिचकिचा रहली अछि। अनुभव नहि रहने हिचकिचाइ छैथ आकि पारिवारिक परदाक विचारसँ, से बुझिये ने पेलौं।

मुदा अखन तँ अपना ऐठाम छी। ऐठामसँ चाची ऐठाम पहुँचब तखन ने डॉक्टरक विचार करब। चाचीक संग विदा भेलौं...।

रमाकान्त किछु ने बाजल। जइसँ बुझि पड़ल जे ओहो जाइले तैयारे अछि।

अपना मनमे उठल- डॉक्टर ऐठाम तँ पुरुख-समांग बनि हमहीं जाइ छी, डॉक्टर साहैब तँ हमरेसँ पुछता। अखन तक ने चाची खोलि कऽ किछ बजली आ ने ऐसँ पहिने अपनो गप-सप्प भेल...।

चाचीकेँ पुछलयैन–

“चाची, की सभ संगीकेँ होइ छैन, से ते सभ गप अखने ने मिला लेब। ओइठाँ अहाँ किछ कहिऐ, हम किछ कहबै आ रमाकान्त किछ बाजत, से नीक नइ ने हएत।”

चाचीकेँ हमर बात जँचलैन। जँचिते मनमे धसलैन, धँसिते बजली–

“मास दिनसँ एकर नीन उड़ैत गेल। उड़ैत-उड़ैत तीन दिनसँ साफे

उड़ि गेल। ने दिन-के सुतैए आ ने राति-के, भरि दिन बड़बड़ाइत रहैए।"

ओना अखन तँ प्रश्न पुछैक समय नइ अछि, बात बुझैक समय अछि तँए नीन नइ हएब, रोग तँ भेबे कएल।

रोगक संग रोगीकेँ डॉक्टर लग पहुँचाएबे ने अपन काज भेल। आगू तँ जनता डॉक्टर साहैब।

तीनू गोरे टेम्पूसँ डॉक्टर ऐठाम पहुँचलौं। लोकक करमान लगल। के रोगी के निरोग से परखब कठिन।

ओना मनमे ईहो भेल जे जखने दसटा रोगी आ दसटा रोगीक गारजन एकठाम हेता तखने ओइ जगहक गरिमा बढ़ि जाइ छइ। मुदा से दोसर रूपमे।

कम्पाउण्डर लग पहुँच कहलयैन–

"हम कोनो औगताएल नइ छी, खा-पी कऽ आएल छी तँए हमरा बेसी समय जाँचमे चाही, भलेँ अहाँ सभसँ पाछूए-कालक नम्मर किए ने दी।"

सहए भेल।

रोगी देखैत-देखैत डॉक्टर साहैबक मन सेहो, छूत रोग जकाँ रोगाइये गेल रहैन, मुदा काजसँ जेना निसचिन्ती एलैन से रूखिसँ बुझि पड़ल।

पानि-चाह पीब डॉक्टर साहैब पान खेलैन। कम्पाण्डर सभ सेहो दोकान-दौरी दिस चलि गेल। चारू गोरे एकठाम भेलौं। डॉक्टर साहैब बजला–

"रोगीकेँ की सभ शिकाइत छैन।"

हम चुपे रहलौं, मुदा चाची बजली–

"उजगी भऽ गेलैए।"

चाचीक बात डॉक्टर साहैब बुझि गेला। बुझि एते गेला जे कारनीकेँ किछु पुछैक खगते ने रहलैन। बजला–

“ऐ रोगकेँ दैहिक आ दैविक माने मानसिक, दुनू कारण अछि, दैहिक-के इलाज तँ दवाइसँ हएत मुदा दैविक लेल जिनगीक रूटिंग बदलए पड़त, से ते हम कहबे करब, करए तँ अपने पड़त।”

डॉक्टर साहैबक विचार जँचल, कहलयैन–

“हँ तँ ऐसँ बेसी अपनेक हाथे की अछि।”



शब्द संख्या : 1079, तिथि : 9 मार्च 2016

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 'पंगु' उपन्यासक पछातिक रचना-क्रम:

----------.

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुदृढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकेँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- शब्द संख्या: 1735, तिथि: 07 दिसम्बर 2023

1140. उकडू समयमे सुकडू काज: शब्द संख्या: 1737, तिथि: 10 दिसम्बर 2023

1141. मुक्तिः जारी...

❑❑❑

❑❑

❑

Notes

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....